मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 54 | अंक : 2 | अगस्त, 2013 | मूल्य : ₹10

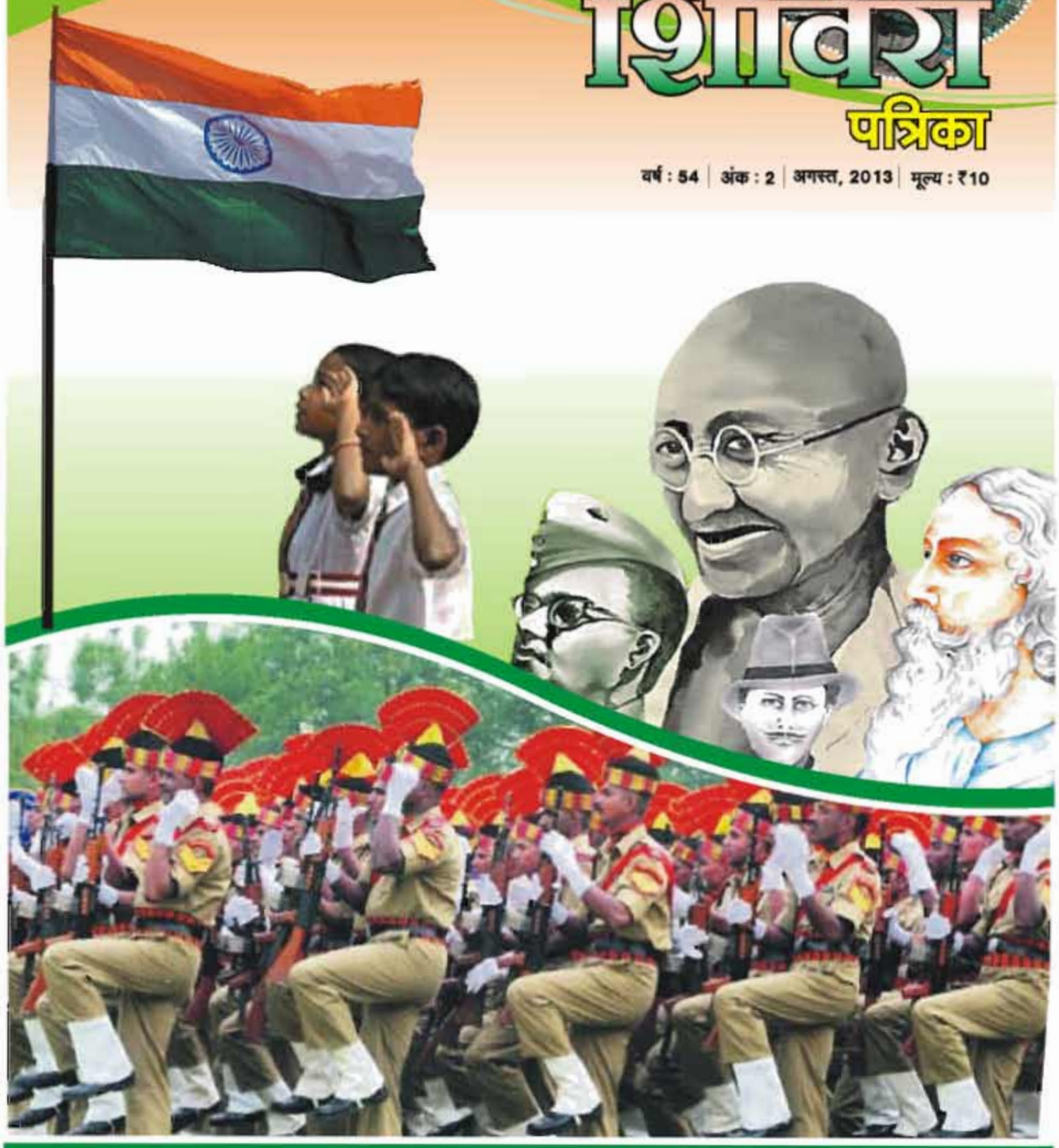

राजीव गाँधी विद्यार्थी डिजिटल योजना के अन्तर्गत लैपटॉप एवं साइकिल क्रय हेतु चैक वितरण का राज्य स्तरीय समारोह

स्थान : इंदिरा गाँधी पंचायती राज संस्थान, जयपुर **दिनांक : 25 जुलाई 2013**

सम्मानित मंच पर विराजे हैं मुख्य अतिथि राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, अध्यक्ष माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद एवं विशिष्ट अतिथि महानुभाव।

माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ करते माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत। पास खड़े हैं समारोह अध्यक्ष श्री गुलाम नबी आजाद माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री।

समारोह में उद्बोधन प्रदान करते (बाएं से) माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद, प्रमुख शासन सचिव, स्कूल शिक्षा श्रीमती वीनू गुप्ता एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. वीना प्रधान।

एक बालिका को साइकिल क्रय करने हेतु चैक भेंट करते माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत।

एक बालिका को लैपटॉप प्रदान करते हुए माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत।

फोटो : मित्रा स्टूडियो, जयपुर

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54 | अंक : 2 | श्रावण–भाद्रपद २०७० | अगस्त, 2013

प्रधान सम्पादक
डॉ. वीना प्रधान

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

सहायक
सांग सिंह
मुकेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंकड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2528875
फैक्स : 0151–2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प
- त्यौहारों का देश हमारा 5

आलेख
- श्री कृष्णम् वंदे जगद्गुरु 6
  ओमप्रकाश सारस्वत
- आदर्श विद्यालय वातावरण में स्टॉफ की भूमिका 8
  रामचन्द्र स्वामी
- विद्यालय प्रबन्धन एवं संस्था प्रधान 10
  डॉ. कल्पना शर्मा
- शिक्षक के विभिन्न स्वरूप 12
  मदन लाल पुरोहित
- वृक्षारोपण पुण्य महान 13
  ओम प्रकाश शर्मा
- वृक्ष हमारे मीत हैं हम वृक्षन के मीत 14
  डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय
- 'वैदिक संस्कृति' विश्व की पहली संस्कृति 16
  मोहनलाल सूत्रधार
- खेलों में चोट से कैसे बचें 18
  राजेन्द्र सिंह उदावत
- ऊपर चांद तो नीचे मेजर ध्यानचंद 19
  सुभाष चन्द्र कस्वां
- एकीकृत विज्ञान प्रयोगशाला का प्रभावी संचालन 20
  डॉ. कल्पना शर्मा
- बच्चों की प्रशंसा कीजिये पर सोच समझकर 33
  रूपनारायण काबरा
- सा विद्या या विमुक्तये 34
  टेकचन्द्र शर्मा
- चूहा बनाम बिल्ली 35
  पवन के. भूत
- शिक्षक के बोल और आत्मीयता 36
  बुद्धिचन्द गोठवाल
- मलाला युसुफजई बनी मशाल 37
  रामकृष्ण अग्रवाल
- इल्म व इबादत का पर्व है ईद 38
  मोहम्मद इदरीस खान
- वृक्ष हमारे जीवन दाता 40
  दयाकान्त सक्सेना
- अनोखी जीत में छिपी करारी हार 41
  अक्षय सिंह कछवाहा
- जीवन का आधार हैं पुस्तकें / प्रहलाद शर्मा 47

प्रतिध्वनि
- मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे-मोती 50

अनुकरणीय
- सीख / अभय कुमार जैन 11
- हौंसलों की उड़ान / उषा टेलर 17

गीत एवं कविता
- मन में उमड़ते भाव / महेश चन्द्र श्रीमाली 9
- याद करो कुर्बानी... / प्रदीप 13

पुस्तक समीक्षा 45-47
- अस्तित्व नए मोड़ पर : कीर्ति केसर
  समीक्षक : डॉ. उषा किरण सोनी
- देखना सो नीं भूलणा : डॉ. शंकर लाल स्वामी
  समीक्षक : डॉ. उषा सारस्वत
- दर्शन, आध्यात्मिक चिन्तन और भक्ति : डॉ. रमेश सोवती
  समीक्षक : डॉ. जमनालाल बायती
- हवेली में चाँद : मोनिका गौड़
  समीक्षक : राकेश सारस्वत

हमारी सांस्कृतिक धरोहर
- राज्य का अन्नदाता है श्री गंगानगर 43
  गुरजीत सिंह बराड़

विशेष रपट
- विद्यार्थियों को मिले लैपटॉप व साइकिल क्रय हेतु चैक 31
  ओमप्रकाश सारस्वत/महावीर प्रसाद गर्ग

हमारे संस्थान
- राजस्थान स्टेट ओपन / दयाराम महरिया 22

स्तम्भ
- इस माह का पंचांग 17
- आदेश-परिपत्र 23
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 29
- चतुर्दिक समाचार 39
- हमारे भामाशाह 48

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

▼ चिन्तन

फूलों की सुगन्ध
केवल उधर जाती है
जिधर
हवा ले जाती है
मगर
अच्छे कामों की सुगन्ध
उधर भी जाती है
जिधर की हवा है
और उधर भी
जिधर की हवा नहीं है।

–भगवान बुद्ध
(धम्मपद से)

पाठकों की बात

- शिविरा जुलाई 2013 अंक उत्कृष्ट है। बधाई। **–शिवरतन थानवी,** फलौदी
- शिविरा जुलाई 2013 अंक परिवर्तित ही नहीं, परिष्कृत, परिशोधित एवं परिमार्जित भी है। आपका सृजनपरक सोच रंग ला रहा है। बधाई। **–बी.पी. गौतम,** कोटा
- शिविरा (जुलाई 2013 अंक) के शानदार अंक के लिए बधाई स्वीकारें।

  –डॉ. नीरज दैया, बीकानेर
- शिविरा पत्रिका के नए अंक में निदेशक महोदया के बोल ''हृदय में करुणा, मस्तिष्क में निर्भयता, हाथों में कार्य और पैरों में निरन्तरता के साथ व्यवहार में नैतिकता एवं पवित्रता, श्रम के प्रति सम्मान, बड़ों के प्रति आदर, समवयस्कों के प्रति मैत्री, छोटों के प्रति संरक्षण और जरूरतमंदों के प्रति मदद के भाव हमारे आदर्श रहे हैं'' का संदेश दिल को गहराई तक छू गया। मैंने तो यह अमृत वचन कार्य स्थल पर लगा दिया है ताकि हर समय इसे हृदयंगम करता रहूं।

  रमेश कुमार लोहिया
  वरिष्ठ लिपिक, शिक्षा निदेशालय, बीकानेर
- शिविरा जुलाई 2013 अंक में सभी आवश्यक विभागीय सूचनाओं का प्रकाशन व पंचांग 2013-14 अत्यन्त उपयोगी है। अंतिम पृष्ठ पर सांस्कृतिक विरासत की नियमित प्रस्तुति अपने आप में एक प्रशंसनीय सूझ है। 'करुणा की सागर होती है माँ', 'मास्टर छगनलाल का अनोखा तरीका', 'इस माह का गीत', 'अच्छा प्रबन्धन, अच्छा विद्यालय', 'भारतीय चिन्तन एवं हमारी शिक्षा के उद्देश्य' आलेख पठनीय है, चिन्तन प्रेरित करते हैं। **–नीता राठौड़,** प्राचार्या
  टैगोर विद्या भवन उ.मा. विद्यालय, जयपुर
- शिविरा पत्रिका का छात्रवृत्ति विशेषांक प्राप्त हुआ। जुलाई अंक का आवरण बहुत ही आर्कषक व पृष्ठ संख्या भी पहली बार बढ़ी हुई देखकर खुशी हुई। 'चिन्तन' में रवीन्द्रनाथ टैगोर का वाक्य बहुत प्रेरणादायी संकलन लगा। गुरु भक्ति एवं समर्पण का पर्व गुरु पूर्णिमा-डॉ. सुदेश शर्मा का आलेख ज्ञानवर्द्धक व स्तरीय लगा। माँ की महिमा करुणा की सागर होती है माँ वासुदेव दाधीच का आलेख इस पत्रिका का सबसे मार्मिक, शिक्षाप्रद, प्रेरणादायी आलेख लगा जिसमें लेखक ने अपनी सशक्त लेखन क्षमता का परिचय देते हुए हृदय को झकझोर देने वाला व मस्तिष्क को उद्वेलित करने वाला लेख लिखा इसके लिए लेखक को हमारा साधुवाद व सम्पादक महोदय द्वारा छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाओं की सामग्री बहुत व्यवस्थित तरीके के साथ छापकर प्रदेश के लाखों छात्रों को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुँचाया व शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। इस सामग्री के प्रकाशन से यह अंक संग्रहणीय बन गया है। चतरसिंह मेहता को श्रद्धांजलि का आलेख व प्रतिध्वनि भी इस पत्रिका में जान डालने वाले लेख लगे। इस बेहतर प्रकाशन व बढ़ी हुई पृष्ठ संख्या के लिए सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई। आशा है, यह क्रम आगे भी जारी रहेगा। **–सरदार सिंह चारण**
  व्याख्याता , डाईट, जालोर
- शिविरा जुलाई 2013 अंक में छपा सम्पूर्ण जीवन एक विद्यालय आलेख बहुत रुचिकर एवं उपयोगी लगा। यह हमें सिखाता है कि अधिगम जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है।

  संजीव कटारिया, व.अ.
  रा.मा.विद्यालय, कोहला (हनुमानगढ़)
- शिविरा जुलाई माह का छात्रवृत्ति विशेषांक मिला। दिशाकल्प कह रहा है कि शिक्षा बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने की दिशा में अग्रसर हो। फलतः उत्तम समाज, राष्ट्र का निर्माण हो। पृष्ठ 17 पर उल्लेखित नैतिक शिक्षा गतिविधियां इसका माध्यम बनेगी। छात्रवृत्ति सम्बद्ध समस्त इतिवृत इस विशेषांक में समाहित है। शिक्षक इसके माध्यम से अपने छात्रों को लाभान्वित करें। ''एक दिन भी जी मगर तू ताज बनके जी'', ''अपनी तो सरकार किताबें'' कविताएं क्रमशः जीवन जीने की कला और किताबों के महत्व को दर्शा रही है। 'चिन्तन' में आइंस्टीन का जीवन दर्शन द्वारा श्री मदनलाल पुरोहित एवं मास्टर छगनलाल का अनोखा तरीका वस्तुतः अनुकरणीय व अद्भुत है।

  –टेकचन्द्र शर्मा, पूर्व शिक्षा अधिकारी
  शर्मा सदन, मुनि आश्रम के पास, झुंझुनू

सत्यमेव जयते

डॉ. वीना प्रधान
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प

त्यौहारों का देश हमारा

11वाँ एशिया पेसेफिक वेग्गस सम्मेलन पिछले माह (29 जून-8 जुलाई 2013) जापान के टोक्यो शहर में सम्पन्न हुआ। इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में भारत से छह सदस्यीय दल ने भाग लिया। इस दल का नेतृत्व करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। राजस्थान में स्काउट-गाइड आन्दोलन से जुड़े सभी व्यक्तियों के लिए यह गौरव का विषय है। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में वेग्गस के 25 सदस्य संगठनों में सर्वाधिक सदस्य बनाने का कीर्तिमान स्थापित करने वाले राष्ट्रों में भारत को द्वितीय पुरस्कार मिला। इस उपलब्धि का श्रेय शिक्षकों, संस्था प्रधानों एवं अधिकारियों को है। मैं आपको बधाई देते हुए आशान्वित हूँ कि स्काउट-गाइड के क्षेत्र में हम सतत साधनावत कार्य करते हुए समाज सेवा करते रहेंगे।

ग्रीष्मावकाश के पश्चात विद्यालय खुले एक माह व्यतीत हो चुका है। अब तो नव प्रवेश, टीसी निर्गमन जैसे कार्य लगभग पूर्ण हो चुके हैं। हमें शिक्षण कार्य को गति देनी है ताकि अकादमिक दृष्टि से राजस्थान के बच्चे कहीं भी कमतर सिद्ध न हो। संस्था प्रधानों एवं शिक्षा अधिकारियों को अपने व्यापक अनुभवों से इस उद्देश्य को पूरा करने में निर्णायक भूमिका अदा करनी है और मुझे विश्वास है कि मेरी अपेक्षा को पूरा करने में वे सफल सिद्ध होंगे।

राज्य सरकार द्वारा अनेक छात्र हितेषी योजनाएं संचालित की जा रही है। इनमें विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ एवं प्रोत्साहन योजनाएं प्रमुख है जिनकी जानकारी देने के लिए शिविरा पत्रिका का माह जुलाई 2013 का अंक छात्रवृत्ति विशेषांक के रूप में प्रकाशित कर पाठकों की सेवा में भिजवाया गया था। मुझे विश्वास है कि शिविरा का छात्रवृत्ति विशेषांक संदर्भ साहित्य के रूप में आपका मार्गदर्शन करता रहेगा। साढ़े तीन लाख छात्र-छात्राओं को पीसी टेबलेट के लिए राशि उपलब्ध करवाने के पश्चात हाल ही में एक लाख से भी अधिक छात्र-छात्राओं को लेपटॉप वितरित किए गए हैं। कक्षा नवम् में प्रवेशित सभी छात्राओं को साइकिल क्रय करने हेतु 2500-2500 रुपये के चैक प्रदान किए गए हैं। हमें शासन कीइन योजनाओं से पात्र छात्र-छात्राओं को लाभ दिलाने में कोई कसर नहीं छोड़नी है। यह हमारा कर्तव्य ही नहीं धर्म भी है।

इस माह में भारत का 67वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा। ईदुलफितर, रक्षाबंधन और कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व भी इसी माह में है। देखा जाए तो अगस्त उत्सव-पर्व एवं मेले मगरियों का महिना है। भारत की इसी उत्सवधर्मिता को नमन करते हुए कवि ने कहा है-

महक रहा धरती का कण-कण उमड़ रही रसधार है,
त्यौहारों का देश हमारा हमको इससे प्यार है।।

हमें इन उत्सव-पर्वो को उल्लासपूर्वक मनाते हुए राष्ट्रोत्थान के लिए प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य करने का संकल्प लेना है।

ओलम्पिक में तीन बार गोल्ड मेडल दिलाने वाले हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचन्द के जन्म दिन 29 अगस्त को हम राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाते हैं। हमें उत्तम खिलाड़ी तैयार करने के लिए विद्यालय क्रीड़ांगनों को सजीव बनाना है। याद रखिये ओलम्पिक खेलों में जाने का रास्ता स्कूलों में से हो कर गुजरता है जिसकी बागडोर आपके हाथों में है।

शिविरा के पिछले अंक में मैंने नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में अपनी भावना व्यक्त करते हुए प्रार्थना सभा, बालसभा एवं अन्य अवसरों पर उत्तम आचरण, सद्संस्कार तथा मूल्यवान ऐतिहासिक विरासत विद्यार्थियों के साथ साझा करने का अनुरोध किया था। मुझे विश्वास है कि आपने इस दिशा में वांछित कार्य प्रारम्भ कर दिया होगा। इस सम्बन्ध में कोई सुझाव अथवा Success story हो तो आप मुझे व्यक्तिगत नाम से भिजवा सकते हैं। आपकी टिप्पणी व सुझाव कार्यक्रम के प्रभावी संचालन में महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

शुभकामनाओं के साथ,

(डॉ. वीना प्रधान)

> **"हमें शिक्षण कार्य को गति देनी है ताकि अकादमिक दृष्टि से राजस्थान के बच्चे कहीं भी कमतर सिद्ध न हो। संस्था प्रधानों एवं शिक्षा अधिकारियों को अपने व्यापक अनुभवों से इस उद्देश्य को पूरा करने में निर्णायक भूमिका अदा करनी है और मुझे विश्वास है कि मेरी अपेक्षा को पूरा करने में वे सफल सिद्ध होंगे।"**

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

श्री कृष्णम् वंदे जगद्गुरु

❒ ओमप्रकाश सारस्वत

भारतीय वांगमय में योगेश्वर श्री कृष्ण का नाम अत्यन्त श्रद्धा के साथ लिया जाता है। कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन दर्शन ऐसे अनेक उपाख्यानों व दृष्टांतों से परिपूर्ण है जिनमें मनुष्य मात्र के कर्तव्यों, जीवनोपयोगी आदर्शों, सिद्धान्तों व नैतिक मूल्यों का संदेश छिपा हुआ है। कृष्ण का बालरूप जो आह्लाद लिए है, उसका वर्णन सुनने मात्र से गुदगुदी होने लगती है। बालकों को बालपन के कितने आनन्द मिलने चाहिए और उनमें माता-पिता की क्या भूमिका होनी चाहिए, का सच्चा अहसास कृष्ण के बाल्यकाल को समझने से ही हो सकता है।

हमें लगेगा कि आज के बालक कृष्ण की तुलना में केवल आयु की दृष्टि में ही पूर्ण बालक है, क्योंकि समय चक्र में दिनों-महीनों व घण्टों-मिनटों का आनुपातिक सम्बन्ध पूर्ववत है, जबकि सहज बाल क्रीड़ाओं की दृष्टि से वे आधे-अधूरे हैं। जो सहजता, सरलता, प्रकृतिजन्यता, निर्मलता, विमलता बाल कृष्ण व उनके समकालिकों को मिली, उसका मिलना अब मुश्किल प्रायः है।

यह सर्वथा सत्य है कि मिट्टी प्रकृति की ओर से अनुपम उपहार है। आज के बालक को रेत-मिट्टी से अलग रखने के लिए माँ-बाप सजग रहते हैं। अधिकांश शहरी क्षेत्रों में तो देखने तक को मिट्टी बड़ी कोशिश से मिल पाती है, वहीं कृष्ण मिट्टी और पानी में घुटनों चलकर सबका मन मोह लेते हैं।

कृष्ण द्वारा चन्द्रमा को लेने की जिद्द और माता द्वारा थाली में पानी डालकर उसमें चन्द्र छाया दिखाकर उन्हें खुश कर देना जैसी बाल जिज्ञासाएँ आज के बालक अपने जन्मदाताओं या दादी-नानी से समझते नजर नहीं आते।

बछड़ों की पूंछ पकड़कर पीछे भागना, दूध-दही खाना व बिखेरना, मित्रों को खिलाना, लुकाछिपी का खेल, ठुमक-ठुमक कर नाचना, नन्हें-नन्हें हाथों से छोटी-छोटी चीजें उठाकर रखना आदि सैकड़ों उदाहरण कृष्ण के बाल्यकाल की सहजता को इंगित करते हैं।

आज का बालक भी ठीक वैसा ही बन सकता है जैसे भगवान कृष्ण थे लेकिन जरूरत है नन्द बाबा की, जरूरत है यशोदा मैया की। आज के माता-पिता तो आर्थिक माता-पिता है। वे अर्थ से प्राप्त हो सकने वाली वस्तुएं तो चाले जितनी अपने बच्चों को दिला देंगे, लेकिन माता-पिता के सामीप्य व दुलार को उस रूप में नहीं प्रदान कर सकते। वे तो बस अर्थोपार्जन में लगे हैं।

उनकी अत्यधिक व्यस्तता ने समयाभाव के साथ ही एक ऐसी न्यूनता उनके स्वभाव, वाणी-व्यवहार व कार्यशैली में ला दी है, जिसकी वजह से बच्चों को बालपन के मौलिक अधिकारों से ही वंचित कर दिया है।

चमकीले कागज में लिपटी मक्खन की टिकिया, डेयरी का पैक दूध, पैक डबलरोटी व बिस्कुट, माँ के अमृत सरीखे दूध की जगह बोतल के साथ लगी रबड़ निप्पल से स्तनपान के आनन्द की भुलैया, चाँद-सितारों की जगह बैटरी की ऊर्जा से टिमटिमाते खिलौने, प्राकृतिक फूल-पत्तों का अहसास कराता टेलीविजन आदि क्या बाल अधिकारों की पूर्ति करने में सक्षम हो सकते हैं?

महानगरीय जीवन जी रहे बालक चाँद, सूरज, सितारे, उन्मुक्त गगन, विचरते नभचर जब चाहे तब देख नहीं सकते। यह जीवन की कितनी बड़ी विडम्बना है। यह प्राकृतिक विधान का उल्लंघन है।

एक ऐसी संस्कृति का बीजारोपण हुआ है जिसमें सब कुछ देखने को उपलब्ध होने के बावजूद वास्तविक सच कहीं बन्द है। जैसे किसी का चित्र उसका प्रतिरूप ही हो सकता है, हकीकत नहीं। ऐसे ही ये समस्त उपक्रम वास्तविकता की छाया मात्र है।

बन्द की यह संस्कृति अत्यन्त हानिकारक है। **इसे बन्द कमरे की संस्कृति आत्मघाती प्रवृत्ति** की संज्ञा दें तो शायद समीचीन ही होगा। माता-पिताओं व संरक्षकों को कृष्ण का बाल्यकाल ऐसे अनेक संदेश देता है जिसका अनुसरण करके वे अपने वालक-बालिकाओं को वास्तविक बचपन का चिन्तामुक्त अतुलित आनन्द प्रदान करते हुए स्वयं परमानन्द की अनुभूति कर सकते हैं। थोड़ी देर के लिए बच्चों के साथ बच्चे बनकर आनन्द लीजिए। फिर देखिए जीवन के प्रति आपका क्या नजरिया बनता है। कृष्ण यही तो सिखाते है। सर्वकलाओं के ज्ञाता कृष्ण तो आज भी बालक है। बाल कृष्ण और मक्खन खाते-खिलाते कन्हैया के चित्र हमारे घरों में सहजता से देखे जा सकते हैं।

अपने बालक के समान दूसरे के बालक को समझने, उसे स्नेह प्रदान करने, संरक्षण प्रदान करने की पावन परम्परा इस देश में रही है। बालक के किसी कार्य की शिकायत करने के पीछे भी उद्देश्य और अधिक आनन्द को प्राप्त करने का रहता था।

जैसे यशोदा कृष्ण के सखाओं को दूध-मक्खन देने में उदार रहती हैं, गोपियाँ कृष्ण को दही-मक्खन देने के साथ ही उसके द्वारा किए जाने वाले नुकसान को भी सहन करती है। वे एक दूसरे को उपालंभ देने के बहाने बाल क्रीड़ाओं को और नजदीक से देखने का अवसर प्राप्त करती है। कितनी अमृतमयी भावना है बच्चों के प्रति। उपालंभ देने के पीछे भी आनंद भाव।

सारी सृष्टि के बच्चे एक समान का नारा तभी सार्थक था जब कृष्ण और सुदामा एक साथ सांदीपनि के आश्रम में पढ़ते थे और धनी-अधनी का कोई भेद करना मुश्किल था। आज कृष्ण युग के अमृत भाव का स्थान कलिविष ने ले लिया है।

फलतः बालकों पर अमानुषिक अत्याचार व अपहरण जैसी घटनाएँ बढ़ती जा रही है। कृष्ण का बालरूप एक संपूर्ण बालस्वरूप है, स्वयंमेव आदर्श रूप है जिसे प्रतिमान बनाकर बाल कल्याणकारी योजनाएँ बनाई जाएँ तो वे निश्चय ही असरदायक व फलदायी होंगी। सूर के पद पूर्ण तल्लीनता से गाने-सुनने से जो अपरिमित आनन्द मिलता है वह सच्चे बालपन का दर्शन कराता है।

माता-पिताओं को चाहिए कि आधुनिक फिल्मी स्टाइल में अपने बच्चों को गाने, झूमने

की दूषित अदाएँ न सिखाएँ, प्रत्युत कृष्ण के बाल्यकाल की सहज क्रीड़ाएँ सिखाएं भले ही वे तादाद में लघु ही क्यों न हों। लघु भले ही हो, मगर श्रेष्ठ हो, अनुकरणीय व सराहनीय हो। लघुत्तम की अवधारणा हम समझते ही है।

आज शिक्षा और शिक्षार्थी, अध्यापक और अभिभावक यानी पूरे शिक्षा जगत पर समय-समय पर जो उंगलियाँ उठाई जाती हैं, वे उठनी बन्द हो सकती हैं बशर्ते कि हम गीता में वर्णित शिक्षा दर्शन का अनुकरण करें। इसके लिए गीता प्रामाणिक ग्रन्थ है। कृष्ण गुरु और अर्जुन शिष्य।

गीता में कृष्ण और अर्जुन का वार्तालाप गुरु-शिष्य का, शिक्षक-अधिगम का वार्तालाप है। कृष्ण और अर्जुन सखा हैं परन्तु भाव गुरु-शिष्य का ही है।

अर्जुन गीता (2/27) में कहते हैं, मैं आपका शिष्य हूँ, इसलिए आपका शरणागत हूँ, मुझको शिक्षा दीजिए। कृष्ण भी गीता (18/64, 65) में अर्जुन से कहते हैं, ''तू मेरा अतिशय प्रिय शिष्य है, इससे यह परहित कारक वचन मैं तुझसे कहूँगा। तू मेरा अत्यन्त प्रिय है। यहाँ कृष्ण एक आदर्श शिक्षक के रूप में प्रस्तुत हुए हैं।

शिष्य की एक-एक और छोटी से छोटी शंका-जिज्ञासा को धैर्यपूर्वक सुनना और उनका तर्क सहित समाधान कर शिष्य को सन्तुष्ट करना गुरु का धर्म है। **शिष्य भले ही किताब-कापी पटक कर (शाला परित्याग, कर्म से विमुख) उदासीन हो जाए लेकिन कृष्ण सरीखा गुरु गीता का मधुर गूँजन (शिक्षण विधियाँ) कर उसे न केवल शाला में संलग्न ही करता (नामांकन व ठहराव) है, वरन् अपने सुप्रयासों के द्वारा उसके अभीष्ट (गुणवत्तायुक्त पक्की शिक्षा) को दिलाने में भी सफल होता है।**

शिष्य की स्थिति देखिए- करुणा से व्याप्त, आँसुओं से पूर्ण, व्याकुल नेत्रों वाले शोकयुक्त अर्जुन, उद्विग्न मन वाले अर्जुन बाण सहित धनुष को त्याग कर रथ के पिछले भाग में बैठ गए।'' **लेकिन चतुर शिक्षक श्री कृष्ण ने अपनी शिक्षाओं एवं प्रभावशाली शिक्षण विधियों के द्वारा न केवल उन्हें अपना कर्तव्य पालन करने हेतु तैयार कर लिया अपितु शिक्षाओं के हार (गीता) में ऐसे शिक्षण अधिगम विधियों (TLM) के विलक्षण मोती (श्लोक) जड़ दिए जिसमें जीवन के हर पहलू, हर शंका का समाधान अन्तर्निहित है।**

गीता में जीवन की मुस्कान छिपी है। कोई भी गुरु जब पूर्ण आत्मीयता व अमृत दृष्टि से शिष्य को शिक्षित करता है तो गीता (एक शिक्षण सिद्धान्त) की रचना होती है। शिष्य को चाहिए कि वह अपनी छोटी से छोटी शंका गुरुजन के समक्ष रखे व जब तक पूर्ण संतोष न मिल जाए तब तक प्रति प्रश्न करता रहे।

गुरु का यह नैतिक कर्तव्य है कि अपनी संपूर्ण योग्यता एवं क्षमता से शिष्य की शंकाओं का समाधान करें, तभी शिक्षण व अधिगम की सहज धारा प्रवाहित होती है। **गुरु को अपने शिष्य के प्रति पुत्रवत प्यार करना चाहिए भले ही उसकी सेवा में (शिक्षण कार्य करते) स्वयं को छोटी से छोटी भूमिका ही क्यों न निभानी पड़े।** गीता में यही तो झलकता है जगह-जगह। अद्भुत है गीता, अद्भुत है कृष्ण।

गीताकार कृष्ण स्वयं अपने शिष्य अर्जुन के रथ के सारथी बने। गुरु का शिष्य के प्रति सच्चे आत्मीय भाव का इससे बड़ा उदाहरण और क्या होगा। कृष्ण है बड़े दयालु, वे अतिशय उदार और संवेदनशीलता के साक्षात स्वरूप है। जिन शिक्षकों में ऐसे गुण विद्यमान होते हैं वे सर्वत्र पूजनीय होते हैं। बाल कृष्ण को जब पूतना अपने स्थन पर विष लगाकर मारने का उपक्रम करती है तो कृष्ण उसका काम तमाम कर डालते हैं, इसके बावजूद वे पूतना को परम गति का वरदान देते हैं। दया के सागर हैं कृष्ण। गीता में खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा व आचार विचार में स्वच्छन्दता पर अंकुश लगाकर स्वच्छता व नैतिक आदर्शों की स्थापना करना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बताया है।

कर्म किए जा गीता का सार उपदेश है। इसमें प्राणीमात्र को बिना फल की इच्छा रखे अपने कर्तव्यों का पालन करते रहने का अनुपम संदेश दिया गया है। आज के युग में लोग फल की सुनिश्चितता होने पर कर्म का चिन्तन करते हैं। यह कार्य, कारण व प्रतिफल की सहज प्रकृति से परे का सिद्धान्त है।

प्रकृति सबसे बड़ी न्यायकर्ता है। वह स्वयं हमारे कामों का यथोचित प्रतिफल दिलाती है। फिर व्यक्ति स्तर पर फल की चिन्ता करना अपनी जटिलताओं को बढ़ाना ही तो हुआ। शिक्षक कोई साधारण व्यक्ति या किसी व्यवस्था का दास नहीं होता, वह अपने निर्दिष्ट कार्य, योग्यता, वाणी-व्यवहार, त्याग, अनुशासन आदि के कारण विशिष्ट होता है। उसकी महानता असंदिग्ध होती है, उसे समाज का पथ प्रदर्शक बनना होता है, अतः उसे गीता के 'कर्म से नाता जोड़-फल की इच्छा छोड़' सिद्धान्त में अटल विश्वास रखना चाहिए।

एक शिक्षक को अपने शिष्यों व समाज का जो स्नेहादर मिल सकता है, उसमें निहित भावनात्मक मात्रा के बराबर आदर-सत्कार का अन्य कोई व्यक्ति पात्र हो ही नहीं सकता। भावना की तराजू तो हृदय में ही होती है और शिक्षक-शिक्षार्थी का भाव प्रधान सम्बन्ध होता है।

शिक्षा का उद्देश्य है शिक्षार्थी के दैहिक, भौतिक, दैनिक कष्टों का हरण कर उसे सहज-सुखी जीवन जीने की राह दिखाना-सा विद्या या विमुक्तये। इन तीनों तापों का निवारण योग में है। कहा भी है-योगः कर्मसु कौशलम। योग सब कष्टों के हन्ता है। अतः सो योग को जाने, उसका क्या कहना। योग ज्ञाता, योग गुरु, योगाचार्य, योग मनीषि, योग शिक्षक आदि उपमाएं योग जानने तथा उस ज्ञान को अन्य में बाँटने वालों को दी जाती है। भगवान कृष्ण तो योगेश्वर है। योगेश्वर यानी योग के ईश्वर। ईश्वर यानी जिससे ऊपर और कोई नहीं हो। गीता के अन्तिम 700वें श्लोक को देखिए-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो, भूतिर्ध्रुवा, नीतिर्मतिमर्म।।

कृष्ण कितने बड़े गुरु है। वे गुरुओं के भी गुरु है-गुरवा नां गुरु। सम्पूर्ण जगत के गुरु है। इसीलिए उन्हें जगद्गुरु कहा जाता है-कृष्णम् वंदे जगद्गुरु। शिष्य हित में अपना सर्वस्व दांव पर लगाने में कृष्ण कभी पीछे नहीं रहते। अपनी सम्पूर्ण कलाएं उसे सिखाते नजर आते हैं। हमें कृष्ण के जीवन से ऐसी शिक्षाएं ग्रहण करनी चाहिए। भगवान कृष्ण का जीवन और चरित्र संपूर्ण जीवन दर्शन का दिग्दर्शन करवाता है। इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से देखने और समझने पर भिन्न-भिन्न एवं दिव्य अनुभूतियों से साक्षात्कार होता है।

-वरिष्ठ संपादक (शिविरा)
मो. 09414060038

शैक्षिक वातावरण

एक आदर्श विद्यालय वातावरण में स्टॉफ की भूमिका

❑ रामचन्द्र स्वामी

विद्यालय में छात्रों को अच्छी शिक्षा प्राप्त हो, इसकेलिए विद्यालय का वातावरण स्वस्थ, सरस एवं प्रभावी होना आवश्यक है। विद्यालय वातावरण एक बहुआयामी सम्प्रत्यय है। विद्यालय वातावरण के निर्माण में मुख्य रूप से नेतृत्व का व्यवहार, अध्यापकों की नैतिकता, विश्वास का स्तर, संस्कृति, अभिभावकों का सहयोग, समुदाय का सहयोग, अध्यापक की प्रभाविकता, कार्यनिष्ठा, सन्तुष्टि, छात्रों की शैक्षिक उपलब्धता, मूल्यांकन आदि कारक प्रभावी होते है।

विद्यालय वातावरण, विद्यालय के पर्यावरण तथा प्रधानाध्यापक, अध्यापक, छात्रों, कर्मचारियों, अभिभावकों, समुदाय आदि के आपस में अन्तः क्रिया व सम्प्रेषण के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। अतः विद्यालय में प्रभावशाली व सुसंस्कारित शिक्षा के लिये विद्यालय में आदर्श वातावरण का होना अति आवश्यक है।

विद्यालय वातावरण को निम्न छः प्रकार से विभक्त कर समझ सकते हैं-

1. खुला वातावरण
2. पारिवारिक वातावरण
3. स्वायत वातावरण
4. पैतृक वातावरण
5. नियन्त्रित वातावरण
6. बन्द वातावरण

1. **खुला वातावरणः-** इस वातावरण में विद्यालय में खुलापन अधिक होता है अर्थात् स्टाफ में सभी सदस्य आपस में सभी एक दूसरे से प्रेमपूर्वक व मित्रवत व्यवहार करते हैं। अध्यापक के किसी भी कार्य में प्रधानाध्यापक या प्रबन्धन का हस्तक्षेप नहीं होता है।
2. **पारिवारिक वातावरणः-** इस वातावरण में विद्यालय में मित्रतापूर्वक वातावरण रहता है, सभी मिलजुल कर कार्य करते है। अध्यापकों को सदैव अच्छा करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। इसमें सभी सदस्य एक संयुक्त परिवार की तरह रहते है।
3. **स्वायत वातावरणः-** इसमें प्रधानाध्यापक द्वारा अध्यापकों को अपने कार्यों के प्रति प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे अध्यापक अपनी सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति करता है, और कुशलता पूर्वक अपने दायित्व को निभाता है, साथ ही अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक रहता है।
4. **नियन्त्रण वातावरणः-** इस वातावरण में विद्यालय प्रशासन अवैयक्तिक एवं औपचारिक होने के साथ ही अहम् केन्द्रित होता है। यह वातावरण विद्यालय के लिए अच्छा नहीं है।
5. **पैतृक वातावरणः-** इसमें भी प्रधानाध्यापक द्वारा अध्यापकों को स्वायत्ता नहीं दी जाती है, और उनके द्वारा उनमें प्रत्येक कार्य में हस्तक्षेप किया जाता है।
6. बंद वातावरणः- यह वातावरण विद्यालय के लिए अव्यवहारिक होता है। इसमें विद्यालय प्रशासन ही सर्वोपरी होता है। इसमें किसी भी प्रकार के कार्यों हेतु साथी अध्यापकों से कोई विचार विमर्श नहीं किया जाता है। इसमें कार्य के प्रति अध्यापक स्वेच्छा का अभाव होता है।

अतः विद्यालय वातावरण में आदर्शिता व पारदर्शिता के लिये उपरोक्त तीन प्रकार के विद्यालय वातावरण क्रमशः खुला वातावरण, स्वायत व पारिवारिक वातावरण ही अपनाने चाहिए। बंद वातावरण, पैतृक व नियन्त्रित वातावरण विद्यालयों के लिए सुसंसकारित शिक्षा के लिए उपयुक्त नहीं है।

अच्छे विद्यालय वातावरण से अच्छी प्रति पुष्टि प्राप्त

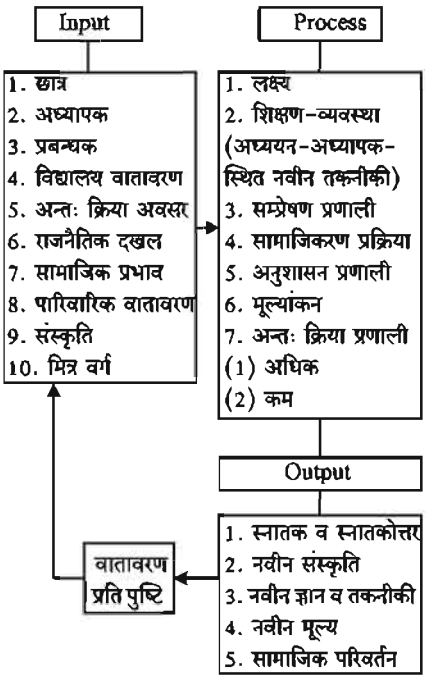

विद्यालय का वातावरण जिस प्रकार का होगा, प्राप्त ज्ञान का स्तर भी उसी प्रकार का होगा। बन्द वातावरण में अन्तः क्रिया के अवसर कम मिलने से उन्नति व परिवर्तन के मार्ग अवरुद्ध हो जाते है। जबकि खुले वातावरण में समस्त प्रणाली पर व्यक्ति का पूर्ण नियन्त्रण होने या क्रियाविधि अपने हाथ में होने से यदि कोई रूकावट आती भी है, तो उसे तुरन्त दूर कर लिया जाता है। खुली प्रणाली में छात्रों का जैसा इनपुट दिया जायेगा जैसे संसाधनों से उनकी निर्माण प्रक्रिया होगी वैसा ही आऊटपुट होगा।

इस प्रकार विद्यालय वातावरण में जितनी अधिक अन्तक्रिया होगी, उतने ही अधिक परिवर्तन नए विचार, नए मूल्य व सामाजिक परिवर्तन होगें तथा छात्रों को अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी। छात्रों में सुसंस्कारित व नैतिकता के गुणों का विकास होगा साथ ही अच्छा अनुशासन कायम होगा।

विद्यालय वातावरण प्रमुख रूप से निम्न दो आयामों पर आधारित होता है- 1. भौतिक आयाम, 2. मानवीय आयाम

1. भौतिक आयाम के निम्न घटक है:-
   1. पर्याप्त स्थान
   2. खेल का मैदान
   3. पुस्तकालय
   4. जलपान एवं शैचालय की व्यवस्था
   5. उपकरणों की उपलब्धता
   6. अन्य संसाधन

विद्यालय वातावरण में उपरोक्त सभी भौतिक घटकों का समुचित उपयोग करते हुए आदर्श विद्यालय वातावरण का निर्माण किया जा सकता है।

2. मानवीय आयाम के निम्न घटक होते हैं:
   1. प्रबन्धन का व्यवहार
   2. प्रधानाध्यापक
   3. अध्यापक
   4. क्लर्क
   5. चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
   6. अभिभावक व समाज

विद्यालय वातावरण में भौतिक आयाम के स्थान पर मानवीय आयाम का अधिक प्रभाव होता है। मानवीय आयाम में विद्यालय क्रिया ही विद्यालय वातावरण तैयार करती है। इनका व्यवहार ही विद्यालय वातावरण की रीढ की हड्डी होती है।

एक आदर्श वातावरण निर्माण में प्रधानाध्यापक व अध्यापकों की अहम भूमिका होती है। वातावरण निर्माण में प्रधानाध्यापक को निम्न चार बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये-

1. विचारपूर्ण तर्क
2. उत्पादकता प्रिय
3. दबाव या गति
4. अलगाव की स्थिति

विद्यालय वातावरण सौहार्द्रपूर्ण बनाने में प्रधानाध्यापक की मुख्य भूमिका होती है, उसे अपने विद्यालय स्टाफ के साथ आत्मीयता व सद्भाव की स्थिति के अनुसार सहयोग व मार्गदर्शन करना चाहिये जिससे विद्यालय का वातावरण खुशनुमा बना रहे तथा कार्य की प्रगति होती रहे।

प्रधानाध्यापक को विद्यालय के लिए स्वयं को एक आदर्श मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना चाहिये। प्रधानाध्यापक को अपने विचार सहयोगियों पर जबरदस्ती नहीं थोपने चाहिये बल्कि मानवीय रूप से सद्भाव की स्थिति के साथ कार्य करवाना चाहिये। अध्यापकों को भी विद्यालय वातावरण में आत्मीयता से कार्य करना चाहिये उन्हें प्रधानाध्यापक के व्यवहार को सकारात्मक व प्रशंसात्मक रूप में देखना चाहिये।

विद्यालय वातावरण को सौहार्द्रपूर्ण बनाने के लिये प्रार्थना सभा को प्रभावशाली बनाना चाहिये। प्रार्थना स्थल पर प्रधानाध्यापक सहित विद्यालय स्टॉफ को उपस्थित होना चाहिये। प्रार्थना में वंदेमातरम्, राष्ट्रगान, सरस्वती वंदना, ईश वंदना, देश भक्ति गीत, दैनिक समाचार, सामान्य ज्ञान, आदर्श विचार, नैतिकता के श्लोक प्रतिज्ञा आदि को शामिल कर आयोजित करनी चाहिये। प्रार्थना स्थल ही विद्यालय का हृदय स्थल माना जाता है।

प्रार्थना स्थल पर ही प्रधानाध्यापक या सहयोगी अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों को अनुशासन, नीतिगत शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, मधुर व्यवहार अपनाने हेतु प्रेरित करना चाहिये जिससे विद्यालय में दिनभर शिक्षा का अच्छा माहौल बना रहें।

विद्यालय वातावरण को अच्छा बनाने में शिक्षा के साथ-साथ विद्यालय में सह शैक्षणिक गतिविधियां, बालसभा, शिक्षा शनिवार, एन.सी.सी., स्काउट गाईड, बालचर, एन.एस.एस., महापुरुषों की जयन्तियां व महत्वपूर्ण दिवस आदि पर भी विभिन्न आयोजन व गतिविधियां अपनाकर विद्यालय वातावरण को ओर भी अच्छा व आदर्श बनाया जा सकता है। एक आदर्श विद्यालय वातावरण से शिक्षा के क्षेत्र में तो गुणवत्ता बढेगी ही साथ-साथ विद्यालय निरन्तर प्रगति करता रहेगा। विद्यालय का पक्ष तो बढ़ना है ही।

यह प्रसन्नता की बात है कि विभाग के द्वारा 20 आदर्श विषयों का चयन कर नैतिक शिक्षा विद्यालयों में शुरू करने का निर्णय लिया गया है। अब यह हम अध्यापकों को देखना है कि विभाग की इस पहल को प्रार्थना सभा, बाल सभा एवं अन्य विद्यार्थी समागमों में हम किस प्रकार क्रियान्वित करते हैं।

-अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि.,
डूडी पेट्रोल पम्प के पास, बीकानेर
मो.: 941451032

कविता

मन में उमड़ते भाव

❑ महेश चन्द्र श्रीमाली

शिक्षा विभाग की बात जब करता मैं,
मन में उमड़ते भावों को जान लीजिए।

ज्ञान की सरिता बह रही गाँव-गाँव में,
विभाग को गंगोत्री तीर्थ मान लीजिए।

रंग बिरंगी क्यारियों में
महक रही फुलवारियाँ,
विद्यालयों को ज्ञान के
उद्यान मान लीजिए।

गांवों-ढाणियों वाले प्रदेश में
शिक्षा का उजाला हुआ,
निदेशालय बीकानेर को
सर्च लाइट मान लीजिए।

भावी राष्ट्र निर्माताओं का
होता निर्माण यहाँ,
शिक्षकों को कुशल
कुंभकार मान लीजिए।

शिक्षण प्रशिक्षण, शैक्षिक, सृजन,
साहित्यिक, शिविरा पत्रिका,
सरस्वती की मासिक पाती
इसे मान लीजिए।

आधुनिक युग की चुनौतियों
के सामने हेतु तैयार हो,
नये-नये आयाम,
योजनाओं की सौगात दीजिए।

वर्तमान ऊर्जा, गति,
अनुभव को प्रणाम मेरा,
'महेश' विद्या ददाति कौशलम्
मिलकर मान कीजिए।

-3-ए-8, हिरणमगरी,
सेक्टर-5, प्रताप नगर, उदयपुर
मो. 9414851013

दूसरे आपसे जितनी उम्मीद करते हैं, उससे ऊँचे पैमाने पर अपना मूल्यांकन करें। कभी भी बहाने न बनाएं। कभी भी खुद पर दया न करें। अपने प्रति कठोर और बाकी सबके प्रति दयालु रहें।

-हेनरी वॉर्ड बीचर

शैक्षिक प्रबन्ध

विद्यालय प्रबन्धन एवं संस्था प्रधान

□ डॉ. कल्पना शर्मा

ऐसी शिक्षा जो विद्यार्थियों को सुखी एवं सम्पन्न जीवन जीने के लिये तैयार करती है, उनमें सीखने की लगन उत्पन्न करती है, वह गुणवत्तायुक्त शिक्षा कहलाती है। ऐसी शिक्षा ही बालकों के अंतर्मन की गहराइयों को बाहर लाकर उन्हें राष्ट्र के विकास की ओर प्रेरित करती है। शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर व स्वरूप परोक्ष रूप से राष्ट्रीय विकास का सबसे प्रमुख घटक है।

यदि विद्यालय शैक्षिक प्रक्रिया की आधारभूत संगठनात्मक इकाई है तो संस्थाप्रधान निश्चय ही उसका केंद्रबिंदु है। वह शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक और समाज के साथ एक चतुष्कोणीय धुरी के रूप में काम करता है। यदि संस्थाप्रधान में समन्वय स्थापित करने की क्षमता है तो निश्चित रूप से शैक्षिक गुणवत्ता का विकास संभव है। इस हेतु बेहतर विद्यालय प्रबंधन द्वारा संसाधनों का समुचित उपयोग, समाज की भागीदारी को ध्यान में रखते हुए वह एक ओर जीवन्त विद्यालय समाज को अर्पित करता है वहीं दूसरी ओर समाज की अधिकाधिक सहभागिता, साधन सुविधाएं व दिशा प्राप्त कर समुदाय व विद्यालय की अंत:क्रियाओं को रचनात्मक बनाता है।

शिक्षा में गुणवत्ता विकास हेतु विद्यालय प्रबंधन में संस्थाप्रधान को अपने दायित्व निर्वहन में अनेक कार्य संपादित करने होते हैं, जिनमें प्रमुख कार्य निम्नानुसार हैं:-

1. विद्यालयी वातावरण :

बदलते हुए परिवेश की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना संस्थाप्रधान अपने आत्मविश्वास एवं विवेकपूर्ण निर्णयों व कर्तव्यनिष्ठ भागीदारी द्वारा निर्बाध रूप से कर सकता है। प्रतिदिन प्रार्थना सभा का प्रभावी आयोजन विद्यालयी वातावरण की सुकूनभरी शुरुआत करता है। प्रार्थनासभा में प्रतिदिन भिन्न-भिन्न प्रार्थनाएं, देशभक्ति गान, अनमोल वचन, नैतिक शिक्षाप्रद लघुकथाएं, प्रेरक प्रसंग, सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन विद्यार्थियों के द्वारा करवाना चाहिये। प्रार्थना वाद्य यंत्रों से की जाये तो और भी उत्तम है। संस्थाप्रधान प्रतिदिन अपने उद्बोधन से छात्रों को प्रेरणा प्रदान करें, साथ ही छात्र कल्याणकारी योजनाओं, छात्रवृत्तियों की जानकारियां भी विद्यार्थियों को प्रदान की जानी चाहिये। प्रभावी प्रार्थना सभा निश्चित रूप से शांत शैक्षिक वातावरण का निर्माण करती है जिससे शिक्षा में गुणवत्ता व गुणात्मकता में बढ़ोतरी संभव है।

2. समय प्रबंधन :

आदर्श व्यावहारिक योजना तथा उचित समय प्रबंधन कुशल शैक्षिक प्रशासन की सफलता का मंत्र है। विद्यालय के नियमित संचालन हेतु प्रतिवर्ष शिविरा पंचाग जारी किया जाता है। शिविरा पंचांग में वर्णित समयबद्ध कार्य आवश्यक रूप से संपादित हों, इसके अलावा स्थानीय स्तर पर सुविचारित गतिविधियां भी इसमें शामिल की जानी चाहिए तथा उनके यथा समय संपादित होने की दिशा में विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

3. योजना निर्माण :

संस्थाप्रधान को सत्र के आरम्भ में ही स्टाफ के सभी सदस्यों की एक संयुक्त बैठक का आयोजन कर परीक्षा परिणाम की समीक्षा करनी चाहिये। समीक्षा के दौरान उन संभावनाओं पर विचार किया जाना चाहिये जिनसे परीक्षा परिणाम में संख्यात्मक एवं गुणात्मक रूप से अभिवृद्धि हो सके। शैक्षिक उन्नयन हेतु विषयाध्यापकों के साथ मिलकर एक सामूहिक योजना निर्मित की जाए जिसमें कुछ नवाचारों का समावेश किया जाना चाहिए।

4. प्रभावी परिवीक्षण :

विद्यालय में शैक्षिक गुणवत्ता एवं शिक्षण सुधार की दृष्टि से प्रभावी परिवीक्षण का अत्यधिक महत्व है। संस्थाप्रधान को अन्य कार्य प्रवृत्तियों के क्रियान्वयन के साथ ही प्रत्येक प्रवृत्ति एवं शिक्षण तथा गृहकार्य का प्रभावपूर्ण परिवीक्षण यथा समय करना चाहिए। विद्यालय के प्रत्येक अध्यापक के अध्यापन लिखित एवं सहशैक्षिक कार्यों के निरीक्षण की विधिवत् योजना विभागीय मानदण्डानुसार सत्र के आरंभ में ही निर्माण की जानी चाहिये। अध्यापन के सूचित परिवीक्षण की जानकारी अध्यापकों को सत्रांरभ में ही दी जानी चाहिए। परिवीक्षण कार्य निर्धारित प्रारूपों में अंकित किया जाए।

गृहकार्य पर्ययेक्षण हेतु भी सत्र के आरंभ में योजना बनाकर विषयाध्यापकों को सूचित करवाया जाना चाहिए। प्रयास यही करना चाहिये कि प्रत्येक कक्ष के विभिन्न विषयों की गृहकार्य उत्तरपुस्तिकाएं संस्था प्रधान द्वारा अवलोकन की जाकर निर्धारित प्रारूप में टिप्पणी व सुझाव अंकित कर शिक्षक को आवश्यक दिशानिर्देश दिये जाएँ। परिवीक्षण की समाप्ति पश्चात् अनुभूत समस्याओं के समाधान हेतु अनुवर्तन पर बल दिया जाना चाहिए। संस्थाप्रधान को स्वयं भी अपना मूल्यांकन कर ज्ञात करने की चेष्टा करनी चाहिए कि उसके द्वारा संपादित परिवीक्षण एवं प्रदत्त दिशानिर्देश कहां तक सार्थक सिद्ध हुए हैं।

5. प्रबोधन :

संस्थाप्रधान को निरंतर सजगता, सतर्कता एवं भावी क्रियान्वयन हेतु जागरूकता रखना ही दरअसल प्रबोधन है। इस हेतु प्रत्येक माह का एक प्रबोधन कार्यक्रम/कैलेंडर बनाकर प्रतिदिन, प्रति सप्ताह व प्रतिमाह संपादित किये जाने वाले कार्यों को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है व विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में उत्तरोत्तर प्रगति संभव हो सकेगी।

6. दैनन्दिनी संधारण :

संस्थाप्रधान को प्रतिदिन स्वयं अपनी दैनंदिनी संधारण करनी चाहिए। विद्यालय के सभी शिक्षकों को दैनंदिनी संधारण हेतु सत्रारम्भ में ही निर्देश प्रदान किए जाने चाहिए। प्रतिदिन शून्य कालांश में सभी शिक्षकों की दैनंदिनी का अवलोकन कर आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान

किये जाएँ। साथ ही विद्यार्थियों को प्रतिदिन अनिवार्यतः दैनंदिनी संधारण करवाया जाना चाहिए। शिक्षकों को निर्देशित किया जाए कि समय-समय पर छात्रों की दैनिक डायरी का अवलोकन करें। संस्थाप्रधान भी माह में कम से कम एक बार प्रत्येक कक्षा की यादृच्छिक रूप से कुछ दैनंदिनी का अवलोकन करें। नियमित रूप से दैनंदिनी संधारण विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम में काफी कारगर सिद्ध होगा।

7. रिक्त कालांश में शिक्षण व्यवस्था :

अध्यापक के अवकाश अथवा राजकीय कार्य में व्यस्त होने की वजह से उसके रिक्त कालांश में विषय शिक्षण की व्यवस्था की जानी आवश्यक है। शिक्षकों को निर्देशित किया जाए कि व्यवस्था कालांश में भी वे अन्य सामान्य कालांशों की तरह ही कक्षा में शिक्षण अथवा प्रवृत्ति कार्य करवाएं।

8. पुस्तकालय का प्रभावी उपयोग :

विद्यालय में प्रतिवर्ष विभिन्न प्रकार के बजट से प्राप्त पुस्तकें, संदर्भ साहित्य, सहायक पुस्तकें एवं ज्ञानवर्धक पुस्तकें सभी कक्षा के विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। पुस्तकालय एवं वाचनालय के प्रभावी उपयोग से विद्यार्थियों की शैक्षणिक जानकारी में विस्तार होगा। समाचार पत्रों एवं विभिन्न पत्रिकाओं को पढ़ने से छात्रों की जानकारी में वृद्धि होगी। जिससे परोक्षतः उनकी शैक्षिक गुणवत्ता में बढ़ोतरी संभव हो सकेगी।

9. इकाई जाँच :

प्रत्येक विषय में विद्यार्थियों को परीक्षा हेतु तैयार करने के लिये प्रत्येक शिक्षक अपने-अपने विषय में इकाई जाँच/साप्ताहिक जाँच आदि की व्यवस्था करें। जाँच सम्बन्धी रिकार्ड संधारित करवाया जाना चाहिये। इकाई परख की जाँच कक्षा में रिक्त कालांश अथवा व्यवस्था कालांश में छात्रों के द्वारा करवाई जानी चाहिए जिससे छात्रों का रुझान विषय के प्रति बढ़ेगा व परीक्षा परिणामों में निश्चित रूप से गुणात्मक अभिवृद्धि होगी।

10. उपचारात्मक शिक्षण :

इकाई परख व विभिन्न सामयिक जांच के प्राप्तांकों के आधार पर प्रत्येक शिक्षक हेतु अपनी दैनन्दिनी में कमजोर व प्रतिभावान विद्यार्थियों की सूची अंकित करें। कमजोर बालकों हेतु निदानात्मक एवं सुधारमूलक उपाय करें साथ ही प्रतिभावान बालकों के शैक्षणिक उन्नयन के प्रयास किये जाएँ।

11. मूल्य शिक्षा :

शिक्षा में मानवीय मूल्यों में पतन के कारण ही समाज में अपराध, शोषण, उत्पीड़न, आतंकवाद आदि की घटनाएं बढ़ रही हैं। आए दिन होने वाली पारिवारिक हिंसा भी शिक्षा में मानवीय मूल्यों की भंगुरता की विवेचना कर रही है। मूल्य शिक्षा हेतु प्रतिदिन अथवा सप्ताह में दो बार नैतिक शिक्षा से ओतप्रोत प्रेरक प्रसंग की प्रस्तुति, सत्रपर्यन्त आने वाले उत्सव और जयंतियों के आयोजन का दायित्व छात्रों को सौंपा जाना चाहिए। विभिन्न अवसरों पर समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विद्यालय में आमंत्रित कर, उनके प्रेरणादायी उद्बोधन से छात्रों में नैतिक व मानवीय मूल्यों का विकास संभव है। समय-समय पर बोर्ड परीक्षाओं में अव्वल रहने वाले व श्रेष्ठ कार्य करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत कर उनके अनुभवों को कक्षा में प्रस्तुत करवाया जाना चाहिए जिससे अन्य विद्यार्थी उनके अनुभवों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें।

12. विद्यालय का भौतिक परिवेश एवं पर्यावरण :

शैक्षिक गुणवत्ता उन्नयन हेतु संस्थाप्रधान को विद्यालय के भौतिक परिवेश को निरंतर विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। कक्षा-कक्ष, श्यामपट्ट, प्रयोगशाला के प्रभावी उपयोग व उचित रखरखाव के साथ ही कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई-मेल, साइबर स्पेस आदि के माध्यम से शिक्षा में गुणवत्ता लाने में बेहतर प्रबंधन में संस्थाप्रधान अपनी महती भूमिका निभा सकते हैं। विद्यालय में इको क्लब अंतर्गत छात्रों द्वारा वाटिका, पौधे, पक्षियों हेतु परिण्डे लगाकर व उनके रखरखाव द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु संचेतना विकसित की जा सकती है।

13. शाला प्रबन्ध समिति की भूमिका :

विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति की समीक्षा हेतु नियमित रूप से प्रतिमाह अभिभावक-शिक्षक परिषद् की बैठकों का आयोजन किया जाना चाहिए। इस आयोजन द्वारा अभिभावक न केवल नामांकन व ठहराव के लक्ष्य अर्जित करने में संस्थाप्रधान के मददगार होंगे बल्कि शिक्षा की गुणात्मकता में भी योगदान दे सकेंगे। विद्यालय समय पूर्व अथवा पश्चात्, अभिभावकों से संपर्क कर छात्रों की प्रगति के बारे में चर्चा की जाए। इसी प्रकार विद्यालय विकास समिति का भी समय-समय पर विद्यालय के बहुमुखी विकास हेतु लिया जाना चाहिए।

संस्था प्रधान विद्यालय का प्रतिबिम्ब होता है। **संस्था प्रधान की कार्यशैली न तो पानी की लकीर के समान मुलायम होनी चाहिये और न ही पत्थर की लकीर के समान कठोर। अपितु बालू की लकीर के समान प्रासंगिक होनी चाहिये, ताकि हर परिस्थिति में सभी प्रकार के मानवीय, भौतिक एवं अन्य प्रकार के संसाधनों के बेहतर प्रबंधन द्वारा शैक्षिक गुणवत्ता में अभिवृद्धि हो सके।**

-प्रधानाचार्य, रा.मा.उ.मा.वि.,
ब्राह्मणों की सेरी, आसीन्द (भीलवाड़ा)
मो. 9414838145

सीख

बादशाह हजरत इब्राहीम ने एक गुलाम खरीदा जो बहुत ही सीधा था। वह सदा आदेशों का पालन आँखें झुकाकर करता था। एक दिन बादशाह ने गुलाम को बुलाकर उसका नाम पूछा। गुलाम ने सिर झुकाकर कहा 'आप जिस नाम से पुकारेंगे वही मेरा नाम है।'

इब्राहीम ने प्रभावित होकर कहा 'तुम्हारा सबसे प्रिय भोजन क्या है?'

'आपसे जो मिल जाता है वही मेरा प्रिय भोजन है।' 'तुम्हें कैसे कपड़े अच्छे लगते हैं?' 'जैसे भी आप दे दें।'

तुम्हें कौन-सा काम सबसे ज्यादा पसन्द है? जो आप बताएं वही मुझे सबसे अच्छा लगता है।

इब्राहीम कुछ झुंझलाए, 'कैसे इंसान हो तुम? तुमने सब मुझ पर डाल दिया। क्या तुम्हारी कोई इच्छा नहीं है?'

गुलाम उनके पैरों में गिरकर बोला 'बादशाह न होइए, गुलाम मालिक की इच्छा से ही चलते हैं।'

हजरत इब्राहीम की आँखों में आँसू आ गए। वह गुलाम को उठाकर गले लगाते हुए बोले 'तुमने मेरी आँखें खोल दी, गुलाम तुम नहीं, मैं हूँ। जिसने अपनी इच्छाओं को जीत लिया वही आजाद है। तुम अपनी सब इच्छाएं खत्म कर चुके हो, जबकि मैं इच्छाओं का गुलाम हूँ।'

हजरत इब्राहीम ने उसे उसी समय आजाद कर दिया और सारी उम्र उसे अपना गुरु माना।

-अभय कुमार जैन
तुमि, बंदा रोड, भवानीमण्डी (राज.)

शैक्षिक चिन्तन

शिक्षक के विभिन्न स्वरूप

❒ मदन लाल पुरोहित

शिक्षक वर्तमान और भविष्य की उज्ज्वल भव्यता का वास्तुकार होता है। वर्तमान समाज और सामाजिकता के ध्वंसावशेष को वही फिर से पुनर्स्थापित कर सकता है। सभ्यता, संस्कृति और समाज के ध्वंस के अन्तिम क्षणों का तात्पर्य है-निर्माण का आरंभिक चरण, इस चरण में भव्य और वैभव की कुशल कारीगरी शुरू होती है। शिक्षक ही शिल्पकार है, जो मानव निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है तथा इनके माध्यम से समाज एवं राष्ट्र की दशा एवं दिशा बदल देता है। वह भव्य भवन के निर्माण में नींव का पत्थर भी रखता है तथा चमचमाते कँगूरों को सँवारने का कार्य भी सँभालता है।

शिक्षा के इस वर्तमान समय में शिक्षकों की संख्या में कमी नहीं है, कमी है तो शिक्षकों के स्तर एवं गुणवता में। यह बात कहने-लिखने एवं सुनने में अप्रिय भले ही लगे, परंतु सचाई यही है। अगर ऐसा नहीं तो फिर क्यों कोई विष्णुगुप्त पैदा नहीं होता, जिसने अखंड भारत के निर्माण के लिए एक दासी-पुत्र को चंद्रगुप्त के रूप में खड़ा कर दिया था। क्यों कोई बुद्ध पैदा नहीं होता जिन्होंने अपने वैभव को त्याग धर्म की धारा को बदल दिया, क्यों कोई स्वामी विवेकानन्द पैदा नहीं होता जिन्होंने भारत के युवाओं में उस रक्त का संचार किया जो मंद हो गया था।

शिक्षकों को सोचना होगा कि मनुष्य जाति ने जिन-जिन साधन-सुविधाओं की आकांक्षा की थी, वे सब पूरी हो गई। मनुष्य जाति ने जो-जो सपने देखे थे, वे भी लगभग पूरे हो चुके हैं। इतने पर भी आज जैसी दारूण एवं करुण स्थिति कभी नहीं रही। इसकी तीव्रता में कमी के स्थान पर दिन दूनी-रात चौगुनी बढ़ोत्तरी होती जा रही है। आधुनिक सुविधाओं के अंबार में मनुष्यता के शिक्षक दब गए हैं। शिक्षक वह व्यक्ति है जिसने अपने जीवन में चरित्र, चिंतन एवं व्यवहार के बीच सामंजस्य एवं समरसता पैदा की हो तथा जो जीवनपर्यन्त सीखने और सिखाने वाला हो उसे ऐसे शिक्षक कहते हैं। परंतु चौंकाने वाली बात है कि आज शिक्षकों का घोर अभाव तथा इसके नाम पर व्यवसाय करने वाले श्रमिकों की बहुलता है, जिनकी निष्ठा शिक्षण में कम अर्थोपार्जन में अधिक है।

शिक्षक सदैव समाज का हितचिंतन करता रहता है। चिंतन की गहराई से उपजे उसके विचार समाज की समस्याओं का समाधान खोजते हैं तथा पाते हैं। वह विचार को क्रियारूप में परिणत करना जानता है तथा समाज के सभी वर्गों को इसकी कला सिखाता है। वह सिखाता है कि कैसे सिद्धांत जीवन में व्यवहार किए जाते हैं, कैसे नीति-नियमों को अपनाकर व्यवस्था का रूप दिया जाता है, कैसे संयम, सहयोग एवं सहकारिता को स्वीकार कर एक नूतन औचित्यपूर्ण परंपरा का विकास किया जाता है। वह समझता है और समझाता है कि हम कैसे एकदूसरे के सुख-दुःख में सहभागी बनें। शिक्षक समाज का निर्माता बाद में किन्तु पथप्रदर्शक पहले है। शिक्षक एक सेवक है, शिक्षक एक विचारक भी होता है। शिक्षक की सर्वोपरि विशेषता है कि वह समाज में लोकसेवी गढ़ सके, जो समाज को सर्वांगीण एवं समुचित रूप से समृद्ध एवं समुन्नत कर सके।

भारत के लोक-शिक्षण तंत्र में महाभारतकाल से विकृति एवं विकार का दौर प्रारंभ हुआ। अनेक महान शिक्षकों ने इस विकार को मिटाने, इस तंतुजाल का नवीनीकरण करने में प्राणपण से जुटे रहे। इन प्रयासों के बावजूद लोक-शिक्षकों की व्यापक सेना तो नहीं तैयार हो पाई, किंतु पुरुषार्थ-प्रयास से इस दिव्य परंपरा को जीवित अवश्य रखा। इसी वजह से जिस ऋषि संस्कृति की विरासत का गान हम करते हैं, उसकी सांसें रुकीं नहीं, चल रही हैं। इस थमी साँस को तीव्र करने, मृतप्राय प्रवाह को प्रचंड धारा में बदल देने हेतु प्रतिभाओं की माँग है, जो पुनः समाज, सामाजिकता एवं जीवनमूल्यों की नवीन वसुधाव्यापी सेतुबद्धता का निर्माण कर सके। इस महान कार्य में हम सबका योगदान होना चाहिए।

शिक्षक का कार्य बहुउद्देश्यीय होता है। इनके उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए वह बहुविध प्रयास करता है। उसके प्रयासों में लोक मंगल की उदात्त भावना निहित रहती है। शिक्षक के लिए उसके शिष्यों अथवा शिष्य परिवार के सदस्य सब एक समान होते हैं। वह सबका हितैषी होता है।

विद्यालय परिसर एवं कक्षा-कक्ष में शिक्षक अपने आपको आदर्श का मॉडल मानकर प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। वह जानता है कि उसके व्यवहार एवं चरित्र को देखकर अपना व्यवहार एवं चरित्र निर्मित करने वाले सैकड़ों विद्यार्थी हैं। यदि वह उन सैकड़ों विद्यार्थियों के हित में कुछ बेहतर नहीं कर सका तो उसका शिक्षक होना ही संदिग्ध होगा।

जहाँ तक नैतिक शिक्षा एवं चरित्र में संस्कार भरने का कार्य है, शिक्षक अपने मन, वचन व कर्म से उत्तम करने का ही प्रयास करता है। यदि हम इतिहास की तरफ दृष्टि डालें तो चाणक्य, समर्थ गुरु रामदास, रैदास, कबीर, नानक, मीरा जैसे अनेक नाम देखने को मिलेंगे जिन्होंने अपने योगदान से हमें लाभान्वित किया है। वस्तुतः ये सभी चरित्र अपने आप में किसी शिक्षक से कतई कम नहीं है। आज की पीढ़ी के शिक्षकों को निरंतर स्वाध्याय करते हुए उन समस्त मूल्यवान विरासतों को ठीक से समझने तथा तद्नुसार आचरण करने का प्रयास करना चाहिए जिन पर यह महान देश सहज ही में गर्व करता है।

नई शिक्षा नीति 1986 और इसके बाद शिक्षा पर गठित हुई विभिन्न कमेटियों एवं कार्य दलों ने भी शिक्षा के महत्व को समझ कर शिक्षक के लिए उत्तम शब्दावली का प्रयोग किया है। नई शिक्षा नीति में तो यहाँ तक कहा गया है कि किसी राष्ट्र का स्तर उसके शिक्षकों के स्तर से ऊँचा हो नहीं सकता। यह कथन ही शिक्षकों का महत्व दर्शाने के लिए पर्याप्त है। हमें इसकी कीमत समझनी चाहिए।

-प्रधानाध्यापक
रा.मा.वि., फतेहपुर (हनुमानगढ़)
मो.9460688160

पर्यावरण

वृक्षारोपण पुण्य महान

❒ ओम प्रकाश शर्मा

प्रकृति ईश्वर का दिव्य दर्शन स्वरूप अनुपम, अनमोल उपहार है। ऋषि-महात्माओं की तपस्या, वेदों की रचना प्रकृति की गोद में हुई है। वृक्षों की रक्षार्थ 'वृक्षो रक्षति रक्षितः' और वन्दनार्थ-

मूलं ब्रह्मा त्वचा विष्णु, शाखा रुद्रो महेश्वरः।
पत्रे पत्रे तु देवा नाम, वृक्ष राजो नमोस्तुते।।

वेदों एवं धर्म शास्त्रों में वर्णित अनेक प्रमाण जो आज भी भारतीय समाज में यथावत जैसे घर-घर में तुलसी का पौधा, केले, पीपल, बरगद, आँवले, कल्पवृक्ष, सूर्य, चन्द्रमा, गोवर्धन परिक्रमा, गऊमाता, आदि का पूजन, तुलसी पौधे का विवाह, छोटे से छोटे जीव, चींटी से लेकर विशालकाय हाथी, पशु-पक्षियों आदि के लिये आहार व जल की समुचित व्यवस्था करना, तुलसी पत्र की पूजा भोग, प्रसाद, चरणामृत, पंचामृत में प्रधानता सहित रुद्राक्ष (शिव स्वरूप) कदम्ब (विष्णु स्वरूप), अशोक (भगवद स्वरूप), गूलर (दत्तात्रेय) बिल्वपत्र, देवदार, साल, आँख आदि के प्रति श्रद्धा भावना वृक्ष वनों के विकास, जैव विविधता, वन व वन्य जीवों अर्थात् पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी केवल धार्मिक संवेदनशीलता ही नहीं बल्कि पूर्वजों से प्राप्त भारतीय सभ्यता, संस्कृति की महान विरासत भावी पीढ़ी को हस्तान्तरित करते हुए राष्ट्रहित में पर्यावरण संरक्षण हेतु बाल्यकाल से ही सुसंस्कारित करना है। इसलिए वृक्षों को देव स्वरूप या देव निवास के रूप में पूजनीय मानकर इनकी परवरिश, सार-संभाल, सुरक्षा अपनी संतान से भी अधिक की जाती रही है। विश्व में आजादी और देश सेवा के लिए अपने-अपने प्राण न्यौछावर (बलिदान) करने वाले 'शहीदों' की अनेक गौरवमय मिसाल है। लेकिन वृक्षों की रक्षा के लिये स्वप्रेरित, एकमात्र, अहिंसात्मक अभूतपूर्व घटनाक्रम के अनुसार लगभग 250 वर्ष पूर्व जोधपुर रियासत के एक छोटे से गांव 'खेजड़ली' में नारी शक्ति अमृता देवी सहित 363 विश्नोई महिला, पुरुष, नौजवान एवं बुजुर्गों ने खेजड़ी के वृक्षों की रक्षार्थ स्वयं वृक्षों से लिपट कर जीते जी अपने हाथ, पैर, सिर, शरीर कटवा कर एक के बाद एक अपनी जान दे दी। पर तत्कालीन शासक राजा के कारिंदों को उन्होंने एक भी वृक्ष काटने नहीं दिया।

सौभाग्यं संतति देव दानं धान्यं च सर्वदा।
आरोग्यं शोकशमनं कुरु मे माधव प्रिये।।

आइये, हम सब मिलकर वृक्ष लगाएँ-पुण्य कमाएँ, मरुधरा को स्वर्ग बनाएँ। धरती पर लगे पेड़ न केवल धरती माता का शृंगार ही करते हैं अपितु वे हमारे लिए अनेक प्रकार के लाभों को देने वाले होते हैं। सच ही कहा है-'वृक्ष हैं धरती के शृंगार, हमारे जीवन के आधार।' अतः जीवनदायक वृक्षों को लगाने तथा उनकी रक्षा करने में किसी प्रकार की कमी नहीं रहनी देनी चाहिए।

-प्राध्यापक, रा.उ.मा.विद्यालय, बिजयनगर (अजमेर)
मो. 9928696459

इस माह का गीत

याद करो कुर्बानी...

देशभक्ति से ओतप्रोत है यह गीत! लता मंगेशकर ने जब इसे गाया तो नेहरूजी की आँखों में आँसू छलक आए। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शिविरा के पाठकों के लिए प्रस्तुत है महान गीतकार प्रदीप द्वारा रचित यह गीत।

ऐ मेरे वतन के लोगों, तुम खूब लगा लो नारा
यह शुभ दिन है हम सबका, लहरा लो तिरंगा प्यारा
पर मत भूलो सीमा पर वीरों ने प्राण गँवाए
कुछ याद उन्हें भी कर लो, जो लौट के घर न आए
ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आँख में भर लो पानी।
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो कुर्बानी।।
जब घायल हुआ हिमालय खतरे में पड़ी आज़ादी
जब तक थी साँस लड़े वो फिर अपनी लाश बिछा दी।
हो गये वतन पे निछावर वो वीर थे कितने गुमानी
ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आँख में भर लो पानी।
जब देश में थी दिवाली वो झेल रहे थे गोली
जब हम बैठे थे घरों में वे खेल रहे थे होली
थे धन्य जवान वो अपने, थी धन्य उनकी जवानी।
ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आँख में भर लो पानी।।
कोई सिक्ख, कोई जाट मराठा, कोई गोरखा कोई मद्रासी
सरहद पर मरने वाला हर वीर था भारतवासी
जो खून गिरा पर्वत पर वो खून था हिन्दुस्तानी।
ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आँख में भर लो पानी।
थी खून से लथ-पथ काया फिर भी बन्दूक उठा के
दस-दस को एक ने मारा फिर गिर गये होश गँवा के
जब अन्त समय आया तो कह गये कि हम चलते हैं
खुश रहना देश के प्यारों अब हम तो सफ़र करते हैं
क्या लोग थे वो दीवाने क्या लोग थे वो अभिमानी
जो शहीद हुए हैं उनकी ज़रा याद करो कुर्बानी।।
जय हिन्द! जय हिन्द! जय हिन्द के ऐ सेनानी।
ऐ मेरे वतन के लोगों ज़रा आँख में भर लो पानी।।

हरित राजस्थान अभियान

वृक्ष हमारे मीत हैं हम वृक्षन के मीत

□ डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय

हमारे संवेदनशील एवं पर्यावरणप्रेमी मुख्यमंत्री माननीय अशोक जी गहलोत की मंशानुरूप चलाये गये हरित राजस्थान अभियान के राजकीय दायित्व एवं स्वयं की हार्दिक इच्छानुरूप सत्रारम्भ से ही मैंने विद्यार्थियों के साथ मिल कर विद्यालय परिसर में पौधारोपण की वृहत योजना बनाई और ''आओ विद्यालय वाटिका बनाएँ'' कार्यक्रम के तहत प्रत्येक विद्यार्थी से विद्यालय-परिसर में एक पौधा लगाने के साथ-साथ साल भर तक उसकी देखभाल का विनम्र अनुरोध किया।

विद्यार्थी मेरी पौधारोपण की लगन से अभिभूत थे और मैं विद्यार्थियों का सम्बल प्राप्त करके गौरवान्वित था। हम सभी के सहयोग से विद्यालय-परिसर में पौधे लहलहा उठे। हरियाली से विद्यालय प्रांगण खिलखिला उठा। लेकिन कभी-कभी मुझे लगता था कि कुछ व्यक्तियों को मेरा यह वृक्ष प्रेम तथा पौधों के प्रति सम्वेदनशीलता नागवार गुजरती है। फिर भी मैंने इसकी परवाह कभी नहीं की।

छात्र-छात्राएँ किसी-न-किसी रिक्त कालांश, मध्यान्तर, विद्यालय समय से पूर्व अथवा पश्चात् अपने-अपने पौधे को पानी देते और उस स्थान की साफ-सफाई करते। कई बार बिजली कटौती होने पर विद्यालय के बाहर स्थित हेण्डपम्प से पानी लाकर अपने-अपने पौधों में पानी डालते हुए विद्यार्थियों को देख कर गर्वानुभूति होती।

शिक्षार्थी पौधे लगा कर बहुत खुश थे। उनके आनन्द में मैं भी सहभागी था। कभी-कभी विद्यार्थी आपस में ईर्ष्याभाव से एक दूसरे के पौधों को नुकसान भी पहुँचा देते थे। पीड़ित पक्ष मेरे सामने फरियाद लेकर आता और मैं विक्रमादित्य की भांति उनका न्याय करता।

हम सभी ने उन पीपल के दो पौधों की खूब सेवा की और अत्यधिक लाड़-प्यार से उन्हें पाला। आज वो पीपल हमसे भी बड़े होकर आसमान को छूने का प्रयास कर रहे हैं।

इको क्लब की आर्थिक सहायता प्राप्त राशि से हमने पौधों की सिंचाई के लिए ट्यूबवेल से प्लास्टिक की नली जोड़कर जमीन में गाड़ दी। अब विद्यार्थी आसानी से नली लगा कर सप्ताह में दो बार पौधों को पानी देने लगे थे। सुशील डांगी जैसे विद्यार्थी तो मेरी देखा-देखी पौधों की पत्तियां भी हाथ से धोते और अपने-अपने पौधों को छोटे बच्चों की भांति नली से नहलाते थे। इसका फासदा यह हुआ कि विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता की समस्या खत्म हो गई, स्कूल से भागने की प्रवृत्ति बन्द हो गई और कक्षाओं का शोरगुल समाप्त-सा हो गया।

कहते हैं कि संसार में अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के लोग मिलते हैं। अच्छाइयां और बुराइयां साथ-साथ चलती हैं। एक दिन विद्यालय प्रारम्भ होने के समय पीपल के पेड़ तले मुझे सफेद रंग का सूखा घोल दिखाई दिया, क्योंकि रोजाना सुबह-सुबह मुझे पीपल के पौधे में एक बाल्टी पानी देने की आदत थी। मन में प्रिय व्यक्ति के अनिष्ट की आशंका से एक साथ अनेक प्रश्न खड़े हो गये, मन में शंकाओं के ज्वार उठे और मेरा हाथ अचानक उस सूखे सफेद घोल की तरह बढ़ गया। सूखे सफेद घोल की परत को मुंह से चखा तो नमक जैसा स्वाद आ गया। महादेवी वर्मा की गौरा गाय का उसके ही दूध वाले द्वारा गुड़ में सुई खिलाकर किया गया दर्दनाक अंत का स्मरण हुआ।

मेरा अत्यधिक भावुक मन तार-तार हो गया। राजकीय लाचारी से खिन्नता छा गई। मेरी अत्यधिक सक्रियता पेड़-पौधों के प्रति जरूरत से ज्यादा सम्वेदनशीलता और अति उत्साह मेरे ही पुत्र समान पेड़ों के लिए अभिशाप बन गया। खुफिया जानकारी से ज्ञात हुआ कि विद्यालय के ही सहायक कर्मचारी ने मेरे प्रति खीज उतारने के लिए मेरे पुत्र समान् प्रिय पीपल के पेड़ की जड़ों में नमक का घोल डाल दिया। मानव मन की छिपी हुई बर्बरता किस रूप में प्रकट हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता है।

इस घटना से मुझे सदमा पहुँचा और मैं पूरे पखवाड़े अन्यमनस्क-सा व उखड़ा-उखड़ा रहा। कुछ लोगों की तिक्त हँसी को भी चुपचाप सहता रहा। अपनी संतान के बीमार होने का भी मुझे इतना दुःख कभी नहीं हुआ, जितना दुःख उस पीपल के पेड़ को धीरे-धीरे सूखते हुए देख कर हुआ।

हमने पीपल के पेड़ को पुनर्जीवित करने के लिए किसान काल सेन्टर से सुझाव मांगे। उनके द्वारा बताये गये उपाय भी मेरे प्यारे पीपल को सूखने से नहीं बचा पाये। मेरे रोजाना एक बाल्टी पानी देने के बावजूद वो पीपल का पेड़ सूखता चला गया और मैं लाचार हो कर उसे देखता ही रह गया।

मोहग्रसित मन की जिद ने सूखे पीपल के 10 फीट लम्बे ठूंठ रूपी तने को उसी स्थान पर दो माह तक खड़ा रखा। सोचा इस सूखे ठूंठ को देख कर ही वृक्ष-विरोधी मानसिकता में कुछ परिवर्तन आयेगा या उन्हें आत्मग्लानि होगी या थोड़ा बहुत पश्चाताप ही होगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

आखिर एक दिन मैंने भी कुछ बच्चों के साथ मिलकर गुपचुप तरीके से उस पीपल के पेड़ को पुत्र मानते हुए विद्यालय परिसर में ही दफन कर दिया। आज भी यदि उस स्थान की खुदाई की जाए तो उस दो वर्षीय 10 फीट लम्बे पीपल के तने के ठूंठ अवशेष के रूप में दिखाई देंगे।

विद्यार्थी तो उस पीपल के पेड़ को बहुत जल्दी भूल गये, लेकिन मेरे मन-मस्तिष्क में आज भी वो पीपल का पेड़ लहलहा रहा है। समय गुजरता गया। सभी बच्चे अपने-अपने पेड़ों की देखभाल के साथ-साथ परीक्षा-तैयारी में व्यस्त हो गये। परीक्षा-परिणाम प्राप्त करके ग्रीष्मावकाश से पूर्व ही विद्यार्थियों ने विद्यालय आना बंद कर दिया। मेरे मन में ग्रीष्मकाल के प्रचण्ड थपेड़े दस्तक दे रहे थे और मैं इन पौधों की गर्मी से रक्षा हेतु बेचेन था। मेरी एकमात्र चिन्ता थी कि गर्मी की छुट्टियों में इन्हें पानी कौन देगा? चपरासियों के जॉब चार्ट में पौधों को पानी देने की बात नहीं लिखी गई है।

मई मास के प्रारम्भ में छठी आर्थिक

गणना 2012 के प्रशिक्षण कार्यक्रम में मुझे 7 दिन के लिए विद्यालय से दूर रहना पड़ा। हर बार की भांति विद्यालय में लौटते ही मेरी नजर सबसे पहले पेड़-पौधों पर पड़ी। अचानक नजरें 12 फीट लम्बे ढाई वर्षीय पीपल के पौधे पर जा कर ठहर गयी। जिस पीपल के पौधे को मैं सात दिन पूर्व हरा-भरा लहराता हुआ खुशहाल छोड़ गया था, वो पीपल का पौधा अपने पत्तों सहित झुलसा हुआ नजर आ रहा था। ऐसा लग रहा था, मानो तेज आंच में या प्रचण्ड गर्मी से वह झुलस गया था। लेकिन उसके आस-पास के पीपल के पौधे तो हरे भरे लहलहा रहे थे। फिर उन सात दिनों में ऐसी भीषण गर्मी भी नहीं पड़ी कि पेड़-पौधे झुलस जाएँ। मेरे पीपल को क्या हो गया? अचानक पहले वाले पीपल को नमक का घोल डाल कर सुखा देने की घटना मन-मस्तिष्क में कौंध गई।

झुलसे हुए पत्तों वाले पीपल को देख कर मेरा दिमाग खराब हो गया। क्या एक-एक करके मेरे सारे पीपल के पौधे इसी तरह सुखा दिये जायेंगे? अथवा झुलसा दिये जायेंगे? मुझे कुछ भी सूझ नहीं रहा था। मेरे किसी प्रिय की मृत्यु के समाचार ने भी मुझे इतना विचलित नहीं किया, जितना विचलित मैं उस झुलसे हुए पीपल को देख कर हो रहा था। मुझे अपनी क्लीवता और नपुंसकत्व पर आत्मग्लानि हो रही थी कि मैंने दस महीने पूर्व उस पीपल की हत्या करने वाले को सजा क्यों नहीं दिलाई?

बड़ी मुश्किल से स्वयं को काबू करते हुए पूरे शिष्टाचार के साथ संस्था के सबसे बुजुर्ग शिक्षक व प्रधानाचार्य को उस झुलसे हुए पीपल के पास ले गया। सेवानिवृत्ति की ओर अग्रसर बुजुर्ग शिक्षक ने सौगन्ध लेकर कहा कि इस पीपल को झुलसाने में मेरा कोई हाथ नहीं है। किन्तु हमेशा मुझे शुभ+आशीष देने वाले प्रधानाचार्य ने झुलसे पीपल के तने को छीलते हुए बताया कि यह तो अन्दर से हरा है। मुझे लगा किसी ने मेरी चमड़ी उतार कर रख दी है। प्रधानाचार्यजी कहे जा रहे थे कि ''हमारी कोशिश अधिक से अधिक पेड़ लगाने की होनी चाहिए। यदि कारणवश एक पेड़ सूख जाए तो चार नए लगाने का संकल्प लेना चाहिए। एक पेड़ सूख जाएगा तो क्या हो जायेगा? विद्यालय में बहुत सारे पेड़ लग रहे हैं।''

अपने द्वारा लगाये गये पौधों के प्रति ऐसी निष्ठुरता देख कर दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया। सांसें थम-सी गई। मन की गति मंद हो गई और मस्तिष्क विचार-शून्य हो गया। आँखों के आगे अंधेरा-सा छा गया।

शासकीय अधिकारी के लिए वह पीपल का एक वृक्ष मात्र था, जबकि वह मेरे लिए दस पुत्र समान था। क्या कोई अपने पुत्रों के वियोग को इतनी आसानी से सहन कर सकता है? मैं उस वज्राघात से टूट-सा गया था। त्रेतायुग के दशरथ तो पुत्र-वियोग में मृत्यु को प्राप्त हो गये थे। लेकिन मैंने चाह कर भी द्वापरयुगीन धृतराष्ट्र की भांति पुत्र-मोह में महाभारत नहीं होने दिया और इस पीपल के साथ दुराचार व अपराध करने वाले की शिकायत ''हरित राजस्थान'' अभियान के प्रभारी जिला कलेक्टर तथा उपखण्ड अधिकारी से नहीं की। कारण यह था उच्च अधिकारी की दृष्टि में वह एक पीपल का वृक्ष मात्र था, भले ही मैं उसे दस पुत्रों से अधिक स्नेह देता था।

रह रह कर प्रधानाचार्य के शब्द मेरे हृदय को बाण की भांति बेध रहे थे कि ''एक पेड़ के सूखने से क्या फर्क पड़ता है?'' गुस्सैल मन एक निष्ठुर, निर्दयी, असंवेदनशील व हृदयहीन अधिकारी को कुछ कहने के लिए बाध्य कर रहा था। आत्मा से शब्द निकल रहे थे कि ''गीता में श्रीकृष्ण ने वृक्षों में श्रेष्ठ पीपल अर्थात् अश्वत्थ को अपना ही स्वरूप बताया। सनातन धर्म में पीपल को ब्रह्मा-विष्णु-महेश का वास-स्थान कहा गया है। गौतम बुद्ध तथा महावीर से भी पहले कई ऋषि-मुनियों ने पीपल के पेड़ के नीचे ही आत्म ज्ञान और मोक्ष प्राप्त किया था।''

मस्तिष्क ने इशारा किया कि यह धर्म-निरपेक्षता का युग है और धर्म का उदाहरण देकर अपना उपहास नहीं कराना चाहिए। आज का मनुष्य विज्ञान पर ही विश्वास करता है। अतः वीतरागी स्वभाव धारण करके मैंने प्रधानाचार्य जी से विनम्र शब्दों में कहा कि ''एक पेड़ के सूख जाने से बहुत फर्क पड़ता है।'' कलकत्ता विश्व विद्यालय के कृषि वैज्ञानिक डॉ. टी.एम. दास के अनुसार ''एक पेड़ अपने सम्पूर्ण जीवन (लगभग पचास वर्ष की आयु) में निम्नांकित रूप से आर्थिक लाभ देता है-

क्र.स.	घटक	आर्थिक लाभ
1.	आक्सीजन	2.50 लाख रु.
2.	जल का चक्रीकरण	3.00 लाख रु.
3.	पक्षियों हेतु आवास	2.50 लाख रु.
4.	वायु प्रदूषण नियन्त्रण	5.00 लाख रु.
5.	भू क्षरण रोकथाम	2.50 लाख रु.
6.	खाद व प्रोटीन	0.20 लाख रु.
	कुल योग	15.70 लाख रु.

उपर्युक्त सारणीगत लाभों में वृक्षों द्वारा पृथ्वी (नगर-गांव) की सुन्दरता, सजावट, तापमान में कमी और सबसे बढ़कर वृक्ष की छाया में मिलने वाले सुकून और शांति की कीमत को नहीं जोड़ा गया है। क्या ऐसे पेड़ों के सूखने से कुछ नहीं होगा?

''ऐसे लाभदायक व अमूल्य वृक्षों को मार कर क्या हम राष्ट्र और जन्मभूमि के प्रति गद्दारी नहीं कर रहे हैं।'' प्रिंसीपल सर अपने सहयोगियों के साथ शैक्षिक सत्र के अन्तिम कार्य दिवस की अल्पाहार पार्टी में मग्न हो गये और मैं पूरे समय पीपल के पौधे की जड़ों में रुक-रुक कर पानी की बाल्टियाँ डालता रहा। मेरा मन रो-रो कर कह रहा था कि ''एक पेड़ के सूख जाने से बहुत फर्क पड़ता है क्योंकि वह किसी का पुत्र, किसी का मित्र और किसी का आश्रयदाता होता है।

विद्यालय ग्रीष्मावकाश के बाद पिछले माह ही खुले है। वर्षा ऋतु है। राज्य के प्रायः सभी भागों में अच्छी बरसात हो रही है। ऐसे में हम सभी का यह उत्तरदायित्व बनता है कि हम हमारे अधिकतम साधनों का प्रयोग करते हुए अधिकाधिक वृक्ष लगाकर धरती माँ का श्रृंगार करें।

वृक्षों से मिलने वाले लाभों का वर्णन ऊपर की टेबल में स्पष्ट है। हमें पेड़ों का महत्व समझ कर उनसे मित्रता करनी चाहिए। वृक्षों से मिलने वाले प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभों को शब्दों में व्यक्त किया ही नहीं जा सकता। अतः इन अमूल्य वृक्षों को लगाने, उनकी सुरक्षा करने और उनके प्रति आभार प्रकट करते हुए वांछित लाभ लेते रहना चाहिए। आखिर यही तो चाहते है वृक्ष। वे हमसे कुछ पाने की अपेक्षा किए बिना सब कुछ देने के लिए तत्पर रहते हैं।

-40, महेश नगर, निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़)
मो. 9468661278

हमारी सभ्यता-हमारी संस्कृति

'वैदिक संस्कृति' विश्व की पहली संस्कृति

□ मोहनलाल सूत्रधार

संस्कार संस्कृति की जननी है जिनमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद समाहित हैं। ये भारतीय संस्कृति के मूलाधार हैं। वेद परमात्मा की दिव्यवाणी है व हमारे प्राण और जीवन सर्वस्व हैं। वेदों के गीत ऋषि-मुनियों ने गाये हैं। किन्तु आधुनिक युग में मानव वेदों के स्वाध्याय से दूर हैं। वैदिक संस्कृति 'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा'-वेद संसार की प्रथम संस्कृति है और सारे संसार द्वारा वरणीय संस्कृति है।

वेद चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ये क्रमशः ज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड व विज्ञानकाण्ड हैं। ऋग्वेद मस्तिष्क का वेद है तो यजुर्वेद हाथों का काण्ड है। सामवेद जीवन का चरम और परम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति है। आकार की दृष्टि से सामवेद छोटा है, जिसमें 1875 मंत्र हैं। गौरव व महत्व की दृष्टि से यह किसी भी वेद से कम नहीं है जिसमें संकेत रूप में योग के सभी अंगों-यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि सभी का विवेचन है। हम परमात्मा की उपासना क्यों करें व कहां करें आदि बातों का समाधान हमें वेद से प्राप्त होता हैं। हमारे अपने प्रति क्या कर्तव्य हैं। दूसरों के प्रति (परिवार, समाज व राष्ट्र और विश्व के प्रति क्या कर्तव्य हैं?) हमारा ईश्वर के साथ क्या संबंध है? श्री कृष्णजी सामवेद पर मोहित थे इसलिये गीता में भी कहा है-वेदानां सामवेदोऽस्मि/गीता 10, 22 यानी वेदों में मैं सामवेद हूँ।

अथर्ववेद : इसे बृह्मदेव भी कहते हैं। इसमें 20 काण्ड, 731 सूक्त एवं 5977 मंत्र हैं। अथर्ववेद में गृहस्थ के सौहार्द्र का वर्णन 3/30 में किया है। इस प्रकार का एक सूक्त 7/62 भी है। इन सूक्तों में वर्णित शिक्षाओं पर आचरण किया जाए तो निश्चय ही घर स्वर्ग बन जाए। 14वां काण्ड तो सारा ही दाम्पत्य सूक्त है, जिसमें कि मान-मर्यादाओं का उत्तम विवेचन है।

12 वें काण्ड का प्रथम सूक्त संसार का प्रथम राष्ट्रगीत है। जिसमें एक आदर्श राष्ट्र और उसकी रक्षा के उपायों का सर्वांगीण चित्रण हुआ है। वेद तो सारे संसार को एक सार्वभौम राज्य मानता है और भूमिमाता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की प्रेरणा दी है।

पाश्चात्यों के अनुसार अथर्ववेद जादू-टोने का वेद है।

Eating little and speaking little can never do harm.

चारों वेद चार ऋषियों के हृदय में एक साथ प्रकट हुए। ऋषियों ने वेदों की रचना नहीं की, यह ज्ञान तो परमात्मा ने अपनी करुणा और कृपा से इनके हृदय में ऊंडेल दिया था। ऋषि मंत्रों के निर्माता नहीं थे। वे केवल मंत्रों के अर्थों में साक्षात्कर्ता थे।

मनु ने कहा है-'वेदश्चक्षुः सनातनम्' वेद मानव मात्र के लिये सनातन चक्षु हैं।

भागवत पुराण में कहा है-'वेदो नारायणः साक्षात्' वेद साक्षात भगवान ही हैं। गुरुडपुराण में कहा है-'वेदाच्छास्त्र परं नास्ति' वेद से बढ़कर संसार में कोई शास्त्र नहीं। तुलसीदास ने लिखा है-'बन्दउ चारिउ वेद' मैं चारों वेदों की वन्दना करता हूँ।

वेद मानव मात्र के लिए हैं। वेद दिव्य सृष्टि के आरम्भ/आदि में 'अग्नि' आदि चार ऋषियों को प्रदत्त दिव्य ज्ञान हैं। वेद संस्कृति भारतीयों द्वारा नहीं मानव मात्र द्वारा और सम्पूर्ण विश्व द्वारा वरणीय संस्कृति है। यह प्रभु प्रदत्त ज्ञान है। वेद अपने आत्म उत्थान, पारिवारिक कल्याण, समाज निर्माण व विश्वशान्ति के लिये वेद को स्वाध्याय परम कल्याण कारक है।

''वेद सब सत्याविधाओं के ग्रंथ हैं। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है''।

-महर्षि दयानन्द सरस्वती

1. वेद के अर्थ अनेक क्रियाओं में होते हैं। 2. प्रमुख प्रक्रियाएं हैं-पारमार्थिक और व्यावहारिक, वेद भाष्य नहीं-विस्तृत व्याख्या है। प्रभु ने वेद ज्ञान सृष्टि के आदि में दिया है जब राजा व ऋषि-मुनि नहीं थे अतः वेद इतिहास नहीं हैं। वेदों की संख्या 20वीं शताब्दी में लिखी गई है। व्याख्या में कहीं उपनिषद के प्रमाण नहीं हैं। वेद में गीता से अपनी व्याख्या को तो कहीं महापुरुषों के वचनों से सृजित हैं।

'निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति'- गीता

देव सब क्रियाओं के प्रभु-अर्पण करके कर्तव्य के अहंकार से बचे रहते हैं। इस प्रकार निर्मम व निरहंकार होकर ही प्रभु को प्राप्त करते व शान्त जीवन वाले होते हैं। हमारा जीवन यज्ञ मय हो हम उत्तम कर्म करें परन्तु कर्म का हम जरा सा भी गर्व नहीं करें। उत्तमता से कर्म करें। सत्य व्याख्या से सृजित भाव हो। हम दिव्यगुणों से युक्त हों। देव भी इसे नकार नहीं सकते। प्रभु दर्शन के लिये उत्तम गुणों को पोषण करने वाले (पुष्कर) हृदय व विश्व के ज्ञान से परिपूर्ण मस्तिष्क दोनों ही में आवश्यकता है।

सर्वश्रेष्ठ कर्म है- यज्ञ यजुर्वेद में यज्ञों से अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेधपर्यन्त-यभी यज्ञों का वर्णन है। परोपकार के सभी कर्म भी यज्ञ की परिधि में आते हैं। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में तो कला-कौशल, उद्योग धन्धे भी यज्ञ हैं। यज्ञ शब्द का अर्थ है देव पूजा, संगतीकरण और दान देवों के देव महादेव (शिवलिंग नहीं स्त्रियों को तो इसको देखना भी पाप हैं। और इस पर चढ़ाये गये पदार्थों के खाने का भी निषेध है।) परम पिता की उपासना बड़े माता-पिता आचार्यों का सम्मान करना यज्ञ है। वेद में कहीं भी यज्ञ में पशुओं की बलि देने का विधान नहीं है।

यज्ञों के अतिरिक्त भी अनेक प्रकार का ज्ञान और विज्ञान इन वेदों में भरा हुआ है। यजुर्वेद के 21, 32, 36 व 40 वॉ अध्याय बेजोड़ है। 40 वॉ अध्याय तो इशोपनिषद नाम से प्रसिद्ध है जिस पर सारा संसार मोहित है। यही हमारी वैदिक विश्व की पहली संस्कृति है। जिसे आप स्वाध्याय से सृजित कर सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने विदेशों व अपने देश में भी विश्व को जगाने अपनी व्याख्या से सत्यनिष्ठ उद्घोष किया व भारतीय संस्कृति को वेद, उपनिषद, गीता, रामायण व महाभारत से विश्व की पहली संस्कृति आध्यात्मिकता का चिन्तन दिया।

-से.नि.प्रा. धीलूड़-314031 (डूंगरपुर)
मो. 9460581338

अनुकरणीय

हौंसलों की उड़ान

❑ उषा टेलर

बात गत् सत्र की है कुरज गाँव के पास कालाभाणा ढाणी की रहने वाली छात्रा मीना बैरवा कक्षा XI में अध्ययनरत थी। अक्सर वह छात्रा विद्यालय में देर से आती थी। विद्यालय पोशाक की स्थिति भी दयनीय थी। बैग के नाम पर प्लास्टिक की थैली जिसमें कुछ किताबें एवं कॉपिया रखी रहती थी। अक्सर विद्यालय में देरी से पहुँचने पर जब उसे पूछा जाता तो वह यह कहती की मेरी माँ बीमार रहती है घर का सारा काम निबटा कर विद्यालय आती हूँ। इसलिये देर हो जाती है। पिताजी मजदूरी करते है। उक्त छात्रा पढ़ने में भी कमजोर ही थी। ठीक से हिन्दी भी पढ़ना नहीं आती थी। पिताजी को विद्यालय में बुलाने पर भी नहीं आते थे। एक दिन मैंने स्वयं उन्हें मोबाइल पर फोन करके विद्यालय बुलाया। पसीने में लथपथ पिताजी ने जब मेरे कक्ष में प्रवेश किया तो मैंने उन्हें कुर्सी पर बिठाया पानी पिलवाया। मैंने उनसे उनकी पारिवारिक स्थिति, आर्थिक स्थिति के बारें में जानकारी ली। उन्होंने पूरी कहानी मुझे सुनाई और सारा सपना मुझे सौंप दिया। उनका मजदूरी ही एक मात्र जरिया थी। उसी में तीन बच्चों का खर्चा, पढ़ाई एवं बीमार पत्नी का इलाज करना होता था। खुद अशिक्षित होने के बावजूद भी उन्होंने यह तय किया की उनकी बेटी पढ़ेगी, मजदूरी नहीं करेगी। उन्हें लगा की सिर्फ पढ़ाई ही जिन्दगी को बेहतर बनाने की राह बन सकती है। और कोई चारा नहीं है। मेरे प्यार, स्नेह की वजह से अब वह छात्रा घर की किसी भी प्रकार की समस्या चाहे वह आर्थिक हो, पारिवारिक हो, शारीरिक हो सभी प्रकार की समस्या से मुझे अवगत कराती। मैं स्वयं एवं मेरे विद्यालय के अन्य स्टाफ साथियों की सहायता से भामाशाहों की मदद से उसकी हर समस्या का समाधान करती। लगन और जुनून यही एक चीज है जो सारी मुश्किलों से भी आपकों निकाल कर सबसे आगे ले जाती है। छात्रा की प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कराने में कामयाब रही। वर्तमान में वह छात्रा 11वीं कक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर 12वीं में अध्ययनरत है। हाँलाकि मेरे विद्यालय में 12वीं कक्षा नहीं है। आज भी वह छात्रा मुझसे निर्देशन प्राप्त करने के लिये विद्यालय आती है हम सभी उसे प्रेरित करते है उसकी समस्या का समाधान करते है। मुझे लगता है कि एक बार कोई ठान ले उसे अपने मौजूदा हालातों से बाहर आना है तो फिर कुदरत भी उसका साथ देती है। **''मंजिल उन्ही को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है, परों से कुछ नहीं होता, हौंसलों से उड़ान होती है।''**

-प्रधानाध्यापिका
रा.बा.मा.वि., कुरज (राजसमन्द)
मो. 9414623619

पंचांग : माह अगस्त, 2013

अगस्त, 2013					
रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	31

● कार्य दिवस 23, रविवार 04, अवकाश 04, उत्सव 03 ● 1 अगस्त से–विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जांच एवं अभिलेख संधारण, सामुदायिक गुखियाओं की एक दिवसीय कार्यशाला ब्लॉक स्तर पर आयोजन। **6 अगस्त (मंगलवार)**– बालिका शिक्षा (नवाचार) प्रारंभिक शिक्षा के अन्तर्गत अध्यापिका मंच की प्रथम बैठक का आयोजन। **6 से10 अगस्त**–प्रत्येक विद्यालय में बाल संसद का गठन। **9 अगस्त**–ईदुलफितर (अवकाश चन्द्रदर्शनानुसार) **12 अगस्त**–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की प्रतियोगिता के लिए जिला स्तर पर पूर्व तैयारी। **13 अगस्त**–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की प्रतियोगिता के लिए जिला स्तर पर आयोजन। **15 अगस्त**–स्वतन्त्रता दिवस (अवकाश-उत्सव अनिवार्य) **16–17 अगस्त**–जिला स्तरीय नेहरु हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन (15 वर्ष छात्र), माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता के लिए तहसील स्तर पर पूर्व तैयारी। **17 अगस्त**–मीना मंच के अन्तर्गत कहानी 'बेटियों की देखरेख' वाचन एवं समूह चर्चा। **17 अगस्त**–इस दिनांक से पूर्व प्रथम/द्वितीय/तृतीय समूह (माध्यमिक एवं प्रारम्भिक) कक्षावार, दलवार खेलकूद प्रतियोगिता एवं नेहरू हॉकी का आयोजन (15 वर्ष छात्र) **20 अगस्त**–रक्षा बन्धन (अवकाश) संस्कृत दिवस (उत्सव) **22–24 अगस्त**–प्रथम परख (सभी कक्षाओं के लिए) **24 अगस्त**–इस दिनांक से पूर्व प्रथम/द्वितीय/तृतीय समूह (प्रारम्भिक) कक्षावार, दलवार खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन। मीना मंच के अन्तर्गत 'मीना संचलन समिति की प्रथम बैठक। **26–31 अगस्त**–बालिका शिक्षा (नवाचारी) विद्यालय स्तर पर ''आओ देखो सीखो'' प्रतियोगिता का आयोजन। **26 अगस्त**–यूडा इस हेतु संकुल/ब्लॉकवार विद्यालयों की सूची तैयार करना (प्रारम्भिक) **26–27 अगस्त**–राज्य स्तरीय नेहरु हॉकी प्रतियोगिता, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यार्थियों की तहसील स्तर पर सृजनात्मक प्रतियोगिता का आयोजन। **28 अगस्त**–जन्माष्टमी (अवकाश-उत्सव) **29 अगस्त**–ध्यानचन्द जयन्ती पर विद्यालयों द्वारा खेलकूद गतिविधियों का आयोजन करना। **31 अगस्त**–श्रेष्ठ राजकीय विद्यालय पुरस्कार-2013 के लिए राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय द्वारा जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) को आवेदन करना। अभिभावकों एवं शिक्षकों की संयुक्त बैठक आयोजित कर प्रथम परख के प्रगति-पत्र विद्यार्थियों/अभिभावकों को वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार विमर्श। **नोट : 1.** 5-6 अगस्त को 2 दिवसीय प्रथम संस्था प्रधान वाकपीठ का आयोजन (प्राथमिक/उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय) **2.** रमसा द्वारा विद्यालय प्रबन्धक समिति के सदस्यों का प्रशिक्षण। **प्रा. शिक्षा–1.** इंडेक्शन, समावेशित शिक्षा व कम्प्यूटर प्रशिक्षण। **2.** केजीबीवी/मेवात बालिका आवासीय विद्यालयों में शैक्षिक भ्रमण 22 अगस्त से 31 अगस्त 2013 के मध्य आयोजित करना। **3.** अगस्त अन्तिम सप्ताह से माह सितम्बर तक डी-वर्मिंग हेतु ब्लॉक स्तरीय प्रशिक्षण का आयोजन।

खेल-खिलाड़ी

खेलों में चोट से कैसे बचें

❒ राजेन्द्र सिंह उदावत

खेल व शारीरिक क्रियाशीलता में बच्चों की नैसर्गिक रुचि होती है। खेल एक आनन्द देने वाला कार्य है। खेलों में न केवल बच्चे बल्कि हर आयु वर्ग के व्यक्ति की रुचि होती है। खेलों में चोटे लगना भी स्वाभाविक है कुछ चोटें सामान्य होती हैं लेकिन कई बार खेलते समय गंभीर चोटें लग जाती है जिसका दुष्परिणाम खिलाड़ी को लम्बे समय तक भुगतना पड़ता है जिससे खेल प्रदर्शन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है लेकिन खेल मैदान पर कुछ बातों को ध्यान रख गम्भीर चोटों व दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

1. शरीर गरमाना (वार्म-अप) :-

विभिन्न प्रकार की चोटों से बचने के लिए शरीर गरमाना सबसे महत्वपूर्ण कारक है। खेल क्रियाएँ करने से पूर्व शरीर को गरमाना अति आवश्यक है। इसके अन्तर्गत प्रारम्भ में धीमी गति से दौड़ना व जोगिंग करना, इसके बाद क्रमिक रूप से गति बढ़ाई जाती है। शरीर के अंग-प्रत्यंग व माँसपेशियों को गर्माया जाता है। इसमें गर्दन से लेकर पैर के टखने तक के सभी अंगों का बारी-बारी से विभिन्न स्ट्रेचिंग एक्साइज की जाती है। जिससे माँसपेशियाँ मुख्य खेल के लिए उच्च क्षमता के साथ क्रियाशील हो जाती है। वार्म-अप में शरीर को मनोवैज्ञानिक व फिजियोलोजिकली रूप से तैयार किया जाता है।

शरीर गरमाने के सामान्यतः दो प्रकार हैं।

(अ) सामान्य गरमाना : जिसमें पूरे शरीर का व्यायाम किया जाता है। धीमी गति से तेज गति व सामान्य व्यायाम से जटिल व्यायाम किया जाता है।

(ब) विशिष्ट गरमाना : इसके अन्दर जो माँसपेशियां मुख्य खेल क्रियाओं में अधिक आवश्यक है उन्हें क्रियाशील की जाती हैं। माँसपेशियों तथा शरीर को सीधे प्रतियोगिता के लिए तैयार किया जाता है।

शरीर गरमाने से शरीर में लचीलापन बढ़ता है। यह लचीलापन माँसपेशियों व लिगामेन्ट्स को चोट से बचाता है। माँसपेशियों की शक्ति को बढ़ता है शरीर पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालकर खेलने के लिए तैयार करता है। शरीर का तापमान बढ़ता है ताकि उच्च स्तरीय खेल क्षमता का प्रदर्शन किया जा सके।

2. कूल डाउन (शरीर को धीरे-धीरे ठण्डा करना) :

खिलाड़ी खेल में पूर्ण शक्ति व गति के साथ खेलता है इसके बाद शरीर को एकदम निष्क्रिय नहीं करना चाहिए। बल्कि धीमी गति से हल्की एक्साइज करते हुए शरीर को सामान्य अवस्था में लाना आवश्यक है। ताकि उच्च गति की खेल क्रियाओं के कारण मांसपेशियों में जमा लैक्टिक एसिड (जो माँसपेशियों की गतिशीलता को कम कर देता है) को अन्य रसायनों में परिवर्तित कर उनको शरीर से बाहर करता है। शरीर को चोट से बचाने के लिए शरीर गरमाने की तरह ही शरीर का कूल डाऊन करना भी अतिआवश्यक है। इसमें शरीर को ढीला छोड़कर हाथों को आगे, नीचे, ऊपर, साइड में उठाए जाते हैं। जोगिंग करें तथा हल्के व्यायाम करें। सामान्यतः देखा गया है कि कूलडाउन को खिलाड़ी महत्व नहीं देते हैं जिसका परिणाम शरीर के चोट व थकान के रूप में होता है। अतः शरीर गरमाना व कूलडाउन दोनों ही अति महत्वपूर्ण है तथा इनसे चोटों से बचा जा सकता।

3. प्रामाणिक एवं गुणवत्तायुक्त खेल उपकरणों का प्रयोग :

खेलों में प्रामाणिक एवं गुणवत्तायुक्त खेल उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए। निम्न क्वालिटी के खेल उपकरणों से चोट लगने की सम्भावना रहती है। निम्न घटिया स्तर के खेल उपकरणों की वजह से खिलाड़ी की जान तक जा सकती है इसलिए गुणवत्तायुक्त उच्च प्रामाणिक खेल उपकरणों का प्रयोग करके चोटों से बचा जा सकता है।

4. सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग :

खेल में आवश्यक सुरक्षा उपकरणों का उपयोग करना चाहिए। जैसे हॉकी में पैड, ग्लब्स, फुटबॉल में फुटबॉल शूज, क्रिकेट में हेलमेट, ग्लब्स, लेग गार्ड्स आदि। सुरक्षा उपकरणों के प्रयोग से चोट से बचा जा सकता है। खेल में खिलाड़ी सुरक्षा उपकरणों का प्रयोग अनिवार्यतः करना चाहिए।

5. खेल नियमों की जानकारी :

खिलाड़ी को खेल के नियमों की जानकारी होनी चाहिए तथा खेल नियमों का कठोरता व अनिवार्यतः से पालन करना चाहिए। नियमों की जानकारी के अभाव में चोट लगने की सम्भावना रहती है।

6. खेल भावना :

यह अतिआवश्यक है कि खेल को खेलते समय खिलाड़ी में खेल भावना होनी चाहिए। हार जीत से अधिक खेल भावना को महत्व दिया जाना चाहिए। खेल में ईर्ष्या का कोई स्थान नहीं होता है। खेल भावना से खेलने पर चोट लगने की सम्भावना कम रहती है।

7. अन्य कारक :

इसके अलावा मैदान समतल, साफ-सुथरा होना चाहिए। उसमें कंकड़ या कांच आदि बिखरे हुए नहीं होने चाहिए। मैदान में आम रास्ता कदापि नहीं हो। मैदान पर खड्डे या उबड़ खाबड़ होने पर चोट लग सकती है। अतः चोट से बचने के लिए खेल मैदान खेलने के लिए उपयुक्त होना चाहिए।

खेल मैदान पर खिलाड़ी अनुशासन में रहें। निर्णायकों के निर्णय का पालन करें। खेल के अनुरूप पोशाक पहन कर खेलें। ताकि खेल खेलते समय चोट से बचा जा सके। खेल के दौरान खिलाड़ी पूर्ण एकाग्रता व सावधानी से खेलें। खेलते समय अनावश्यक वार्तालाप नहीं करें। एथलेटिक्स में थ्रोवीगं (फैंक) इवेन्ट्स में कई बार असावधानी के कारण अन्य खिलाड़ी या निर्णायक चोटग्रस्त हो जाते हैं। अतः उपर्युक्त कारकों को ध्यान में रख विभिन्न प्रकार की चोटों से बचा जा सकता है।

-शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि., बेटवासियां (जोधपुर)

राष्ट्रीय खेल दिवस

ऊपर चांद तो नीचे मेजर ध्यानचंद

❑ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

सन् 1928 से 1936 के दरमियान हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की अजूबाई हॉकी उपलब्धियों को देखकर लोगों की जुबां पर यही लफ्ज हुआ करते थे-'ऊपर चांद तो नीचे ध्यानचंद'। उनका कहना सही भी था क्योंकि 'चांद' व 'चंद' दोनों समानार्थी शब्द हैं। ध्यानचंद उस समय पृथ्वी पर हॉकी खेल में आकाश के चांद जैसी चांदनी बिखेर रहे थे। मेजर ध्यानचंद ने हमेशा इस बात को ध्यान में रखा-'विजेता के पास कामयाबी के सपने होते हैं। पराजित के पास सिर्फ बातें होती हैं।' ध्यानचंद के सपने भी उसके सपनों को सोने नहीं देते थे इसलिए विश्व में अभी तक हॉकी खेल में उनका कोई सानी नहीं हुआ। उनकी यह कामयाबी कोई आकस्मिक नहीं थी। खेल के प्रति असीम लगन व मेहनत ने ही उन्हें इस ऊँचाई पर पहुंचाया जिससे 1935 में आस्ट्रेलिया के खिलाफ एडीलेड नगर में भारत की ओर से खेल रहे मेजर ध्यानचंद के खेल को देखकर **विख्यात बल्लेबाज डान ब्रेडमेन को यह कहने के लिए विवश कर डाला-'आप तो क्रिकेट के रनों की तरह गोल बनाते हैं।' एक महान खिलाड़ी द्वारा दूसरे महान खिलाड़ी की भला इससे बड़ी प्रशंसा और क्या हो सकती है।**

मेजर ध्यानचंद का जन्म प्रयाग (इलाहाबाद) में 29 अगस्त, 1905 के दिन हुआ था। उनका परिवार पुश्तैनी राजपूत था तथा तीन पीढ़ी पहले उनके पूर्वज राजस्थान के बाड़मेर जिले से जाकर उत्तर प्रदेश में बस गए थे। उनके पिता सेना में सूबेदार थे। पिता के ही पद चिह्नों पर चलकर सोलह साल के होते ही सेना में भर्ती हो गए। वहां उनका प्रिय खेल कुश्ती था। कुश्ती में उनकी फुर्ती व दांव-पेच को देखकर सूबेदार मेजर बाले तिवारी ने उन्हें हॉकी खेलने का सुझाव दिया। फिर स्टिक व गेंद का संगम उनके जीवन में ऐसा बना जिसका प्यार मृत्यु के आखिरी क्षणों तक भी बना रहा।

हॉकी ने सन् 1928 में पहली बार आधिकारिक रूप से ओलिंपिक में भाग लेना शुरू किया था और इसके साथ ही शुरुआत हुई भारतीय हॉकी के स्वर्णिम युग की। भारत ने यद्यपि 1900, 1920 व 1924 के ओलिंपिक में भाग लिया था, लेकिन तब भारतीय ओलिंपिक संघ की स्थापना नहीं हुई थी। इसकी स्थापना 1927 में हुई। भारत ने ओलिंपिक खेलों में सबसे पहले 1928 के एम्सटर्डम खेलों में भाग लिया। इस खेल में हॉकी का दल भी था और मेजर ध्यानचंद भी इसमें सम्मिलित थे। भारतीय हॉकी टीम ने बड़ी शान से पहली बार ओलिंपिक में हॉकी का स्वर्ण पदक जीता। भारत के खिलाड़ियों ने 29 गोल किए, जिसमें अकेले ध्यानचंद ने 15 गोल अपने खाते में डाले। मेजर ध्यानचंद ने 1928, 1932 व 1936 के तीन ओलिंपिक में 12 मैच खेले और 38 गोल दागे। 1936 के बर्लिन ओलिंपिक में वे भारतीय दल के कप्तान थे। इस दौरान जर्मनी में एडोल्फ हिटलर का शासन था, इसलिए इन खेलों पर नाजी प्रभाव का होना लाजमी था। हॉकी में भाग लेने गई भारतीय टीम भी इससे अछूती नहीं रही। फाइनल में जब भारत मेजबान टीम जर्मनी के खिलाफ जीत के नजदीक पहुंच रहा था तब जर्मन गोलकीपर ध्यानचंद से टकरा गए, जिससे मेजर ध्यानचंद का एक दांत टूट गया। हॉकी के जादूगर ने हिम्मत नहीं हारी। उपचार के तुरंत बाद ही मैदान में लौट आए। भारत ने यह खेल 8-1 के अंतर से जीता। इस प्रदर्शन से हिटलर इतने खुश हुए कि उन्होंने जर्मन सेना में ध्यानचंद को मार्शल पद का ऑफर दे डाला, लेकिन ध्यानचंद ने सहजभाव से इसे ठुकरा दिया। मैच के अगले दिन हिटलर ने फिर ध्यानचंद को बुलाया और पूछा-'जर्मनी की ओर से खेलने के बदले में क्या लोगे?' उन्होंने कहा, 'जी नहीं। भारत मेरा भारत है। **उसकी अस्मिता के साथ मैं कोई सौदा नहीं कर सकता।' इस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था, पर भारतीय खिलाड़ी अपनी भावना को रोक नहीं पाए। ड्रेसिंगरूम में ध्यानचंद ने तिरंगा फहराया और अन्य खिलाड़ियों के साथ वंदेमातरम् गाया जबकि उस समय ब्रिटेन का राष्ट्रगान गाना जरूरी था।**

हॉकी के वर्चस्व का सिलसिला मेजर ध्यानचंद ने 1928 से शुरू किया वह लगातार 1956 तक के ओलिंपिक खेलों में चला। सन् 1940 व 1944 में द्वितीय महायुद्ध की वजह से ओलिंपिक नहीं हो सके। छः बार लगातार स्वर्णपद की कामयाबी के पश्चात् सन् 1964 व 1980 के ओलिंपिक खेलों में दोबारा स्वर्ण पदक जीतकर 8 बार विजेता का सेहरा भारत ने बांध लिया है पर यही टीम जब बाद के वर्षों में कभी ओलिंपिक क्वालीफाई नहीं कर पाती है, तब दुख व आश्चर्य होता है।

दरअसल आज हमारी हॉकी में वह दम-खम नहीं रहा जिस पर हम ताल ठोकते थे। राष्ट्रवासियों को इसका गम है। हिटलर जैसे व्यक्तियों का ध्यान अपनी ओर खींच लेने वाला हमारा जादूई खेल हॉकी इतना पीछे क्यों चला गया, पर विचार व कुछ करने का समय आ गया है। हॉकी की बुनियाद हमारे देश में सागर की तरह गहरी है। सभी खेलों का अपना-अपना महत्व होता है पर जो खेल राष्ट्र की धड़कन से जुड़ा हो उसकी अवहेलना कर अन्य खेल को अत्यधिक तरजीह देना उसको गर्त में धकेलने जैसा ही कार्य है। तीन बार लगातार ओलिंपिक में स्वर्ण पदक दिलवाने वाले मेजर ध्यानचंद की आत्मा भी आज कराह रही होगी।

भारत को अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर किसी खेल में इतनी बड़ी पहचान दिलवाने वाले मेजर ध्यानचंद आखिर 3 दिसम्बर, 1979 को हमसे जुदा हो गए। आदमी चला जाता है पर उसका जादू व हुनर हमेशा जिंदा रहता है। मेजर साहब तो चले गए पर उनके हुनर को योग्य हॉकी के खिलाड़ी तलाश कर विस्थापित करने का कार्य तो कम से कम हम कर ही सकते हैं। इससे हमारी हॉकी के पुराने वैभव के लौटने की संभावना प्रबल हो सकेगी तथा मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाने की संकल्पना की सार्थकता की गुंजाइश भी हमेशा बनी रहेगी।

-व.अ., राजकीय पाठशाला,
हेतमसर (वाया-नूंआ), जिला-झुंझुनूं
मो. 09460841575

विज्ञान शिक्षण

एकीकृत विज्ञान प्रयोगशाला का प्रभावी संचालन

❑ डॉ. कल्पना शर्मा

विज्ञान गत्यात्मक और निरन्तर परिवर्धित ज्ञान का भण्डार है जो वास्तविक अनुभव, प्रयोगों के प्रेक्षणों द्वारा ज्ञात क्रमबद्ध तथ्यों पर आधारित है। बच्चे नैसर्गिक रूप से जिज्ञासु होते हैं तथा सीखने की क्षमता रखते हैं। वे स्वभाव से ही सीखने के लिये प्रेरित रहते हैं। वे अपनी प्रकृति, वस्तुओं तथा लोगों से परस्पर अंतः क्रिया द्वारा सीखते हैं। वे अपने आसपास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े रहते हैं। वे खोजबीन करते हैं, प्रतिक्रिया तथा परिकल्पना करते हैं, वस्तुओं के साथ कार्य करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं।

एक प्राचीन चीनी कहावत है, **''मैंने पढ़ा–मैं भूल गया, मैंने सुना–मुझे कुछ याद रहा, मैंने करके देखा–मैं उसको समझ गया।''** समय-समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों यथा UNESCO 1972, कोठारी आयोग 1964-66, NCERT, राष्ट्रीय पाठ्य चर्चा की रूपरेखा (NCF) 2005 द्वारा बालकों में विज्ञान में रचनात्मकता एवं आविष्कारशीलता को उत्प्रेरित करने के लिये प्रयोगों और क्रियाकलापों के महत्व पर जोर दिया गया है।

विज्ञान शिक्षण के लिये हुये तमाम शोध साहित्य में इस बात पर जोर दिया जाता है कि बच्चा स्वयं करके सीखे। इसी क्रम में राजस्थान राज्य में एनसीईआरटी की पाठयपुस्तकें लागू की जा चुकी हैं। ये पाठयपुस्तकें मात्र सूचना सम्प्रेषण पर आधारित न होकर विद्यार्थी में एक नई दर्शनिक सोच विकसित करने एवं ज्ञान का स्वयं सृजन करने की क्षमता के विकास की मंशा पर आधारित हैं। प्रेक्षण, वर्गीकरण, गुणात्मक मापन, क्वांटीकरण, प्रागुप्तिकरण (प्रोडक्शन), चरों का नियंत्रण, व्याख्या करना, निष्कर्ष निर्माण जैसे कौशलों का निर्माण सर्वोत्तम ढंग से हो, इसके लिये विद्यार्थी अपने हाथों से गतिविधि एवं प्रयोग करे जिससे वे स्वयं अनुभव अर्जित कर सकें एवं इसे पूर्वानुभव से जोड़कर अधिगम क्षेत्र का निर्माण कर सकें।

शिक्षा जगत में बदलाव के केन्द्र बिन्दु शिक्षक होते हैं। यदि विज्ञान शिक्षक इस विषय को पूर्ण मनोयोग एवं छात्र केन्द्रित शिक्षण के रूप में विज्ञान प्रयोगशाला का प्रभावी संचालन करें तो निश्चित रूप से बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं वैज्ञानिक अभिरुचि का विकास हो सकेगा एवं बालक जीवन में आने वाली हर समस्या का तार्किक ढंग से हल निकाल सकेंगे एवं कुशलता अर्जित कर सकेंगे। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को विज्ञान विषय का प्रायोगिक ज्ञान प्रदान करने हेतु एकीकृत विज्ञान प्रयोगशाला एक सशक्त माध्यम है। एकीकृत विज्ञान प्रयोगशाला के प्रभावी संचालन हेतु कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–

1. प्रयोगशाला में बालक ज्ञान को अपने प्रयासों की सहायता से प्रयोग द्वारा स्वयं प्राप्त करता है। इस विधि में LEARNING BY DOING के सिद्धांत पर विशेष बल दिया जाता है। इस दृष्टि से प्रयोग करवाते समय शिक्षक किसी भी अमुक प्रयोग का खाका तैयार कर पथप्रदर्शक के रूप में बालकों के अंदर इतनी जिज्ञासा जागृत कर दे कि वे प्रयोगों द्वारा सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ नवीन ज्ञान को स्वयं प्राप्त कर लें।
2. जब तक विज्ञान शिक्षक को प्रयोगशाला की आवश्यक साज सज्जा तथा उपकरणों के उचित प्रयोग का ज्ञान नहीं होगा तब तक वह इस विधि का प्रयोग नहीं कर सकता। अतः शिक्षक को प्रयोगशाला के विभिन्न औजारों, यंत्रों, उपकरणों एवं अन्य आवश्यक सामग्री से पूर्ण रूपेण परिचित होने के साथ-साथ इनके उचित प्रयोग का ज्ञान होना आवश्यक है। यही नहीं शिक्षक को प्रयोग संबंधी आवश्यक सामग्री को यथानुसार फिट करवाकर बालकों को प्रयोग करने का अभ्यास भी करवाना चाहिए। जिससे वे सभी नियमों एवं सिद्धांतों की खोज स्वयं कर सके।
3. विद्यार्थियों को हाथों से अनुभव के लिये कुछ अतिआवश्यक सहायक सामग्री की विज्ञान प्रयोगशाला में उपलब्धता एवं समय-समय पर प्रभावी रूप से उपयोग होना नितान्त आवश्यक है। यह सहायक सामग्री तीन प्रकार की हो सकती है:-

(अ) **दृश्य सामग्री** : इसके अंतर्गत विज्ञान के विभिन्न समप्रत्ययों, शिक्षण बिन्दुओं संबंधी चार्ट्स-उपकरण, विज्ञान प्रादर्श (मॉडल), विज्ञान प्रतिरूप (स्पेसीमेन), मानचित्र, लपेटफलक, श्यामपट्ट, वास्तविक पदार्थ, आशुरचित उपकरण-मॉडल आदि। इसी प्रकार से विज्ञान प्रयोगशाला में एक संग्रहालय जैसे जीवविज्ञान, रसायन विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान संबंधी चित्रों, चार्ट, नक्शे, अखबार, रिकार्ड, प्राचीन हस्तलेख एवं स्तम्भ आदि संग्रहीत किये जा सकते हैं।

(ब) **श्रव्य सामग्री** : विज्ञान प्रयोगशाला में रेडियों, टेप रिकार्डर, ग्रामोफोन जैसे श्रव्य साधन के उपयोग द्वारा भी बालकों की वैज्ञानिक प्रवृत्तियों के अंतः निर्माण में मदद मिलेगी।

(स) **श्रव्य दृश्य सामग्री** : स्लाईड प्रोजैक्टर, ओवरहेड प्रोजेक्टर, टेलीविजन एवं कम्प्यूटर के उपयोग द्वारा माध्यमिक स्तर पर छात्र छात्राओं को विज्ञान विषय का अधिगम एक संयुक्त संकाय के रूप में करने हेतु सक्रिय रखा जा सकता है।

4. किसी भी प्रयोग को कक्षा अथवा प्रयोगशाला में प्रदर्शन करने के पूर्व प्रयोग सम्बन्धी सामग्रियों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए एवं शिक्षक को उस प्रयोग को स्वयं करके देख लेना चाहिए। संभव हो तो विद्यार्थियों के समूह बनाकर अलग-अलग अवधारणाओं पर क्रियाकलापों का प्रदर्शन बेहतर रहता है। साथ ही छात्रों से ध्यानपूर्वक प्रयोग अवलोकन हेतु निर्देश दिया जाना चाहिए।

प्रयोग सम्बन्धी शंकाओं का समाधान भी उसी समय कर दिया जाना चाहिये जिससे बालकों की जिज्ञासा बनी रहे।

5. प्रयोगशाला में प्रयोग करने के पश्चात् उपकरणों, मॉडल आदि का रखरखाव शिक्षक की देखरेख में एवं सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। छात्रों से दलवार विभिन्न उपकरण स्वच्छ करवाकर यथास्थान व्यवस्थित करवाए जाने चाहिए।
6. प्रयोगशाला में प्रतिवर्ष छात्रकोष, विकास कोष, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान, सर्वशिक्षा अभियान अथवा अन्य बजट द्वारा क्रय की जाने वाली विज्ञान प्रयोग संबंधी सामग्री को उसकी प्रकृति के अनुसार स्थायी/अस्थायी स्टॉक रजिस्टर में इन्द्राज की जाए। साथ ही अवधिपार, नकारा एवं अनुपयोगी विज्ञान सामग्री का भी समय-समय पर निस्तारण आवश्यक है।
7. प्रयोगशाला में किसी भी प्रकार की आकस्मिक दुर्घटना या चोट के उपचार हेतु प्राथमिक चिकित्सा बाक्स होना आवश्यक है। अग्निशमन यंत्र का भी प्रबंध होना चाहिए एवं समय-समय पर उसकी जाँच की जानी आवश्यक है।
8. श्यामपट्ट पर स्वयं शिक्षक आवश्यक चित्र उपकरणों की जानकारी एवं सूत्र को अंकित करें ताकि बालक अभ्यास कर सकें। इस हेतु रंगीन चॉक का भी प्रयोग किया जा सकता है।
9. प्रयोगशाला में प्रकाश की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। वायु के आवागमन के लिये खिड़की, दरवाजे एवं रोशनदान पर्याप्त मात्रा में होने चाहिए। विभिन्न प्रयोगों हेतु शुद्ध जल की व्यवस्था एवं दूषित जल के समुचित निकास की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।
10. माध्यमिक स्तर पर विज्ञान के विभिन्न विषयों तथा भौतिक विज्ञान, रसायन एवं जीव विज्ञान हेतु एक ही कक्षा में पृथक्-पृथक् खण्ड निर्धारित किए जाने चाहिए। प्रयोगों से सम्बन्धित उपकरणों, रसायनों आदि की सूची भी कक्षा में चार्ट पर टांगी जानी चाहिए एवं सूची के क्रमानुसार ही रसायन सुव्यवस्थित रूप से रखे जाने चाहिए। विभिन्न वैज्ञानिकों की तस्वीरें एवं जीवनियां विज्ञान प्रयोगशाला की भित्तियों में लगाई जानी चाहिए जिससे बालकों में विज्ञान की उपलब्धियों, वैज्ञानिकों द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों, शोध एवं अनुसंधान की जानकारी मिल सकेगी जिससे उनमें स्वाभिमान का संचार होगा। महत्वपूर्ण दिवसों जैसे राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, पृथ्वी दिवस, ऊर्जा दिवस, पर्यावरण दिवस आदि की सूची भी प्रयोगशाला में लगाई जानी चाहिए। आवर्त सारणी, विज्ञान के महत्वपूर्ण सिद्धांत, नियम एवं परिभाषाएं भी चार्ट के रूप में दर्शाई जानी चाहिए जिन्हें समय-समय पर बालक अपनी स्मृति पटल पर पुनरावृत्ति कर स्मरण कर सकने में सिद्ध हो सकेंगे।
11. रसायन विज्ञान के प्रयोगों का प्रदर्शन करने हेतु मिनी किट का उपयोग लाभकारी रहता है। इस किट में छोटी आकार की परखनलियों के उपयोग से रसायन कम मात्रा में व्यय होंगे। विज्ञान विषय में दी गई अवधारणाओं को सहज रूप से समझने में प्रयुक्त सहायक सामग्री का आशय यह नहीं है कि बाजार से महंगे उपकरण खरीद कर प्रयोगशाला में उपलब्ध करवाये जाएं। जीव विज्ञान के अंतर्गत विभिन्न रंगीन पुष्पों से लाल एवं नीला लिटमस पत्र बनाना, विभिन्न प्रकार की पत्तियों में रंध्रों के प्रकार, पुष्प की संरचना एवं अन्य ऐसी ही अवधारणाओं को समझने में बहुत सी सहायक सामग्री सहज रूप से विद्यालय परिसर में ही उपलब्ध हो जाती है। इस प्रकार की सामग्री की सहायता से बालकों को प्रकृति से रूबरू करवाया जा सकता है जिससे विद्यार्थी जैव विविधता से परिचित होंगे।
12. विज्ञान प्रयोगशाला में एक सूचनापट्ट पर विद्यालय, जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले विज्ञान मेलों, विज्ञान प्रदर्शनी, वैज्ञानिक प्रतिभा खोज परीक्षा, आशुरचित यंत्रों का निर्माण आदि की जानकारी व संदर्शिका प्रदर्शित की जानी चाहिए। समय-समय पर विज्ञान सम्बन्धी गतिविधियों के फोटोग्राफ एवं समाचार पत्रों की झलकियां आदि भी सूचना पट्ट पर दर्शाई जानी चाहिए। विज्ञान क्लब का गठन एवं सफल संचालन बालकों में वैज्ञानिक जागरूकता, अनुसंधान की प्रवृत्ति एवं वैज्ञानिक कौशल का विकास करने में सहायक सिद्ध होगा।

शिक्षा का प्रसार तथा उपलब्धता जितनी आवश्यक है उतनी ही आवश्यक है उसकी गतिशीलता एवं गुणवत्ता। इस उद्देश्य की सम्प्राप्ति हेतु प्रशिक्षण शिविरों से संपर्क बनाए रखकर विज्ञान शिक्षकों को सीखने की उत्कंठा रखनी चाहिए। विज्ञान प्रयोगशाला के प्रभावी संचालन द्वारा पाठ्यपुस्तकों में निहित गतिविधियों सूक्ष्म अवलोकन, प्रयोग आदि को विद्यार्थियों के स्तर पर पहुंचाया जा सकेगा जिससे विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बीच रचनात्मकता एवं वैज्ञानिक प्रवृत्ति की लहर का संचार हो सकेगा।

वर्तमान युग विज्ञान का युग है। वैज्ञानिक विकास और नित होने वाले चमत्कारों से दुनिया विस्मित है। अतः हमें विद्यार्थियों को गहन वैज्ञानिक शिक्षण करवाते हुए उपयुक्त शिक्षण-अधिगम सामग्री विद्यालयों के पुस्तकालयों में संधारित करनी चाहिए। सामान्यतः विज्ञान संकाय वाले उच्च माध्यमिक विद्यालयों में +2 स्तर पर विज्ञान पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के लिए तो बेहतर प्रयोगशाला होती है लेकिन उसी विद्यालय की कक्षा 9, 10 एवं नीचे की कक्षाओं में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के लिए ऐसी कोई प्रयोगशाला नहीं होती। अतः विद्यालय प्रबंध को चाहिए कि संसाधनों को संग्रहीत कर एक ऐसी प्रयोगशाला अवश्य तैयार करें जिसमें ये बच्चे भी प्रयोग कर विज्ञान की परिभाषा को सार्थक कर सके। विद्यालय के प्रधानाचार्य इस दिशा में पहल करें तो ऐसी प्रयोगशाला को स्थापित करने में कोई समय नहीं लगे। आशा है, वे इस दिशा में पहल कर क्रियान्वित बिन्दु तक उसे पहुँचाएंगे।

-प्रधानाचार्या, रा.बा.उ.मा.वि.,
ब्राह्मणों की सेरी, भीलवाड़ा

जीवन एक पाठशाला है और अनुभव उसका शिक्षक है। शिक्षा एक चेतनाभूत नियंत्रित गत्यात्मक सतत प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता है। सकारात्मक बातों को सीखना शिक्षा है। शिक्षा जीवन व्यवहार सिखाती है तथा जीवन संघर्ष के लिए तैयार करती है। **वस्तुतः शिक्षा वह है जो हमें आँख (अन्तर्दृष्टि) व पाँख (क्षमता) दे जो जीवन व जीविका के काम आए।** यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सिर्फ साक्षरता शिक्षा नहीं है और सूचना ज्ञान नहीं है तथा स्कूल से वंचित रहना शिक्षा से वंचित होना नहीं है। शिक्षा प्राप्ति का एक मात्र साधन स्कूल ही नहीं है। महान् शिक्षाविद् इवान इलीच ने तो यहाँ तक कहा है कि मेरी माँ मुझे शिक्षित करना चाहती थी इसलिए उसने मुझे स्कूल नहीं भेजा। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि स्कूल संगठन बेमायने हैं बल्कि यह है कि स्कूल के अलावा अनौपचारिक रूप से भी सीखा जा रहा है। सिर्फ स्कूली साक्षरता एक कौशल बनकर रह जाती है जबकि सामाजिक साक्षरता शिक्षा बन जाती है। औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा परस्पर संपूरक है। समाज में मिलने वाली अनौपचारिक शिक्षा व्यक्ति में अपना ज्ञान स्वयं सृजित करने की स्वाभाविक क्षमता को विकसित करती है। सीखना आनन्ददायी एवं सहज बन जाता है।

औपचारिक शिक्षा में जहाँ गुरु के माध्यम से सीखा जाता है वहाँ अनौपचारिक शिक्षा में एकलव्य की तरह अपने प्रयत्न से सीखा जाता है। महात्मा बुद्ध ने कहा है "अप्प दीपो भव" अर्थात् अपने प्रकाश स्वयं बनो। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि "बालकों को सिखाने और पौधों को उगाने की बात एक ही है। पौधा प्रकृति से विकसित होता है। हम केवल उसके विकसित होने में सहायता कर सकते हैं। हम बालकों को सिखाते हैं यह बात ही सारी गड़बड़ पैदा कर देती है। हमें बालकों के लिए केवल वे संसाधन जुटा देने चाहिए कि वे अपने हाथ, पैर और कान आदि का अपनी बुद्धि से भली प्रकार उपयोग करके स्वयं को सिखा सकें।"

हमारे पूर्व प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने 10 नवम्बर, 1963 ई. को शिक्षा मंत्रियों के सम्मेलन में कहा था "मैं पूरी तरह इस बात का कायल हूँ कि सर्वसुलभ शिक्षा हमारी प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए बाकी सब चाहे वह उद्योग हो चाहे कृषि या कुछ और जो भी हमारे लिए महत्त्वपूर्ण है, उसका सही ढंग से विकास तभी होगा जब पृष्ठभूमि में व्यापक स्तर पर शिक्षा होगी।" सिर्फ शिक्षा के लिए वातावरण बनाने की आवश्यकता है बाकी बातों के लिए शिक्षा अपने आप वातावरण बना लेगी।

सर्व सुलभ सहज शिक्षा

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल

❒ दयाराम महरिया

परिचय : शिक्षा की सर्वसुलभता एवं सहजता के लिए राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल की स्थापना 21 मार्च, सन् 2005 ई. में की गई। राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, स्कूल से बाहर के सीखने के संसाधनों को औपचारिक मान्यता देने की युक्ति है। 10वीं व 12वीं की परीक्षा हेतु न्यूनतम क्रमशः 14 व 15 वर्ष का कोई भी व्यक्ति पंजीयन करवा सकता है। आयु की अधिकतम कोई सीमा नहीं है। पंजीयन राज्य भर के 441 सन्दर्भ केन्द्रों पर करवाया जा सकता है।

विषयों का चयन : कक्षा 10वीं में 15 व 12वीं में 20 विषयों में से किन्ही पाँच विषयों को चयन करने की छूट होती है। गणित एवं अंग्रेजी विषय की अनिवार्यता नहीं है।

टी.ओ.सी.: अन्य मान्यता प्राप्त बोर्डों से अनुत्तीर्ण होने पर अधिकतम उत्तीर्ण दो विषयों एवं राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के अभ्यर्थियों के चार विषयों में क्रेडिटों का स्थानान्तरण (टी.ओ.सी.) का लाभ दिये जाने का प्रावधान भी है।

व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम : अध्ययन में आने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु विषय विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में वर्ष में एक बार 15 दिवसीय (25 दिसम्बर से 8 जनवरी तक) व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रमों का आयोजन सभी सन्दर्भ केन्द्रों पर किया जाता है।

सार्वजनिक परीक्षाएँ : एक वर्ष में दो बार परीक्षाएँ अक्टूबर-नवम्बर व मार्च-अप्रैल में होती हैं। एक बार पंजीयन करवाने के पश्चात् उत्तीर्ण होने के लिए अभ्यर्थी को 5 वर्ष में 9 अवसर मिलते हैं। इस प्रकार स्टेट ओपन स्कूल में पढ़ने के लिए अधिक अवसर उपलब्ध हैं।

प्रवेश और पंजीयन तिथियाँ

- नए अभ्यर्थियों का पंजीयन 01 जुलाई, से 17 अगस्त 2013 तक (बिना विलम्ब शुल्क) पंजीयन सभी सन्दर्भ केन्द्रों पर
- 18 अगस्त, 2013 से 15 सितम्बर, 2013 तक (रु. 250/- विलम्ब शुल्क सहित) पंजीयन सभी सन्दर्भ केन्द्रों पर
- 16 सितम्बर, 2013 से 30 सितम्बर, 2013 तक (रु. 350/- विलम्ब शुल्क सहित) पंजीयन सभी सन्दर्भ केन्द्रों पर
- 01 अक्टूबर,13 से 31 अक्टूबर, 2013 तक (रु. 500/- विलम्ब शुल्क सहित) पंजीयन सभी केन्द्रों पर किया जा रहा है।

मान्यता : राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल द्वारा जारी 10वीं व 12वीं के प्रमाण-पत्रों को केन्द्र व राज्य सरकार के द्वारा सी.बी.एस.सी., माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान या अन्य बोर्डों के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। रेलवे बोर्ड व सेना में भी मान्यता प्राप्त है।

वेबसाइट : विस्तृत जानकारी स्कूल की Website: http://www.rsos.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

विशेषताएँ : पाठ्यक्रम की सरलता व शिक्षा की सहजता के साथ-साथ परीक्षा का लचीलापन स्टेट ओपन स्कूल की विशेषता है। तनावमुक्त होकर अभ्यर्थी अपनी सुविधा अनुसार परीक्षा उत्तीर्ण कर सकता है। ओपन स्कूल से जुड़कर अभ्यर्थी अपने ज्ञान व अनुभव का सुदृढ़ीकरण व संवर्धन करता है। उसके ज्ञान का प्रमाणीकरण होने पर जहाँ आत्म सन्तोष मिलता है वहीं आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है।

उपलब्धियाँ : राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल में प्रारम्भ से अब तक 3,34,724 अभ्यर्थी इस योजना से जुड़ चुके हैं। गत सत्र 2012-13 में माध्यमिक 54,943 एवं उच्च माध्यमिक 23,391 इस प्रकार कुल 78,334 अभ्यर्थी पंजीकृत हुए।

-सचिव, राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल, जयपुर
फोन 0141-2705067

आदेश-परिपत्र : अगस्त, 2013

1. बालिकाओं के लिए गार्गी पुरस्कार के अन्तर्गत देय राशि में वृद्धि हुई
2. शिक्षा सत्र 2013-14 में क्रमोन्नत गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में अतिरिक्त कक्षाएं प्रारम्भ करने की अनुमति दिए जाने के सम्बन्ध में
3. पेंशन प्रक्रिया को सुगम व समयबद्ध बनाने हेतु विभिन्न दिशा-निर्देश
4. सेवानिवृत्ति से छः माह पूर्व कार्मिक का पेंशन प्रकरण भिजवाएं
5. राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदाय की गारन्टी अधिनियम 2011 में सम्मिलित है पेंशन प्रकरण
6. माध्यमिक शिक्षा विभाग में पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सन्दर्भ में दिशा-निर्देश दिनांक 9 जनवरी 2013
7. प्रधानाध्यापक, मा.वि. के पेंशन प्रकरण जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा भिजवाए जाएं।
8. निर्धारित समय में पेंशन प्रकरण निस्तारण नहीं होने पर प्रतिदिन 500 रु. का अर्थदण्ड
9. निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा-निर्देश
10. राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालय स्तर पर क्रमोन्नत होने पर प्राथमिक विद्यालय को पृथक करने के सम्बन्ध में
11. कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी किसी एक सहशैक्षिक गतिविधि में आवश्यक रूप से लेंगे भाग
12. विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं की शिक्षण व्यवस्था के सम्बन्ध में।

1. बालिकाओं के लिए गार्गी पुरस्कार के अन्तर्गत देय राशि में वृद्धि हुई

● राजस्थान सरकार, शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग ● क्रमांक : प. 22(3) शिक्षा-1/2008 जयपुर दिनांक 21.6.2013 ● विषय : माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा वर्ष 2013-14 में गार्गी पुरस्कार की राशि बढ़ाने की घोषणा के संबंध में। ● संदर्भ : आपका पत्रांक शिविरा/माध्य/छाप्रोप्र/सं./ गार्गी/60125/2013-14 दिनांक 23.5.2013

उपर्युक्त विषयान्तर्गत सन्दर्भित पत्र के क्रम में माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा बजट घोषणा, संख्या-418 के अनुसार वर्ष 2013-14 में बालिकाओं हेतु गार्गी पुरस्कार की राशि 4000 से बढ़ाकर 6000 रुपये बढ़ाने की घोषणा उपरान्त यह राशि प्रथम वर्ष में कक्षा 11 में 3000 रुपये एवं द्वितीय किश्त कक्षा 12 में 3000 रुपये दिये जाने की एतद्द्वारा स्वीकृति प्रदान की जानी है। ● शासन उप सचिव, प्रथम।

2. शिक्षा सत्र 2013-14 में क्रमोन्नत गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं में अतिरिक्त कक्षाएं प्रारम्भ करने की अनुमति दिए जाने के सम्बन्ध में

● राजस्थान सरकार, स्कूल शिक्षा (ग्रुप-5) विभाग ● क्रमांक : प. 9(2) शिक्षा-5/2005 पार्ट जयपुर दिनांक 3.7.2013 ● विषय : शिक्षा सत्र 2013-14 में उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों, कमोन्नत, गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं को कक्षा-6 के साथ कक्षा-7 व 8, कक्षा-9 के साथ-10 व कक्षा-11 के साथ कक्षा-12 एक साथ प्रारम्भ करने की अनुमति दिये जाने के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निर्देशानुसार लेख है कि शिक्षा सत्र 2013-14 में उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों, कमोन्नत, गैर सरकारी शिक्षण संस्थाओं को कक्षा-6 के साथ कक्षा-7 व 8, कक्षा-9 के साथ 10 व कक्षा-11 के साथ कक्षा-12 एक साथ प्रारम्भ करने की अनुमति दिये जाने के संबंध में जो संस्थाएं कक्षाएं प्रारम्भ करने हेतु आधारभूत सुविधाएं शैक्षणिक स्टाफ संसाधन एवं निर्धारित मानदण्डों की पूर्ति करती हो, से निर्धारित शुल्क के अतिरिक्त 20,000/- (बीस हजार रुपये) अतिरिक्त शुल्क जमा कराया जाकर कक्षा-6 के साथ कक्षा-7 व 8, कक्षा-9 के साथ-10 व कक्षा-11 के साथ कक्षा-12 एक साथ प्रारंभ करने की अनुमति प्रदान की जाती है। इस हेतु इच्छुक संस्थानों के द्वारा आवेदन करने की अन्तिम तिथि 31.8.2013 तक निर्धारित की जाती है। ● संयुक्त शासन सचिव

3. पेंशन प्रक्रिया को सुगम व समयबद्ध बनाने हेतु विभिन्न दिशा निर्देश

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

दिनांक 27-6-2013

● क्रमांकः शिविरा/मा/पेंशन-स/34983/13/01 दिनांक 27.6.2013 ● परिपत्र (Circular) ● विभाग द्वारा पेंशन प्रकरणों के नियमानुसार एवं शीघ्र निस्तारण हेतु समय-समय पर निम्नांकित विवरण के अनुसार दिशा-निर्देश/परिपत्र जारी किये गये हैं। जिनका सारांश (Abstract) बिन्दुवार निम्नानुसार है :-

(ए) निदेशालय का पत्र क्रमांक : शिविरा/मा/पेंशन-स/34924/09/31 दिनांक 11.04.2011

राजस्थान पेंशन नियम 1996 के नियम 78 में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों की सूची 24 से 30 माह पूर्व प्रतिवर्ष जनवरी एवं जुलाई में जारी करने, एक वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति आदेश जारी करने, नियम 81 में पेंशन प्रकरण तीन चरणों में पूरा करने एवं नियम 83 में सेवानिवृति से छः माह पूर्व पेंशन प्रकरण पेंशन विभाग को भिजवाने का प्रावधान है। पत्र की फोटोप्रति एनेक्चर ए के रूप में संलग्न है।

(बी) निदेशालय का पत्र क्रमांक शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/09/120 दिनांक 15.10.12

राज्य सरकार द्वारा राज्य में 14 नवम्बर, 2011 से राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदाय की गारण्टी अधिनियम 2011 लागू किया गया है। इस अधिनियम में शामिल सेवाओं में समय पर पेंशन प्रकरणों के निस्तारण करने हेतु पेंशन से सम्बन्धित सेवाएं भी सम्मिलित हैं। अधिनियम में पेंशन प्रकरणों के निराकरण में आने वाली समस्याओं का समाधान समय पर नहीं

करने पर दोषी अधिकारी/कर्मचारी पर अर्थदण्ड (Penalty) का भी प्रावधान है। इस पत्र द्वारा सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों के पेंशन प्रकरणों के समय पर निस्तारण हेतु बिन्दु संख्या 1 से 12 तक राज. पेंशन नियमों के अनुसार निर्देश जारी किए गये हैं जिनकी पालना सुनिश्चित करावें। पत्र की फोटो प्रति एनेक्चर बी के रूप में संलग्न है।

(सी) निदेशालय के परिपत्र क्रमांक शिविरा/मा/पेंशन-स/34981/ 2012 दिनांक 09.01.13

राजस्थान पेंशन नियम 1996 के प्रावधानों के अनुसार परिशिष्ठ 8 की पालना में परिपत्र के क्र.सं. 2 में अबकाया प्रमाणपत्र जारी करने के लिए कार्यालयाध्यक्ष अधिकृत है। क्र.सं. 1 से 6 तक समस्त विभागीय नियुक्ति अधिकारियों/उप निदेशक/जिला शिक्षा अधिकारियों को पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण हेतु निर्देश जारी किये गये थे। परिपत्र की फोटोप्रति एनेक्चर सी के रूप में संलग्न है।

(डी) निदेशालय का पत्र क्रमांक शिविरा/माध्य/पेंशन-स/34981/ 2012/13/60 दिनांक 11.03.13

विभाग के अधीनस्थ जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा प्रधानाध्यापक/ प्रधानाचार्य (कार्यालयाध्यक्ष) के अबकाया प्रमाण पत्र जारी करने के परिपत्र दिनांक 09.01.13 के संदर्भ में मार्गदर्शन चाहे जाने पर प्रधानाध्यापक/ प्रधानाचार्य के मामले में उनके नियंत्रण अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) होने के कारण उन्ही के द्वारा अवकाश, वेतनवृद्धि स्वीकृत किये जाते हैं। अतः सेवाभिलेख उन्हीं के कार्यालय में रहने के कारण अबकाया प्रमाण पत्र सेवाभिलेख एवं गत भुगतान प्रमाण पत्र के आधार पर उन्ही जिशिअ द्वारा जारी करने के निर्देश जारी किये गये थे। पत्र की फोटो प्रति एनेक्चर डी के रूप में संलग्न है।

(ई) निदेशालय का पत्र क्रमांक शिविरा/माध्य/पेंशन-अ/34925/ पार्ट-2/2013/33 दिनांक 19.03.13

प्रमुख शासन सचिव वित्त (राजस्व) विभाग, जयपुर के परिपत्र क्रमांक पं. 10 (5) वित्त/राजस्व/2010/पार्ट-II, लूज जयपुर दिनांक 18.02.13 एवं अति. निदेशक, पेंशन एवं पेंशनर्स कल्याण विभाग, जयपुर का पत्रांक एफ.14 (46)निपेवि/शिपाप्र/2012-13/3504-3691 दिनांक 26.02.13 के अनुसार राजस्थान लोक सेवाओं की प्रदायगी अधिनियम 2011 में राज्य कर्मचारियों के पेंशन सम्बन्धी भुगतान की सेवा को अधिनियम की अनुसूची के क्रमांक 59 से 65 में सम्मिलित किया गया है। सेवा की समय पर प्रदायगी नहीं होने पर विलम्ब के लिए न्यूनतम 500/- एवं अधिकतम 5000/- अर्थदण्ड (शास्ति) लगाने का प्रावधान है। अतः राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 के परिशिष्ठ viii के निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें। पत्र की फोटोप्रति एनेक्चर ई के रूप में संलग्न है।

निदेशालय स्तर पर लम्बित पेंशन प्रकरणों की माह मार्च, 2013 की समीक्षात्मक बैठकों के क्रम में निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करें-

1. राजस्थान सेवा नियम (पेंशन) 1996 के परिशिष्ट viii के अनुसार समस्त नियुक्ति अधिकारी अपने अधीनस्थ कार्यरत कार्मिकों के सेवानिवृत्ति आदेश सेवानिवृत्ति तिथि से एक वर्ष पूर्व प्रपत्र 6 में जारी करें एवं सेवानिवृत्ति आदेश में विभागीय जांच विचाराधीन है अथवा नहीं। प्रमाण पत्र अवश्य अंकित करें।
2. कार्यालयाध्यक्ष अपने स्तर पर सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिक को सेवानिवृत्ति तिथि से 8 माह पूर्व सेवा पुस्तिका की सभी प्रविष्टियों की जांच कर वेतन, सेवा सत्यापन इत्यादि की पूर्ति कर पेंशन कुलक उपलब्ध कराकर प्राप्ति रसीद रिकार्ड में रखे। कार्मिक के विरुद्ध विभागीय जांच/कोर्ट केस लम्बित होने की स्थिति में प्रपत्र पी-33 उपलब्ध करवाकर प्राप्ति रसीद रिकार्ड में रखने की व्यवस्था करें।
3. कार्यालयाध्यक्ष कार्मिक का पेंशन प्रकरण (पेंशन विभाग की चेक स्लिप के अनुसार) विधिवत् तैयार कर प्रोविजन एलपीसी जारी कर प्रकरण जिला शिक्षा अधिकारी के माध्यम से सेवानिवृत्ति तिथि से छः माह पूर्व आवश्यक रूप से पेंशन विभाग को अदेय प्रमाण पत्र सहित प्रेषित करने की व्यवस्था करावें।
4. **पेंशन रजिस्टर का संधारण करना :-**

कार्यालयाध्यक्ष स्तर पर एक पेंशन रजिस्टर का संधारण किया जाये, उसमें आगामी 2 वर्षों में सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों के नाम एवं विवरण का इन्द्राज करें एवं कार्मिक के नियुक्ति तिथि से लेकर वेतन, सेवा सत्यापन, अवकाश लेखों की जांच का कार्य प्रारम्भ करें। एक वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति आदेश का उल्लेख भी उक्त रजिस्टर में करें। सेवानिवृत्ति के आठ माह पूर्व पेंशन कुलक उपलब्ध कराने का इन्द्राज एवं 6 माह पूर्व पेंशन विभाग में प्रकरण भिजवाने इत्यादि का पूर्ण विवरण अंकित करें।

उपर्युक्त सभी दिशा निर्देशों/परिपत्रों की पालना सुनिश्चित करें ताकि सभी लम्बित पेंशन प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण हो सके। ● ह. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राज., बीकानेर 18-6-13

मुख्य लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

4. सेवानिवृत्ति से छः माह पूर्व कार्मिक का पेंशन प्रकरण भिजवाएं

कार्यालय आयुक्त माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

● क्रमांकः शिविरा/मा/पेंशन-स/34924/09/31 दिनांक 11.4.2011 ● विषय : पेंशन प्रकरण समय पर भिजवाने बाबत।

पेंशन नियम 1996 के नियम 78 में सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों की सूची 24 से 30 माह पूर्व प्रतिवर्ष जनवरी एवं जुलाई में जारी करने, एक वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति आदेश जारी करने, नियम 81 में पेंशन प्रकरण तीन चरणों में पूरा करने एवं नियम 83 में सेवानिवृत्ति से छः माह पूर्व पेंशन प्रकरण पेंशन विभाग को भिजवाने का प्रावधान है।

इसके विपरीत यह देखा गया है कि बहुत से प्रकरणों में सेवानिवृत्ति तक तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात भी 'विभागीय जांच बकाया नहीं होने का प्रमाण पत्र' तथा 'समेकित अदेय प्रमाण पत्र' जारी नहीं होने के कारण पेंशन प्रकरणों का निस्तारण देरी से होता है जबकि पेंशन प्रकरणों के समय पर निस्तारण के लिये राज्य सरकार व निदेशालय पेंशन एवं पेंशनर्स वेलफेयर विभाग राज. जयपुर द्वारा समय-समय पर निर्देश दिये जाते रहते हैं।

अतः पेंशन प्रकरणों के समय पर निस्तारण बाबत आपके कार्यालय से जारी होने वाले 'विभागीय जांच बकाया नहीं होने का प्रमाण पत्र' तथा 'समेकित अदेय प्रमाण पत्र' सेवानिवृत्ति से छः माह पूर्व जारी किया जाना सुनिश्चित करावें। ● आयुक्त, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

5. राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदाय की गारन्टी अधिनियम 2011 में सम्मिलित है पेंशन प्रकरण

कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

● क्रमांकः शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/09/120 दिनांक 15.10.2012 ● विषय : पेंशन प्रकरणों के समय पर निस्तारण के संबंध में। ● प्रसंग : निदेशालय पत्रांक : शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/09/40 दि. 8.7.10, 60 दि. 13.12.10, 80 दिनांक 21.3.11, 84 दि. 24.3.11, 96 दि. 25.5.11, 142 दि. 4.11.11, 150 दिनांक 16.11.11

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि इस कार्यालय द्वारा समय समय पर जारी किए गए निर्देशों के उपरांत भी सेवानिवृत्त कार्मिकों के पेंशन एवं पारिवारिक पेंशन प्रकरणों का अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा समय पर निस्तारण नहीं हो रहा हैं, जिसके फलस्वरूप संबंधित व्यक्तियों को पेंशन/पारिवारिक पेंशन का समय पर भुगतान न होने से आर्थिक कठिनाई तो होती है, साथ ही न्यायालयों में वाद भी बढ़ सकते हैं। पेंशन प्रकरणों के विलम्ब से निस्तारण के फलस्वरूप राज्य सरकार को ब्याज का अनावश्यक भुगतान भी करना पड़ता है।

राज्य सरकार द्वारा राज्य में 14 नवम्बर 2011 से 'राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदाय की गारन्टी अधिनियम 2011' लागू किया गया है। इस अधिनियम में शामिल सेवाओं में समय पर पेंशन प्रकरणों के निस्तारण करने हेतु पेंशन से संबंधित सेवाएं भी सम्मिलित हैं। अधिनियम में पेंशन प्रकरणों के निराकरण में आने वाली समस्याओं का समाधान समय पर नहीं करने पर दोषी अधिकारी/कर्मचारी पर अर्थदंड का भी प्रावधान है।

अतः विभाग से सेवानिवृत्त होने वाले कार्मिकों के पेंशन प्रकरणों के समय पर निस्तारण हेतु निर्देशित किया जाता है। निर्देशों की समुचित पालना सुनिश्चित करें :-

1. समस्त नियुक्ति अधिकारी अपने अधीनस्थ कार्यरत कार्मिकों के सेवानिवृत्ति आदेश सेवानिवृत्ति तिथि से एक वर्ष पूर्व आवश्यक रूप से जारी करें तथा उसमें यह प्रमाण-पत्र भी अंकित किया जाये कि आदेश जारी होने की तिथि तक कर्मचारी के विरुद्ध सीसीए 16, 17 के तहत कोई विभागीय कार्यवाही विचाराधीन है या नहीं है।
2. आदेश जारी होने तथा सेवानिवृत्ति तिथि के मध्य विभागीय जांच प्रारंभ होने की स्थिति में पेंशन विभाग को तथ्य से अविलम्ब अवगत करवाया जावें।
3. कार्यालयाध्यक्ष कर्मचारी का पेंशन प्रकरण विधिवत तैयार कर अस्थायी एलपीसी जारी कर प्रकरण सेवानिवृत्ति से 6 माह पूर्व आवश्यक रूप से पेंशन विभाग को प्रेषित करें।
4. अल्प वेतन भोगी कर्मचारियों के पेंशन/पारिवारिक पेंशन प्रकरण तैयार करवाने हेतु कार्यालय के पेंशन नियमों से विज्ञ एक लिपिक को जिम्मेदार बनाया जायें।
5. पेंशन प्रकरण पेंशन विभाग को प्रेषित करने से पूर्व कार्यालय में पद स्थापित लेखा/अधीनस्थ लेखा सेवा के वरिष्ठ सदस्य सलेअ/लेखाकार/क. लेखाकार से जांच करवायी जाकर सेवा पुस्तिका में प्रमाण पत्र अंकित करवाया जावे।
6. निदेशक पेंशन विभाग जयपुर द्वारा जारी पेंशन प्रकरण चैक स्लिप जो इस कार्यालय के प्रसंगाधीन पत्र दिनांक 24.3.11 द्वारा आपको प्रेषित की गयी थी, अनुसार प्रत्येक प्रकरण की जांच की जावें ताकि प्रकरण में आक्षेप की संभावना नहीं रहे। चैक स्लिप की प्रति पुनः संलग्न है।
7. जिन कार्मिकों के विरुद्ध विभागीय जांच अथवा न्यायिक जांच लम्बित है, ऐसे प्रकरणों में पेंशन नियमों में अनन्तिम (प्रोविजनल) पेंशन स्वीकृति का प्रावधान है। अतः ऐसे प्रकरणों में पेंशन नियम 90 के तहत नियुक्ति अधिकारी से प्रोविजनल पेंशन स्वीकृति करवायी जाकर प्रकरण पेंशन विभाग को प्रेषित किये जावे।
8. जिन प्रकरणों में अन्य किसी कारण/दस्तावेज के अभाव में अंतिम पेंशन प्रकरण प्रेषित किया जाना संभव नहीं है। पेंशन नियम 86 के तहत कार्यालयाध्यक्ष स्वयं अनन्तिम (प्रोविजनल) पेंशन स्वीकृत कर प्रकरण पेंशन विभाग को प्रस्तुत करें। किसी भी परिस्थिति में प्रकरण कार्यालय स्तर पर लम्बित न रखा जावे।
9. जिन कर्मचारियों की विभागीय जांच/न्यायिक जांच के दौरान सेवा निवृत्ति से पूर्व या पश्चात् मृत्यु हो जाती है, ऐसे प्रकरणों में मृत्यु के तत्काल बाद जांच को समाप्त किए जाने की कार्यवाही की जावे।
10. सेवानिवृत्ति से एक वर्ष पूर्व यदि कोई कर्मचारी प्रतिनियुक्ति पर रहा हो और उसका पेंशन अंशदान प्राप्त नहीं हुआ हो तो पेंशन प्रकरण नहीं रोका जावे। पेंशन अंशदान प्राप्त करने की कार्यवाही पृथक् से जारी रखी जावे।
11. राजस्थान सिविल सेवा पेंशन नियम 96 के परिशिष्ट 8 में प्रदत्त अनुदेशों की पालना प्रत्येक कार्यालयाध्यक्ष स्तर पर सुनिश्चित की जावे।
12. दिनांक 31.8.12 तक आपके कार्यालय के बकाया पेंशन प्रकरणों की सूची संलग्न की जाकर निर्देशित किया जाता है कि इन प्रकरणों में वांछित कार्यवाही पूर्णकर दिनांक 31.10.12 तक समस्त प्रकरण संबंधित पेंशन विभाग कार्यालय में प्रस्तुत करना सुनिश्चित करें।

उपर्युक्त निर्देशों की पालना कठोरता से की जावे। ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर दिनांक 15-10-12

6. माध्यमिक शिक्षा विभाग में पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सन्दर्भ में दिशा-निर्देश दिनांक 9 जनवरी 2013

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

● क्रमांकः शिविरा/मा/पेंशन-स/34981/2012 दिनांक 9.1.2013 ● परिपत्र ● विषय : विभाग में पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के सन्दर्भ में दिशा-निर्देश। ● राजस्थान पेंशन नियम 1996 के प्रावधानों के अनुसार इस कार्यालय के आदेश क्रमांक शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/09/120 दिनांक 15.10.12 की निरन्तरता में निम्नांकित दिशा निर्देश पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण हेतु पुनः प्रसारित किए जाते हैं:-

1. राजस्थान सेवा नियम (पेंशन) 1996 के परिशिष्ठ 8 के अनुसार समस्त नियुक्ति अधिकारी अपने अधीनस्थ कार्यरत कार्मिकों के सेवानिवृत्ति आदेश सेवानिवृत्ति तिथि से एक वर्ष पूर्व प्रपत्र-6 में

जारी करें। सेवानिवृत्ति आदेश में विभागीय जांच विचाराधीन है अथवा नहीं प्रमाण पत्र अवश्य अंकित किया जावे।

2. राजस्थान सेवा (पेंशन) नियम 1996 के परिशिष्ट 8 में अबकाया प्रमाण पत्र जारी करने के लिए कार्यालयाध्यक्ष अधिकृत है। अतः निदेशालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा समेकित अदेय प्रमाण पत्र जारी करने की प्रक्रिया को बन्द किया जावें।
3. समस्त नियुक्ति अधिकारी सेवानिवृत्ति आदेश (एक वर्ष पूर्व) जारी करने से दो माहपूर्व प्रक्रिया प्रारम्भ करते हुए विभागीय जांच/लेखाडी-4 (चोरी, गबन) इत्यादि की लम्बित जांच के संबंध में रिपोर्ट प्राप्त कर सेवा निवृत्ति आदेश निर्धारित प्रपत्र-6 में प्रसारित करें।
4. निदेशक, पेंशन विभाग, जयपुर द्वारा जारी पेंशन प्रकरण चैक स्लिप जो इस कार्यालय के प्रसंगाधीन पत्र दिनांक 24.3.11 एवं 15.10.12 द्वारा सभी उप निदेशक/जिला शिक्षा अधिकारियों को प्रेषित की गयी थी, अनुसार प्रत्येक पेंशन प्रकरण की जांच की जावे ताकि प्रकरण में आक्षेप की संभावना नहीं रहे।
5. पेंशन विभाग से पेंशन प्रकरण आक्षेपों सहित प्राप्त होने पर आक्षेपों की पूर्ति हेतु संस्था प्रधान एवं संबंधित लिपिक को जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय बुलाकर आक्षेपों की पूर्ति हाथों हाथ करवाते हुए पेंशन प्रकरण पुनः पेंशन विभाग में भिजवाने की व्यवस्था की जावे, ताकि पेंशन प्रकरण का शीघ्र निस्तारण हो सके।
6. राजस्थान सिविल सेवा पेंशन नियम 96 के परिशिष्ठ-8 में प्रदत अनुदेशों की पालना प्रत्येक कार्यालयाध्यक्ष स्तर पर सुनिश्चित की जावे। ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

मुख्य लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

7. प्रधानाध्यापक, मा.वि. के पेंशन प्रकरण जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा भिजवाए जाएं

● क्रमांकः शिविरा/माध्य/पेंशन-स/34981/2012/13/60 दिनांक 11.3.2013 ● विषय : परिपत्र (दिनांक 9.01.13) पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के संदर्भ में दिशा निर्देश। ● प्रसंग : इस कार्यालय द्वारा जारी परिपत्र क्रमांक शिविरा/मा/पेंशन सं./34981/2012/दिनांक 9.1.13 की निरन्तरता में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक परिपत्र के संदर्भ में कई अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य के अबकाया प्रमाण पत्र जारी करने के संदर्भ में मार्गदर्शन चाहे जाने पर निर्देशानुसार लेख है कि प्रधानाध्यापक/ प्रधानाचार्य के मामले में उनके नियंत्रण अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी (मा) होने के कारण उनके अवकाश, वेतनवृद्धि इत्यादि के प्रकरण उन्हीं द्वारा स्वीकृत किए जाते हैं। अतः सेवाभिलेख उन्ही के कार्यालय में रहने के कारण अबकाया प्रमाण पत्र सेवाभिलेख एवं गत भुगतान पत्र के आधार पर उन्ही (जिशिअ) द्वारा जारी कर पेंशन प्रकरण, स्वीकृति हेतु भिजवाया जाना सुनिश्चित करावें।

अतः अधीनस्थ जिला शिक्षा अधिकारियों को इस संबंध में दिशा निर्देश जारी करावें। ● लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

8. निर्धारित समय में पेंशन प्रकरण निस्तारण नहीं होने पर प्रतिदिन 500 रु. का अर्थदण्ड

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

● क्रमांकः शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/पार्ट-2/2013/33/ दिनांक 19.3.2013 ● विषय : पेंशन प्रकरण शीघ्र निस्तारण के संबंध में राज्य सरकार द्वारा जारी परिपत्र की पालना सुनिश्चित करने बाबत। ● प्रसंग : प्रमुख शासन सचिव, वित्त (राजस्व) विभाग जयपुर का परिपत्र क्रमांक प 10 (5) वित्त/ राजस्व/2010/पार्ट-II, लूज जयपुर दिनांक 18.2.13 एवं अति. निदेशक, पेंशन एवं पेंशनर्स कल्याण विभाग, जयपुर का पत्रांक एफ. 14 (46)/ नि.पें.वि./ शिपाप्र/2012-13/3504-3691 दिनांक 26.2.13 ● उपर्युक्त विषयान्तर्गत प्रासंगिक परिपत्र की फोटो प्रति भिजवाकर निर्देश दिए जाते हैं कि राज्य सरकार (वित्त विभाग) द्वारा पेंशन प्रकरणों के शीघ्र निस्तारण के संदर्भ में दिए गये निर्देशों की पालना सुनिश्चित करावें। यहां यह उल्लेखनीय है कि राजस्थान लोक सेवाओं की प्रदायगी अधिनियम 2011 में राज्य कर्मचारियों के पेंशन संबंधी भुगतान की सेवा को अधिनियम की अनुसूची के क्रमांक 59 से 65 में सम्मिलित किया गया है। सेवा की समय पर प्रदायगी नहीं होने पर प्रतिदिन विलम्ब के लिए 500/- अर्थदण्ड (शास्ति) लगाने का प्रावधान है।

अतः राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 के परिशिष्ट viii में वर्णित निर्देशों की पालना करते हुए सभी लम्बित पेंशन प्रकरणों के निस्तारण की कार्यवाही शीघ्र करावे एवं अधीनस्थ कार्यालयों को पेंशन प्रकरण शीघ्र निस्तारण हेतु निर्देश जारी करावें। ● ह. मुख्य लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

9. निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश

क्रमांकः प.9(1) शिक्षा-5/2010 पार्ट दिनांकः 30.4.2013

दिनांक 10-11 अप्रैल, 2013 को राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर के सभागार में जिला प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारियों/उप निदेशकों (प्रो.शि.) की समीक्षा बैठक में निःशुल्क एवं निवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के सम्बन्ध में अनुभूत की जा रही कठिनाईयों एवं शॅकाओं का परीक्षण किया जाकर समय-समय पर पूर्व प्रसारित तत्संबंधी दिशा निर्देशों की निरन्तरता में निम्न दिशा निर्देश प्रदान किये जाते है :-

1. निजी संस्थाओं में प्रवेश के लिए एन्ट्री लेवल के सम्बन्ध में

निजी विद्यालयों में एन्ट्री लेवल पर कक्षाएं अलग-अलग हैं, उदाहरण के लिए कुछ विद्यालयों में कक्षा-1 तथा कुछ विद्यालयों में अलग-अलग नामों से पूर्व प्राथमिक कक्षाएं संचालित हैं, जिनकी अवधि दो या तीन वर्ष है, इस संबंध में निम्नानुसार निर्देशित किया जाता हैः-

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के परिप्रेक्ष्य में उपरोक्त स्थिति का परीक्षण कर निर्देशित किया जाता है कि विद्यालयों में प्रवेश के लिए कक्षा प्रथम अथवा पूर्व प्राथमिक शिक्षा की प्रथम कक्षा चाहे वह किसी भी नाम से संचालित हो, मान्य होगी। यहाँ यह

भी स्पष्ट किया जाता कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा की अधिकतम अवधि तीन वर्ष से अधिक नहीं होगी। पूर्व प्राथमिक कक्षा की स्थिति में बालक की न्यूनतम आयु 3 वर्ष की होगी। कुछ विद्यालय प्ले-ग्रुप भी संचालित कर रहे है लेकिन प्ले ग्रुप निःशुल्क प्रवेश के लिए मान्य नहीं होगा।

2. सत्र 2012-13 में पूर्व सत्यापित प्रवेश कार्य के पुनः सत्यापन के संबंध में

जिस विद्यालयों को 2012-13 में सत्यापन के बाद पुनःर्भरण के लिए पात्र नहीं माना गया उनमें से कुछ विद्यालय पुनः सत्यापन की माँग पर निम्नानुसार स्थिति स्पष्ट की जाती हैः-

स्थिति का परीक्षण कर निर्देशित किया जाता है कि वर्तमान सत्र में विभाग द्वारा गहनता से सत्यापन कार्य किया गया है तथा उसके बाद ही प्रवेशित छात्रों की पात्रता पर समुचित निर्णय लिया गया है। अतः ऐसे प्रकरणों पर अब पुनः विचार किया जाना उचित नहीं है।

3. अभिभावकों द्वारा निःशुल्क प्रवेशित बालकों के विद्यालय परिवर्तन के सम्बन्ध में

अभिभावक अपने बालकों को एक विद्यालय में निःशुल्क प्रवेश दिलाने के बाद टी.सी. के आधार पर अन्य निजी विद्यालय में स्थानान्तरित करना चाहते है तो ऐसी स्थिति में बालक फीस का पुनर्भरण का पात्र नहीं होगा।

अधिनियम के संबंध में परीक्षण के उपरान्त निर्देशित किया जाता है कि यदि कोई अभिभावक स्वेच्छा से अपने बालक को एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय में स्थानान्तरित करना चाहता है तो विद्यालय परिवर्तन होते ही वह बालक फीस के पुनर्भरण का पात्र नहीं माना जावेगा।

4. विद्यालय को अग्रेजी माध्यम की मान्यता के सम्बन्ध में

जो विद्यालय पूर्व में हिन्दी माध्यम से संचालित है और वे अब अंग्रेजी माध्यम से संचालन की अतिरिक्त मान्यता लेना चाहते हैं इस संबंध में निम्न प्रक्रिया अपनाई जाएः-

राजस्थान गैर सरकारी शैक्षिक संस्था नियम, 1993 के परिप्रेक्ष्य में उपरोक्त स्थिति का परीक्षण कर निर्देशित किया जाता है कि यदि कोई विद्यालय अंग्रेजी माध्यम की मान्यता लेना चाहता है तो जिला प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी कोआवेदन प्रस्तुत कर सकता है। जिला प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी पात्र पाये जाने पर विद्यालय को मान्यता प्रदान कर सकते है।

5. विद्यालय द्वारा एन्ट्री लेवल क्लास में अप्रत्याशित रूप से सीटों की वृद्धि करना

कुछ विद्यालय निःशुल्क प्रवेश हेतु सीटों की अप्रत्याशित वृद्धि कर निःशुल्क प्रवेश के लिए अधिक सीटें घोषित कर रहे है, जबकि वहाँ पर सामान्य सीटों पर ही बहुत कम प्रवेश हो रहे है, ऐसी स्थिति में निम्नानुसार कार्यवाही की जाएः-

उपरोक्त स्थिति का परीक्षण कर निर्देशित किया जाता है कि सम्बन्धित ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी ऐसे विद्यालयों को सूचीबद्ध कर इस तथ्य का गहनता से आकलन करें कि क्या विद्यालय में बढाई जा रही सीटों के आधार पर विद्यालय में आवश्यक आधारभूत सुविधाओं का विस्तार किया है अथवा नहीं तथा वृद्धि के लिए आवश्यक शिक्षकों की उपलब्धता को भी सुनिश्चित किया है अथवा नहीं। इस आंकलन के आधार पर ही सम्बन्धित ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी गुणावगुण के आधार पर औचित्य का निर्णय करें तथा बढ़ाई गई सीटों के बारे में स्पष्ट दिशा निर्देश विद्यालयों को प्रदान करें तथा तदानुसार ही प्रवेश कार्य सम्पादित करावें।

6. सत्र 2013-14 में मान्यता प्राप्त विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश के सम्बन्ध में

सत्र 2013-14 में जिन विद्यालयों को नवीन मान्यता दी जा रही है, उनमें भी चालू सत्र में निःशुल्क प्रवेश कार्य निम्नानुसार किया जाएगा-

उपरोक्त स्थिति का परीक्षण कर निर्देशित किया जाता है कि विभाग द्वारा निःशुल्क प्रवेश के लिए घोषित अंतिम तिथि 16 जुलाई, 2013 निर्धारित की गई है। अतः नवीन मान्यता प्राप्त विद्यालय भी मान्यता प्राप्ति के तुरन्त बाद निःशुल्क शिक्षण हेतु प्रवेश का अपना टाईम फ्रेम प्रपत्र-13 में जारी कर सम्बन्धित ब्लॉक प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी को भिजवाते हुए निःशुल्क सीटों पर प्रवेश दे सकते है।

7. अभिभावकों से प्रतिवर्ष आय प्रमाण पत्र लिया जाना

निःशुल्क प्रवेश के लिए असुविधाग्रस्त समूह एवं कमजोर वर्ग में सम्मिलित किये गये बालकों की एक श्रेणी अभिभावकों की वार्षिक आय (वर्तमान में 2.5 लाख से कम) के आधार पर निर्धारित की हुई है ऐसे बालकों से प्रतिवर्ष आय का प्रमाण पत्र लेना है।

उपरोक्त परिस्थिति का सरकार द्वारा जारी अधिसूचनाओं का परीक्षण कर निर्देशित किया जाता है कि आय के आधार पर प्रवेशित बालकों के अभिभावकों से प्रतिवर्ष आय का प्रमाण पत्र लेना होगा तथा उस आय के आधार पर ही फीस के पुनर्भरण की पात्रता पर विचार किया जाएगा। यहां यह भी स्पष्ट किया जाता है कि वर्तमान निर्देशों में आय प्रमाण पत्र के लिए अभिभावक द्वारा दो उत्तरदायी व्यक्तियों की साक्षी में दिया गया शपथ पत्र जो नोटेरी पब्लिक/कार्यपालक मजिस्ट्रेट द्वारा सत्यापित हो, मान्य होगा।

8. निजी विद्यालयों में निःशुल्क सीटों पर प्रवेशित बालकों की पाठ्यपुस्तकों के संबंध में

निजी विद्यालय अपने यहाँ अधिकांशतः एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम पर आधारित प्राईवेट प्रकाशकों की पुस्तकें आदि उपयोग में ले रहे है, जिनकी कीमत राजस्थान पाठ्यपुस्तक मण्डल द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की तुलना में कई गुणा अधिक है। ऐसी स्थिति में बालकों को पाठ्यपुस्तकों की उपलब्धता निम्नानुसार सुनिश्चित की जाएगीः-

उपरोक्त परिस्थिति का परीक्षण किया गया। राज्य सरकार द्वारा प्रति बालक निर्धारित व्यय (यूनिट कॉस्ट) में पाठ्यपुस्तकों की कीमत सम्मिलित की गई है। अतः सम्बन्धित पक्षों को निर्देशित किया जाता है कि निजी विद्यालयों में निःशुल्क सीटों पर प्रवेश लेने वाले बालकों को पाठ्यपुस्तकें विद्यालय द्वारा निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएगी।

9. निःशुल्क प्रवेश हेतु निवास प्रमाण पत्र के सम्बन्ध में

बैठक में अवगत कराया गया कि निःशुल्क सीटों पर प्रवेश हेतु आवेदन पत्र के साथ अभिभावक को निवास स्थान का प्रमाण पत्र संलग्न करना होता है। निवास प्रमाण पत्र के संदर्भ में सक्षम अधिकारी निम्नानुसार माना जावेः-

उपरोक्त बिन्दु का परीक्षण किया जाकर निर्देशित किया जाता है कि बालक के निवास के सम्बन्ध में ग्रामीण क्षेत्र के लिए संबंधित ग्राम पंचायत एवं शहरी क्षेत्र के लिए संबंधित शहरी नगर निकाय द्वारा प्रदत्त प्रमाण पत्र स्वीकार कर लिया जावे।

10. जिला शिक्षा अधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि जिला प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी एवं जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक अपने-अपने परिक्षेत्र के विद्यालयों में सत्र 2013-14 के प्रवेश कार्य की प्रभावी मॉनिटरिंग करें तथा प्रवेश कार्य सम्पन्न होते है। सत्यापन कार्य करवाएं एवं निदेशालय, प्रारम्भिक शिक्षा, बीकानेर द्वारा घोषित कार्यक्रम अनुसार पुनर्भरण प्रस्ताव समय पर प्रेषित करें जिससे सत्र 2013-14 में विद्यालयों को नियमित पुर्नभरण किया जा सके।

ह. प्रमुख शासन सचिव
स्कूल शिक्षा विभाग

(**नोट :** स्थानाभाव के कारण प्रपत्र यहां प्रकाशित नहीं किए जा रहे हैं।)

10. राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालय स्तर पर क्रमोन्नत होने पर प्राथमिक विद्यालय को पृथक करने के सम्बन्ध में

राजस्थान सरकार
स्कूल शिक्षा विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर

क्रमांक : 15059-60 दिनांक : 24-1-13

जिला शिक्षा अधिकारी,
माध्यमिक शिक्षा/प्रारम्भिक शिक्षा
जिला (समस्त) .....

विषय :- राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत होने पर पृथक हुए प्राथमिक विद्यालय हेतु आवश्यक भौतिक सुविधाएं सुनिश्चित करने के संबंध में।

उपरोक्त विषयान्तर्गत लेख है कि वर्तमान में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत होने पर दो वर्ष बाद प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से 5) हेतु प्राथमिक विद्यालय को माध्यमिक विद्यालय से पृथक कर दिया जाता है जिससे वह पुनः भवन विहीन प्राथमिक विद्यालय की श्रेणी में आ जाता है जबकि उस मूल विद्यालय में ही सर्व शिक्षा अभियान एवं अन्य योजनाओं समस्त मूलभूत सुविधाएं प्ले एलीमेन्टस सहित उपलब्ध करा दी जाती है। इस प्रकार प्राथमिक विद्यालय को पृथक करने से भवन विहीन राजकीय प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में लगातार वृद्धि होती रहती है।

अतः उपरोक्त परिपेक्ष्य में निर्देशित किया जाता है कि :-

1. उ.प्रा.वि. से मा.वि. में क्रमोन्नत होने पर प्राथमिक विद्यालयों को पृथक करते समय उस प्रा.वि. की कक्षाओं (1 से 5) की छात्र संख्या व आर.टी.ई. अधिनियम के आधार पर मूल विद्यालय भवन में ही आवश्यकतानुसार कक्षाकक्षों सहित समस्त मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराई जावे। उक्त के पश्चात् शेष सुविधाएं आदि क्रमोन्नत होने वाले विद्यालय की कक्षाओं के विद्यार्थियों हेतु उपलब्ध कराई जा सकती है।
2. राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय से माध्यमिक विद्यालयों में क्रमोन्नत होने के पश्चात् उन क्रमोन्नत विद्यालयों को आवश्यक अतिरिक्त भौतिक सुविधाएं यथा कक्षाकक्ष, प्रधानाचार्य कक्ष, प्रयोगशाला कक्ष, पुस्तकालय आदि राष्ट्रीय माध्यमिक अभियान अन्तर्गत स्वीकृत की जाकर उपलब्ध कराई जावे।
3. पृथक हुए प्राथमिक विद्यालय की 1 से 5 कक्षाओं का संचालन मूल विद्यालय भवन में ही किया जावे एवं तदानुसार इस प्राथमिक विद्यालय को भवन विहीन विद्यालय की श्रेणी में नहीं माना जावे।

इससे उच्च प्राथमिक विद्यालयों के माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत होने पर भवन विहीन प्राथमिक विद्यालयों की संख्या में होने वाली बढ़ोत्तरी पर अंकुश लगाते हुए निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के अनुसार प्राथमिक विद्यालयों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराया जाना संभव हो सकेगा। कृपया उक्त निर्देशों की पालना तत्काल कराया जाना सुनिश्चित करें।

ह. प्रमुख शासन सचिव

11. कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी किसी एक सहशैक्षिक गतिविधि में आवश्यक रूप से लेंगे भाग

कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर
परिपत्र

क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22444/2012-13
दिनांक 2.5.13

विषय :- कक्षा 9 से 12 तक अध्ययनरत विद्यार्थियों को किसी एक सहशैक्षिक गतिविधि में भाग लेने के संबंध में

प्रत्येक विद्यार्थी का शिक्षण कार्य के साथ-साथ सहशैक्षिक गतिविधि में भाग लेना शिक्षा का अनिवार्य अंग है। इससे विद्यार्थी में सामाजिकता एवं समूह भावना के गुण विकसित होते हैं। इसलिये विद्यालयों में बहुत-सी सहशैक्षिक गतिविधि संचालित होती रहती है। इन गतिविधियों विद्यार्थी का भाग लेना अनिवार्य है। शैक्षिक सत्र 2013-14 में कक्षा 9 से 12 तक अध्ययनरत अथवा नवीन प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित में से किसी एक गतिविधि में भाग लेना अनिवार्य होगा :-

1. एन.सी.सी.
2. राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)
3. स्काउट/गाइड
4. खेलकूद
5. इको क्लब (पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से संचालित)

इस हेतु निम्नलिखित निर्देश दिये जाते हैं :-

1. विद्यार्थी द्वारा विद्यालय में नवीन प्रवेश लेने पर उससे प्रवेश फार्म के साथ-साथ एक गतिविधि चयनित करने के लिए लिखित में आवेदन लिया जाये।
2. विद्यालय में पूर्व से अध्ययनरत विद्यार्थी से सत्रारम्भ में गतिविधि चयन का आवेदन प्राप्त किया जाखे।
3. विद्यालय में संचालित गतिविधियों में से ही विद्यार्थी एक गतिविधि

का चयन करेगा।

4. गतिविधि के प्रभारी अध्यापक का यह दायित्व होगा कि वह कक्षावार रिकार्ड संधारित करें।
5. प्रत्येक विद्यार्थी के गतिविधि में भाग लेने का सत्र पर्यन्त निरन्तर मूल्यांकन किया जाये। जिसका लिखित में रिकार्ड संधारित करे।

जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) का यह दायित्व है कि वह उक्त निर्देश सभी अधीनस्थ माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों को जारी कर पालना सुनिश्चित करावे।

ह. निदेशक

12. विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं की शिक्षण व्यवस्था के सम्बन्ध में

राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्

द्वितीय एवं तृतीय तल, ब्लॉक-5, डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल परिवार
जवाहर लाल नेहरु मार्ग, जयपुर-17

क्रमांक : राप्राशिप/जय/आईईडी/12-13/17863 दि. 25.3.13

निदेशक,
माध्यमिक/प्रारम्भिक शिक्षा,
राजस्थान, बीकानेर

विषय :- विशेष आवश्यकता वाले (निःशक्त) बालक-बालिकाओं की शिक्षण व्यवस्था के संबंध में।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अन्तर्गत प्रत्येक 6 से 14 आयु वर्ग के बालक-बालिका को प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु वैधानिक प्रावधान किया गया है। यह आवश्यक है कि विशेष आवश्यकता वाले (निःशक्त) बालक-बालिकाओं को राज्य में संचालित गैर सरकारी सामान्य विद्यालयों में बिना भेदभाव के प्रवेश मिले तथा उन्हें आवश्यक सम्बलन प्राप्त हो। अतः कृपया सुनिश्चित करावें कि राज्य के किसी भी निजी/राजकीय विद्यालयों में विशेष आवश्यकता वाले बालक-बालिकाओं को उसकी विकलांगता के कारण प्रवेश से वंचित नहीं किया जावें तथा प्रवेश पश्चात् "निःशक्तजन अधिनियम-1995" एवं "शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009" में वर्णित प्रावधानुसार इनकी शिक्षण व्यवस्था सामान्य कक्षा-कक्ष में सामान्य बालक-बालिकाओं के साथ हों एवं इन्हें आवश्यक संबलन प्राप्त हो। उक्त की पालना हेतु एवं भविष्य में कोई भी शिकायत प्राप्त होने पर संबंधित संस्था के विरुद्ध आवश्यक कार्यवाही करने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करने का श्रम करें।

ह. आयुक्त

माह : अगस्त, 2013

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.8.2013	गुरुवार	उदयपुर	5	पर्यावरण अध्ययन	3	मच्छर और हम
2.8.2013	शुक्रवार	बीकानेर	8	संस्कृत	1	शुभाषितानि
3.8.2013	शनिवार	जयपुर	9	राजस्थान अध्ययन	1	राजस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
5.8.2013	सोमवार	जोधपुर	7	विज्ञान	3	रेशों से वस्त्र तक
6.8.2013	मंगलवार	उदयपुर	8	हिन्दी	3	सिंधु घाटी सभ्यता
7.8.2013	बुधवार	बीकानेर	6	सामाजिक विज्ञान	2	सौरमंडल
8.8.2013	गुरुवार	जयपुर	10	हिन्दी	1	माता का आँचल
10.8.2013	शनिवार	जोधपुर	9	विज्ञान	3	परमाणु एवं अणु
12.8.2013	सोमवार	उदयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	3	खतरे में जीवित रहने का कौशल
13.8.2013	मंगलवार	बीकानेर	9	राजस्थान अध्ययन	6	जल संरक्षण : आज की आवश्यकता
14.8.2013	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		हमारी स्वाधीनता
16.8.2013	शुक्रवार	जोधपुर	9	राजस्थान अध्ययन	3	राजस्थान की कला एवं संस्कृति
17.8.2013	शनिवार	उदयपुर	12	हिन्दी	3	अतीत में दबे पाँव
19.8.2013	सोमवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		हमारी भाषायें-(संस्कृत दिवस)
21.8.2013	बुधवार	जयपुर	9	विज्ञान	2	क्या हमारे आस पास के पदार्थ शुद्ध है
26.8.2013	सोमवार	जोधपुर	10	सामाजिक विज्ञान	4	जाति, धर्म और लैंगिक मसले
27.8.2013	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		कर्म योग के प्रणेता श्री कृष्ण
29.8.2013	गुरुवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		ध्यानचन्द जयन्ती
30.8.2013	शुक्रवार	जयपुर	7	सामाजिक विज्ञान	2	मौसम एवं जलवायु
31.8.2013	शनिवार	जोधपुर	10	हिन्दी	5	मैं क्यों लिखता हूँ?

ह. साधना जोशी
निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक कक्षाओं में कालांश व्यवस्था एवं शुल्क विवरण सत्र 2013-14

कक्षावार साप्ताहिक कालांशों की संख्या एवं शुल्क के बारे में प्राय: संस्था प्रधानों द्वारा शिविरा से पत्र/फोन से जानकारी मांगी जाती रहती है। यह पूछताछ उचित ही है। हमारे निवेदन पर कालांश एवं शुल्क का विवरण तैयार कर उपलब्ध करवाने के लिए हम श्री उमाशंकर किराडू के प्रति आभारी है।

–वरिष्ठ संपादक

1. शैक्षिक सत्र 2013-14 कालांश व्यवस्था कक्षा-9 तथा कक्षा-10

क्र.सं.	विषय		कलांश : 48
1.	भाषाएं:		17
	(1) हिन्दी	6	
	(2) अंग्रेजी	6	
	(3) तृतीय भाषा	5	
2.	विज्ञान		8
3.	सामाजिक विज्ञान		8
4.	गणित		8
5.	राजस्थान अध्ययन		2
6.	शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा (खेल प्रवृतियां "0" कालांश)		2
7.	'फाउण्डेशन ऑफ इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी'		2
8.	(1) सामाजोपयोगी उत्पादक कार्य एवं समाज सेवा		1+'0'
	(2) कला शिक्षा		(कालांश)
9.	नैतिक शिक्षा : प्रार्थना के साथ तथा अन्य सभी विषयों के अध्ययन के साथ समाहित		
10.	पुस्तकालय : पुस्तकालय से पुस्तकों का आदान-प्रदान "0" कालांश/मध्य अन्तराल में		

नोट : ऐसे विद्यालय जहाँ कम्प्यूटर लेब की सुविधा नहीं है, वहाँ के संस्था प्रधान, पाठ्यक्रम एवं शाला की स्थानीय आवश्यकता के अनुसार 'फाउण्डेशन ऑफ इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी' के लिए निर्धारित कालांशों का समायोजन अन्य विषयों के शिक्षण में कर सकते है।

2. शैक्षिक सत्र 2013-14 कालांश व्यवस्था कक्षा-11

क्र.सं.	विषय		कालांश : 48
1.	हिन्दी		6
2.	अंग्रेजी		6
3.	राजस्थान अध्ययन		3
4.	जीवन कौशल		3
5.	ऐच्छिक विषय		30
	प्रथम	10	
	द्वितीय	10	
	तृतीय	10	
6.	नैतिक शिक्षा: प्रार्थना सभा, उत्सव आयोजनों एवं सभी विषयों के शिक्षण में समाहित है।		
7.	पुस्तकालय: पुस्तकालय से पुस्तकों का आदान-प्रदान "0" कालांश/मध्य अन्तराल में।		
8.	शारीरिक शिक्षा: शारीरिक शिक्षा एवं खेल गतिविधियां विद्यालय समय के पूर्व एवं पश्चात अपेक्षित।		

नोट : कक्षा-11/उपाध्याय उत्तीर्ण नियमित विद्यार्थियों को ग्रीष्मकालीन अवकाश समाज सेवा योजना शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा। शिविर की ग्रेडिंग का अंकन कक्षा-12 की अंकतालिका/प्रमाणपत्र में किया जायेगा। राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) में भाग लेने वाले विद्यार्थी इस शिविर से मुक्त रहेंगे, किन्तु इन विद्यार्थियों की अंकतालिका/प्रमाणपत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) में भाग लिया का अंकन किया जायेगा।

3. शैक्षिक सत्र 2013-14 कालांश व्यवस्था कक्षा-12

क्र.सं.	विषय	कालांश : 48
1.	हिन्दी	6
2.	अंग्रेजी	6
3.	राजस्थान अध्ययन	3
4.	समाज सेवा योजना (नियमित विद्यार्थियों के लिए) कक्षा 11 उत्तीर्णोपरान्त ग्रीष्मावकाश में।	
5.	ऐच्छिक विषय प्रथम-11, द्वितीय-11, तृतीय-11 (प्रयोगात्मक कार्य वाले विषयों में 7 कालांश सैद्धान्तिक एवं 4 कालांश प्रायोगिक के)	33
6.	नैतिक शिक्षा : प्रार्थना सभा, उत्सव आयोजनों एवं सभी विषयों के शिक्षण में समाहित है।	
7.	पुस्तकालय : पुस्तकालय से पुस्तकों का आदान-प्रदान "0" कालांश/मध्य अन्तराल में।	
8.	शारीरिक शिक्षा: शारीरिक शिक्षा एवं खेल गतिविधियाँ विद्यालय समय के पूर्व एवं पश्चात अपेक्षित।	

विद्यालय शुल्क (रा.मा.वि./उ.मा.वि.) विवरण

राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा-9 से 12 तक वर्तमान में प्रचलित विद्यालय शुल्क का विवरण विद्यालयों की जानकारी हेतु निम्नानुसार है:-

वर्ग	कक्षा 9-10 (प्रति वर्ष)	कक्षा 11-12 (प्रति वर्ष)
1. छात्र निधि	200/-	300/-
2. टंकण/विज्ञान	-	100/-
3. स्काउट/गाईड	5/-	5/-
4. एस यू पी डब्ल्यू	50/-	-

नोट: छात्रनिधि शुल्क अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग की छात्र एवं छात्राओं से 50 प्रतिशत लिया जाता है।

–उमाशंकर किराडू
सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर
मो. 9413726918

पुरस्कार एवं प्रोत्साहन

विद्यार्थी हित में शासन के बढ़ते कदम

विद्यार्थियों को मिले लैपटॉप व साइकिल क्रय हेतु चैक

स्कूली शिक्षा स्तर से ही बालक-बालिकाओं में कम्प्यूटर कौशल विकसित करने के उद्देश्य से राजस्थान में कई योजनाएं चलाई जा रही है। राज्य सरकार ने इस दिशा में एक अनूठी पहल करते हुए **राजीव गाँधी विद्यार्थी डिजिटल योजना** प्रारम्भ की है, जिसके अन्तर्गत राजकीय विद्यालयों में अध्ययन कर कक्षा आठवीं में प्रथम स्थान हासिल करने वाले तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में मैरिट में आने वाले 10-10 हजार विद्यार्थियों को 14 इंच के लैपटॉप दिए जा रहे हैं जिनकी कीमत लगभग 19000 रुपये है। इसी प्रकार बालिका शिक्षा को प्रोन्नत करने के लिए राजकीय विद्यालयों की नौवीं कक्षा में प्रवेश लेने वाली सभी बालिकाओं को साइकिल क्रय करने हेतु 2500 रुपये की दर से चैक प्रदान किए जा रहे हैं।

वस्तुतः पुरस्कार और प्रोत्साहन वे दो शब्द हैं जिनकी सर्वाधिक अहमियत विद्यार्थी जीवन में ही पता लगती है। पुरस्कार से शैक्षणिक माहौल बनता है। विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा कायम होती है तथा आगे बढ़कर लक्ष्य को हासिल करने का ज़ज्बा पैदा होता है। इसी तरह प्रोत्साहन विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए प्रेरित करता है। पुरस्कार में लेपटॉप तथा बालिकाओं का आत्म विश्वास बढ़ाने तथा उन्हें शिक्षा हेतु प्रोत्साहित करने के लिए साइकिल हेतु 2500 रुपये का चैक वितरण राजस्थान सरकार की विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण योजना है, जो प्रदेश के विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति लगन को प्रज्ज्वलित करेगी।

लेपटॉप व साइकिल हेतु चैक वितरित करने के लिए राज्यस्तरीय समारोह गत माह 25 जुलाई 2013 वार गुरुवार के दिन गुलाबी नगर, जयपुर स्थित इन्दिरा गाँधी पंचायती राज संस्थान के भव्य प्रेक्षागृह में प्रातः 10.00 बजे आयोजित किया गया जिसके मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत तथा अध्यक्ष माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद थे।

मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, समारोह के अध्यक्ष माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद एवं अन्य अतिथि महानुभावों ने जैसे ही प्रेक्षागृह में प्रवेश किया, वहाँ उपस्थित दर्शकों ने खड़े होकर करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया। माँ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन तथा पुष्पार्पण के साथ ही यह राज्यस्तरीय समारोह शुरू हुआ।

समारोह का परिचय एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रमुख शासन सचिव, स्कूल शिक्षा श्रीमती वीनू गुप्ता ने कहा कि आज मैरिट में स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को लैपटॉप तथा राजकीय स्कूलों में कक्षा नौवीं में प्रवेश लेने वाली छात्राओं को साइकिल क्रय करने हेतु चैक वितरित किए जा रहे हैं। आपने कहा कि आज से प्रारम्भ होकर 29 जुलाई तक चलने वाले कार्यक्रमों में जिला एवं खण्ड स्तर तक एक लाख दस हजार से भी अधिक लैपटॉप तथा लगभग चार लाख बालिकाओं को चैक वितरित किए जाएंगे।

प्रसन्नता के साथ प्रमुख शासन सचिव महोदया ने कहा कि आज लैपटॉप हर विद्यार्थी चाहता है। इससे ज्ञान प्राप्ति का दायरा बढ़ जाता है जो बोर्ड परीक्षा परिणामों को निश्चय ही बेहतर बनाएगा। बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने में साइकिल हेतु चैक वितरित करने की योजना पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि इससे बालिकाओं का नामांकन एवं ठहराव बढ़ेगा जो गुणवत्तायुक्त शिक्षा का आधार होगा। आपने अभिभावकों एवं बच्चों को बधाई देते हुए अपील की कि कठिन मेहनत करके हमारे छात्र-छात्राएं बेहतर परीक्षा परिणाम दें तथा राज्य व समाज का नाम रोशन करें।

समारोह की भव्यता व उसमें समाहित प्रसन्नता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि चारों तरफ कैमरों की चकाचौंध के साथ हर्षित दर्शक बार-बार करतल ध्वनि कर रहे थे।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा राज्य की जनता, विशेषकर शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में लागू की गई कल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख करते हुए समारोह में पधारे माननीय अतिथिगण श्री प्रतापसिंह खाचरियावास माननीय विधायक, श्रीमती ज्योति खण्डेलवाल, माननीय महापौर, श्री हजारीलाल नागर, माननीय जिला प्रमुख, श्री महेश जोशी, माननीय संसद सदस्य, श्री शान्ति धारीवाल, माननीय नगरीय विकास मंत्री, श्री एमामुद्दीन अहमद खान, माननीय चिकित्सा मंत्री ने इन योजनाओं का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार कर लाभ उठाने की अपील उपस्थित महानुभावों से की।

इस अवसर पर शासन सचिव, स्कूल शिक्षा श्री प्रवीण गुप्ता, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद के आयुक्त श्री भास्कर ए. सावन्त सहित विभाग के उच्च अधिकारी, शिक्षाविद्, अभिभावक एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहें।

समारोह में मुख्य अतिथि राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जब उद्बोधन देने के लिए पधारे तो तालियों की गड़गड़ाहट से प्रेक्षागृह गूँज उठा। अपने सहज एवं आत्मीय उद्बोधन में मुख्यमंत्री जी ने कहा कि एक महत्वपूर्ण बजट घोषणा की क्रियान्विति होते देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हो रही है। घोषणा करना तो आसान है लेकिन उन्हें पूरा करना बड़ा मुश्किल है। आज जिन बालक-बालिकाओं को लैपटॉप एवं साइकिल क्रय करने हेतु चैक प्राप्त हो रहे हैं, उनके चेहरों पर छायी खुशी कल्पना से बाहर की बात है। हमारे नौजवान तथा छात्र-छात्राएं जो सपने देख रहे हैं, उन्हें पूरा करना सरकार का कर्तव्य है और हम उन्हें पूरा करने के लिए कृतसंकल्पित हैं।

मुख्यमंत्री जी ने आगे कहा कि हमने पीसी टेबलेट खरीदने के लिए 3.50 लाख छात्र-

छात्राओं को छः-छः हजार रुपये के चैक प्रदान किए हैं। अब हमारा युवा सूचना एवं प्रौद्योगिकी (IT) के ज्ञान से परिचित होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। मैं चाहता हूँ कि IT की क्रान्ति में राज्य के छात्र किसी से पीछे नहीं रहें। मुझे विश्वास है कि लैपटॉप व पीसी टेबलेट के बल पर हमारे छात्र अधिक बेहतर पढ़ाई व परीक्षाओं में उत्तम प्रदर्शन कर सकेंगे। इससे गुणवत्ता बढ़ेगी तथा वह मानव संसाधन के रूप में राज्य का विकास करने में मददगार सिद्ध होगी।

बालिका शिक्षा के विकास के लिए गार्गी पुरस्कार, ट्रांसपोर्ट वाउचर, इन्दिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार आदि का जिक्र करते हुए माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हमारी सोच एक-एक बालिका को स्कूल में प्रवेश दिलाकर अच्छी से अच्छी शिक्षा उन्हें उपलब्ध करवाने की है। उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि राजस्थान शीघ्र ही एज्यूकेशन हब के रूप में राष्ट्र में पहचान बनाएगा। आपने पुरस्कार प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को मुबारकबाद देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद ने राजस्थान के विकास का उल्लेख करते हुए कहा कि उत्तरी भारत में केवल राजस्थान ने ही सराहनीय प्रगति की है। उन्होंने राज्य में चल रही कल्याणकारी योजनाओं की प्रशंसा करते हुए राज्य सरकार व आम जनता को बधाई दी। आपने कहा कि जयपुर देश का सबसे साफ-सुथरा शहर है। जयपुर आकर हर कोई प्रसन्न ही होता है। विभिन्न वर्गों को दी जा रही पेंशन योजनाओं का जिक्र करते हुए आपने कहा कि केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजनाओं की राजस्थान से बेहतर क्रियान्विति किसी अन्य राज्य में नहीं हो रही है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष महोदय के कर कमलों से 104 छात्र-छात्राओं को लैपटॉप तथा 20 छात्राओं को साइकिल क्रय करने हेतु चैक प्रदान किए गए। लैपटॉप व चैक वितरण के दौरान लगातार बज रही तालियां और फोटोग्राफी व विडियोग्राफी दर्शकों की प्रसन्नता को व्यक्त कर रही थी।

समारोह के अन्तिम सोपान के रूप में धन्यवाद एवं आभार प्रकट करते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. वीना प्रधान ने विश्वास दिलाया कि राजस्थान का स्कूल शिक्षा विभाग शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता प्राप्त करने तथा छात्र-छात्राओं के अधिकतम हित में योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन करने में कोई कसर नहीं रखेगा।

ये लैपटॉप स्कूली विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को देखते हुए विशेष तौर से तैयार किए गए हैं। इन्हें राजकॉम्प के माध्यम से खरीदा गया है। लैपटॉप में अनेक प्रोग्राम शुमार किए गए हैं। इसमें अधुनातन (Latest) विंडो है, ऑफिस और वर्ड में काम किया जा सकता है। अधिकांश पाठ्यपुस्तकों को ई-बुक्स के रूप में इसमें डाला गया है। ये लैपटॉप एक वर्ष की वारंटीशुदा है।

लैपटॉप चलाना सिखाने के लिए राजस्थान नॉलेज कॉर्पोरेशन की तरफ से विद्यार्थियों को अपने आईटी ज्ञान केन्द्रों पर निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा।

इस प्रकार मैरिट में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को लैपटॉप तथा बालिकाओं को साइकिल हेतु चैक वितरण का यह भव्य राज्यस्तरीय समारोह सम्पन्न हुआ। पुरस्कार प्राप्त बालक-बालकाओं के चेहरों पर प्रसन्नता सहज ही में देखी जा सकती थी। अभिभावक भी हर्षित थे अपने बच्चों की उपलब्धियाँ देखकर। समारोह का संचालन राजेन्द्र कुमार शर्मा 'हंस' ने किया।

रपट-ओमप्रकाश सारस्वत, व.स.
साथ में-महावीर प्रसाद गर्ग, प्रधानाचार्य
राजकीय उ.मा. विद्यालय, झर (जयपुर)

राजीव गांधी विद्यार्थी डिजिटल योजना

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की वर्ष 2012-13 की बजट घोषणा संख्या 128 के तहत 'राजीव गांधी विद्यार्थी डिजिटल योजना' की घोषणा की गयी थी। इसके अन्तर्गत सत्र 2011-12 में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में मैरिट के अनुसार प्रथम 10-10 हजार विद्यार्थियों और प्रत्येक राजकीय विद्यालय की कक्षा 8 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार के रूप में लैपटॉप देय है। इसकी क्रियान्विति में राज्य में जिला और ब्लॉक स्तरीय लैपटॉप वितरण समारोह दिनांक 25 जुलाई, 2013 से 29 जुलाई, 2013 तक आयोजित कर 53,734 प्रतिभावान विद्यार्थियों को लैपटॉप वितरित किए जा रहे हैं। इन लैपटॉप्स में ई-कन्टेन्ट अधिगम सामग्री यथा डिजिटल लिट्रेसी, एक्टिवीटी बुक्स, शब्दकोश, पाठ्यपुस्तकें, ऑडियो पाठ, टेस्ट सीरिज आदि रुचिकर तरीके से अपलौड की गयी है। सभी लैपटॉप प्राप्त विद्यार्थियों को लैपटॉप के उपयोग की जानकारी देने हेतु राजस्थान नॉलेज कारपोरेशन लिमिटेड, जयपुर के ज्ञान केन्द्रों पर 6 घण्टे का प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय की वर्ष 2013-14 की बजट घोषणा संख्या 173 के अनुसार 'राजीव गांधी विद्यार्थी डिजिटल योजना' को जारी रखते हुए सत्र 2012-13 के 53,923 प्रतिभावना विद्यार्थियों को भी लैपटॉप देय है, जो अगले माह अगस्त, 2013 में वितरित किये जाएंगे। इस योजना का और विस्तार करते हुए प्रत्येक राजकीय विद्यालय में दूसरे से ग्यारहवां स्थान प्राप्त करने वाले कुल 3.50 लाख विद्यार्थियों को टेबलेट-पीसी क्रय हेतु 6,000 रुपये प्रति विद्यार्थी चैक गत ग्रीष्मावकाश हेतु विद्यालय बन्द होने से पूर्व 14 मई, 2013 को वितरित किये जा चुके है। इस योजना से विद्यार्थियों को कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट का उपयोग करने की प्रेरणा मिलेगी।

साइकिल वितरण योजना

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा वर्तमान सरकार के चार वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर गत 13 दिसम्बर 2012 को 'साइकिल वितरण योजना' के सम्बन्ध में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की दृष्टि से कक्षा 8 उत्तीर्ण करने के पश्चात् राजकीय विद्यालय की कक्षा 9 में प्रवेश लेने पर प्रत्येक बालिका को साइकिल उपलब्ध कराये जाने की घोषणा की गयी थी। इसकी क्रियान्विति हेतु दिनांक 25 जुलाई 2013 से 29 जुलाई 2013 तक जिला और ब्लॉक स्तरीय लैपटॉप वितरण समारोह के अवसर पर और दिनांक 25 जुलाई 2013 को प्रत्येक विद्यालय में साइकिल क्रय हेतु चैक वितरण समारोह आयोजित कर 2,500 रुपये प्रति बालिका चैक वितरित किये जाएंगे। इस योजनान्तर्गत अनुमानित 4 लाख बालिकाओं को चैक वितरित किये जायेंगे।

बाल मनोविज्ञान

बच्चों की प्रशंसा कीजिये पर सोच समझकर

❒ रूपनारायण काबरा

प्रायः लोग यही मानते हैं कि प्रशंसा से बच्चे का आत्मविश्वास बनता है और उसमें सुरक्षा की भावना जागती है, वह प्रोत्साहित होता है और प्रसन्न भी। मगर कभी-कभी वास्तव में प्रशंसा बच्चे में तनाव एवं अशिष्ट व्यवहार का कारण भी बन सकती है। ऐसा क्यों होता है, कब होता है, इसे समझना जरूरी है। जब अभिभावक कहते हैं, ''तुम तो बहुत ही अच्छे बच्चे हो,'' तो बालक इसे स्वीकारेगा ही भले ही उसकी स्वयं की धारणा अपने बारे में इसके विपरीत हो। जब वह जानता है कि वह अच्छा नहीं है तो खामखाह की तारीफ उसे उलटे गलत व्यवहार करने को प्रेरित करती है क्योंकि वह दिखाना चाहेगा कि उसका सच्चा स्वरूप क्या है? आप उसे यों ही प्रशंसा करके बुद्धू नहीं बना सकते। अपने सार्वजनिक स्वरूप के बारे में उसकी अपनी स्वयं की जो मान्यता है वह उसे ही सही मानता है और अनावश्यक प्रशंसा को अपना एक प्रकार का अपमान समझता है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि नवीन मनोविश्लेषणात्मक मान्यताओं में प्रशंसा का महत्व ही नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रशंसा का उपयोग भी उच्च शक्ति की एन्टीबायोटिक औषधि के रूप में सावधानी एवं बुद्धिमत्तापूर्वक किया जाना है। इसका प्रयोग सही समय एवं सही स्थिति में करना चाहिए। प्रशंसा भी एक उच्च शक्ति वाली संवेगात्मक औषधि है। सबके प्रमुख सावधानी यही है कि प्रशंसा का प्रयोग बालक के ''सफल प्रयास'' के संदर्भ में ही किया जाना चाहिए उसके व्यक्तित्व या प्रकृति के संबंध में नहीं।

जब बच्चा स्वतः ही आपके जूतों की पॉलिश कर देता है, कमरे की सफाई कर देता है तो आप द्वारा की गई प्रशंसा का यह कथन उचित है कि ''तुमने कितने परिश्रमपूर्वक अमुक कार्य किया है और कितना अच्छा किया है।'' लेकिन प्रशंसा के ये शब्द कि, ''तुम बहुत अच्छे हो, चरित्रवान हो,'' संदर्भहीन एवं अनुपयुक्त है। प्रशंसा के शब्द बच्चे के कार्य का सही और शुद्ध प्रतिबिम्ब हो अर्थात् उसके प्रयास की वास्तविक प्रशंसा हो न कि उसके व्यक्तित्व की।

प्रशंसा का सही तरीका समझने के लिये इस उदाहरण को देखिये-

बाथरूम की सभी प्लास्टिक की बाल्टियां, टब, मग इत्यादि गन्दे पड़े हैं, उन पर मैल की तह चढ़ी हुई है। बच्चे ने रविवार की छुट्टी पर अपने मन से ही इन सबको साफ कर दिया। माँ प्रसन्न हुई, प्रभावित हुई और बोली-

माँ-मोनू, कब से बाल्टियां वगैरह गन्दी पड़ी थीं। मैं तो सोच के ही रह जाती थी आज तुमने इन्हें साफ कर दिया, वह भी डेढ़ दो घंटे में ही?

मोनू-हाँ, माँ मैंने कर दिया?

माँ-मैल की कितनी परत चढ़ गई थी!

मोनू-मैंने सब साफ कर दी।

माँ-कितना शानदार काम किया तुमने!

मोनू-हाँ, माँ अब सब अच्छे लगते हैं, सुन्दर लगते हैं न।

माँ-अब तो बाल्टियां कितनी सुन्दर लगती हैं, मानो नई लाए हों!

मोनू-हाँ, माँ अच्छी लगने लगी हैं।

माँ-बेटे, शुक्रिया।

मोनू-अच्छा माँ।

माँ के शब्दों से बालक मोनू को अपने परिश्रम एवं प्रयास पर गर्व हुआ, प्रसन्नता हुई। उस दिन उसकी इच्छा हुई कि शाम को आ के पिताश्री भी उसके काम को सराहें तो और भी अच्छा लगेगा और पिता को भी सराहना (काम की) करनी ही चाहिये अनदेखा नहीं छोड़ना है।

इसके विपरीत बालक के व्यक्तित्व की तारीफ में पिता द्वारा कहे गये, निम्न शब्द वह असर नहीं डालेंगे-

''तुम तो शानदार, जोरदार व्यक्ति हो मोनू। तुम तो माँ का कितना ध्यान रखते हो, तुम तो मातृभक्त हो, सेवक हो। तुम्हारे बिना तुम्हारी माँ यह सब कैसे कर पा सकती। ''ये शब्द तो बच्चे को चिंतित कर डालेंगे, एक बोझ के नीचे दब जाएगा वह।''

धूप स्वास्थ्य के लिये उत्तम है, आवश्यक भी है, पर सीधी सूरज की धूप आँखों और शरीर दोनों के लिये ही कितनी असुविधाजनक होती है, अपितु कष्टप्रद होती है। इसी प्रकार सीधे ही व्यक्तित्व की तारीफ यथा, ''तुम तो बहुत ही विनयशील शानदार कुलदीपक हो, उदार हो, देवदूत की तरह हो'' इत्यादि यह सब बड़ा अटपटा एवं अस्वाभाविक लगता है। बालक इसका सबके सामने ही आंशिक विरोध भी करता है, अस्वीकारता भी है। वह कभी नहीं स्वीकारता है कि वह शानदार है या देवदूत जैसा है। बालक अवास्तविक प्रशंसा को न केवल अस्वीकारता है बल्कि यह भी सोचने लगता है कि यदि खामखाह ही उसे इतना जोरदार समझा जा रहा है तो प्रशंसा करने वाला भी जोरदार नहीं है, उसकी मंशा कुछ और है, साथ ही वह भी अनावश्यक ऊँची प्रशंसा पर संदेह भी करता है।

एक और उदाहरण देखिये-दस वर्षीय रिंकू ने अपने पिता के साथ घर की सफाई में बड़ी-बड़ी कुर्सियां हटाई, टेबिल हटाई, सफाई की। जब पिता ने बाद में कहा-

''बेटा, टेबल तो बहुत भारी थी।''

''लेकिन मैंने उसे उठाकर हटा दिया, पापा।''

यहां पिताश्री ने कार्य की दुरूहता का संकेत दिया, सीधे ही नहीं कहा, ''रिंकू तुम तो बहुत ताकतवर हो।'' उन्होंने तो बातों ही बातों में स्वयं बच्चे द्वारा ही यह निष्कर्ष निकलवा दिया, उसे अनुभूति कर दी कि वह ताकतवर है, कमजोर नहीं है। यदि उसके पिता उसको कहते, ''तुम तो बहुत शक्तिशाली हो'' तो वह अस्वीकार कर देता और कह देता'', कुछ नहीं पापा, कक्षा में मेरे से अधिक ताकतवर तो और बहुत लड़के हैं'' और इस प्रकार दोनों एक निरर्थक विवाद में उलझ जाते।

प्रशंसा के दो अंग होते हैं-एक हमारे शब्द और दूसरा बच्चे द्वारा उन प्रशंसा के शब्दों का निकाला गया अर्थ या निष्कर्ष। हमारे शब्दों का तात्पर्य यही होना चाहिये कि हम बच्चों के प्रयास, कार्य, सफलता, सहायता, सोचना या सृजन को स्वीकारते हैं और अच्छा समझते हैं। हमारे तारीफ के शब्द, हमारी प्रशंसा-अभिव्यक्ति ऐसी हो कि बालक उनसे अपने व्यक्तित्व के बारे में वास्तविक निष्कर्ष ही निकाले और अपनी एक सकारात्मक तस्वीर

बना सके अपने मन-मानस में, हमारे द्वारा कहे गये शब्दों के आधार पर नीचे दिये उदाहरण स्पष्ट करते हैं:

''धन्यवाद बेटे, आपने आज मेरी मेज की सफाई कर दी और किताबों को झाड़ पोंछकर व्यवस्थित कर दिया। अब कितनी अच्छी लगती है, मेज और आलमारी।''

यह सार्थक प्रशंसा है क्योंकि बच्चा इसका अर्थ यही निकालेगा कि उसने कुछ अच्छा काम किया है, और अच्छी तरह से किया है। उसका काम पापा को पसन्द आया है।

लेकिन यदि यह कहा जाए कि शाबास बेटे, तुम तो होनहार हो, तुम तो परिवार का नाम रोशन करोगे।''

यह प्रशंसा सार्थक नहीं है क्योंकि बालक मात्र टेबल व्यवस्थित कर देने से कुल दीपक होने जैसी बड़ी बात समझ नहीं पाता और ऐसी प्रशंसा उसे बनावटी लगती है।

एक और उदाहरण देखिये-

बच्चा आपके जन्मदिन पर चार पंक्तियों की तुकबन्दी करके ले आता है। आप कहते हैं-

''तुम्हारे शब्द सुन्दर हैं भाव अच्छे हैं, तुम्हारी बात मेरे दिल तक पहुंच गई है। अच्छी लगी बेटे, मुझे तुम्हारी ये पंक्तियां।''

यह सार्थक प्रशंसा है, इससे बालक को सहज तुष्टि की अनुभूति हुई और यह विश्वास कि वह कविता कर सकता है।

लेकिन यदि यह कहा जाए कि-

''शाबास बेटे, तुम तो एक अच्छे कवि बन गये हो। तुम्हारी उम्र में ऐसी कविता कोई नहीं कर सकता।'' यह प्रशंसा उचित नहीं है।

बच्चे के कार्य या उसके सफल प्रयास से जुड़ी हुई सीधी सच्ची सहज प्रशंसा से उत्पन्न बच्चे के सकारात्मक निष्कर्ष ही उसके मानसिक स्वास्थ्य का निर्माण करते हैं। जो कुछ वह निष्कर्ष निकालता है, वही बात वह खामोशी से अपने आपसे कहता है। ऐसी सकारात्मक अभिव्यक्ति से बालक के अन्तर्मन में होने वाली प्रतिक्रिया सहज, स्वाभाविक एवं सार्थक होती है और उससे स्वयं के बारे में उसकी अपनी एवं लोगों की अच्छी राय बनती है और यह सकारात्मक अभिक्रिया और अन्तःक्रिया उसे प्रोत्साहन एवं प्रसन्नता प्रदान करती है।

-ए-438, वैशाली नगर, जयपुर
मो. 08233360830

सन्दर्भ : स्वतंत्रता दिवस

सा विद्या या विमुक्तये

❑ टेकचन्द्र शर्मा

अन्ततः श्री बाल गंगाधर तिलक का जयघोष स्वतंत्रता-स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूंगा, 15 अगस्त 1947 को फलीभूत हुआ और हम भारतवासी राजनैतिक रूप से स्वतंत्र हुए। एक नई चेतना और एक नई समझ का दौर देशवासियों के दिलो दिमाग में शुरू हुआ जिसके लिए वर्षों से साधनावत आन्दोलन किये जा रहे थे।

मानव व्यक्तित्व के तीन अंग हैं-वैयक्तिक, सामाजिक एवं राजनैतिक। राजनैतिक रूप से हम स्वतंत्र हुए किन्तु वैयक्तिक, सामाजिक रूप से अभी भी गुलाम हैं। वैयक्तिक रूप में-दैहिक, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक स्वरूप समाहित है। क्योंकि अन्य सभी स्वरूप इसी पर आधारित है। सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वरूप भी वैयक्तिक स्वरूप विकसित होने पर स्वतः विकसित हो जाते हैं।

शिक्षा-विद्या संक्षेप में वही है कि जो मनुष्य को भौतिक, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक रूप से मुक्त कर दे। यहां थोड़ी-सी गहराई से इस पर विचार करना है। शारीरिक रूप भौतिक रूप है। हमारी देह व शरीर समस्त रोगों से मुक्त हो, स्वस्थ हो, सबल हो, सुदृढ़ हो, ऊर्जावान हो, यह पहला चरण है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क, स्वस्थ आत्मा निवास करती है। जीवनयापन की आधारभूत वांछित आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके वही विधा है।

दूसरे चरण में मानसिक रूप आता है। हम मानसिक रूप से अभी गुलाम है। पश्चिम को ही श्रेष्ठतर मानते हैं। अंग्रेजियत की बू गई नहीं है। बौद्धिक रूप से भी स्वतंत्र नहीं हैं। मौलिकता का अभाव है। अनुकरण की प्रवृत्ति है पश्चिम के सिद्धान्तों, जीवनशैली का अन्धानुकरण कर रहे हैं। सामाजिक क्षेत्र में स्वार्थ हम पर हावी है। सामाजिकता का अभाव है। समाज को गौण मानते हैं। अपने को महत्व देते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था भूलकर भी अन्धानुकरण मत करना। विवेकानन्द ने कहा है अतः ऐसा कर रहे हैं। यह मान्यता सरासर गलत है। अपने विवेक की कसौटी पर कसकर किसी सिद्धान्त को अपनाना।

अब आता है आध्यात्मिक चरण, आत्मिक चरण। काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार ये पांच आवरण हमारी आत्मा पर आवरण है। इनको हटाये बिना आत्मा मुक्त नहीं हो सकती है और यह सब हो सकता है आध्यात्मिक नैतिक गुणों के विकास से। इस आयाम में भी हमारी शिक्षा पद्धति पूर्णतः पिछड़ी हुई है। आध्यात्मिकता तो सदैव भारत की पहचान रही है। इसी की बदौलत भारत विश्वगुरु कहलाया है। किन्तु आज हम विश्वगुरु तो बहुत दूर की बात है विश्व के विकसित देशों की समकक्षता में ही नहीं आ रहे हैं।

वस्तुतः शिक्षा उसे कहेंगे जो हमारे मन में और हमारे परिवेश में व्याप्त बुराइयों एवं कुरीतियों से हमें मुक्त करवा कर सामाजिक एवं वैयक्तिक स्वतंत्रता से परिचित करवाएं। विभिन्न शिक्षाविदों एवं शिक्षा पर गठित आयोगों, उपसमितियों आदि ने भी इस बात को रेखांकित करते हुए सहज एवं मुक्त शिक्षा की अनुशंसा की है। वर्तमान में प्रचलित मुक्त शिक्षा पाठ्यक्रम एवं उनका अध्ययन पूर्ण करने के लिए प्रदत्त अनौपचारिक व्यवस्थाएं इन्हें प्रमाणित करती है।

अब बात आध्यात्मिकता एवं नैतिक व मूल्यपरक शिक्षा की करती हैं। शिक्षा पद्धति में आध्यात्मिकता का समावेश अत्यावश्यक है। इसके बिना हम आधे अधूरे हैं। अतः इस स्वतंत्रता दिवस पर हम सब नागरिक, राजनेता, प्रशासक, छात्र और विशेषकर शिक्षक संकल्पित होवें कि सा विद्या या विमुक्तये की ओर अग्रसर होंगे और निश्चित रूप से इसमें सफल होंगे। कहना न होगा, सच्ची और वास्तविक शिक्षा की राह इसी में निहित है।

-शर्मा सदन, मुनि आश्रम के पास, झुंझुनूं
मो. 09352116526

बाल सृजन

चूहा बनाम बिल्ली

❒ पवन के. भूत

शाम का भोजन पूर्ण हो जाने के बाद रसोईघर में जब मेरी मम्मीजी बाहर निकलती है, एक बिल्ली और एक चूहे के मध्य रसोई में धुसकर इधर-उधर पड़ी भोजन सामग्री को खाने की होड़ मची रहती है। कभी बिल्ली मौसी पहले पहुँच जाती तो चूहा मन मसोजकर रह जाता (और करे भी क्या)! कभी चूहा थोड़ा जल्दी पहुँच जाता तो मौसी उसे भगाकर खुद चाटने लग जाती।

एक दिन चूहा थोड़ा जल्दी पहुँच गया और बिल्ली थोड़ी लेट हो गई, तब तक चूहा सबकुछ चट कर चुका था। बिल्ली मौसी को बहुत गुस्सा आया और वह फट से चूहे पर झपटी। चूहा राजा बेहद चौकन्ना था फुदककर दूर चला गया। मौसी उसके पीछे भागी। चूहा दरवाजे के नीचे से एक कमरे में धुस गया, दरवाजा बंद था। बिल्ली आगे वाले पैर दरवाजे पर रखते हुए ऊपर हुई और एक पंजे से कुंडी खोलकर कमरे में धुस गई। उसने देखा चूहा एक छोटी अलमारी के पीछे छुपा बैठा है, वह अलमारी को सरकाकर जी हाँ सरकाकर उसके पीछे जाने की कोशिश करने लगी। तब चूहा कूदकर एक टेबल पर चढ़ गया, वहाँ एक शीशा पड़ा था जिसमें वस्तु बहुत बड़ी दिखाई देती थी (उत्तल दर्पण), चूहा उसके सामने जाकर बैठ गया। बिल्ली जैसे ही टेबल पर कूदी, उसकी नजर सीधी शीशे पर पड़ी, चूहे को खुद से भी बड़ा देखकर वह सहम गयी डर गयी और पीछे की तरफ गिर गई। इतने में चूहा दौड़ गया, बिल्ली भी उसके पीछे दौड़ी। चूहा धर से बाहर की तरफ अपने बिल की ओर भागा, बिल्ली भी उसके पीछे तेजी से दौड़ी। धर से बाहर वह चूहे के बहुत समीप पहुँच गई और तीव्र गति से चूहे पर झपटी लेकिन तब तक चूहा अपने बिल में घुस चुका था।

बिल्ली भी कम नहीं थी, वहीं बैठ गई (कभी तो बाहर निकलेगा)! काफी देर तक जब चूहा बाहर नहीं निकला तो उसने चूहे के सामने एक प्रस्ताव रखा (ऑफर दिया) कहा-

इण बिल रा ऊंदरा[1], उण बिल में जाय।
लाख टका दूँ रीझरा[2], तू सूतो-बेठो खाय।।

यानि बिल्ली कहती है कि इस बिल वाले ऊंदरे (चूहे) तूं उस बिल में जाएगा तो मैं खुश होकर तुझे लाख रुपये दूंगी जीवन भर सोते-बैठे खाना (रोजाना भोजन के लिए तूझे भगछोड़ करने की जरुरत ही नहीं पड़ेगी)।

यह प्रसंग सुनाकर जब कक्षा सदन में पूछा गया कि अब आप ही बताइये कि उस चूहे ने क्या जवाब दिया होगा (ध्यान रहे शर्त केवल इतनी है कि चूहे का जवाब भी आप पद्य (कविता) के रुप में देंगे)। तब सृजन के जो अनूठे उदाहरण सामने आए वे आपके समक्ष पेश हैं-

नानगाराम-
इण बिल रा ऊंदरां उण बिल में नी जाय।
जे टका देवणा हवै थने तो बिल में तू आ जाय।।

गिरधर सिंह-
इण बिल रा ऊंदरा, उण बिल में क्यों जाय।
जो राम ने प्यारो हो ग्यो, तो लाख टका कुण खाय।।

हुकमाराम-
लाख टका री दैणारी[3], टका थारा[4] थाने[5] फलदाय।
टका री लालचड़ी में, जीव आपरो कुण फंसाय।।

ओमप्रकाश-
तू माने शर्म अगर म्हारी, तो लाख टका ना पाऊँ।
तू जावे दूर अठे सूँ, तो मै। फोकट में चला आऊँ।।

धर्माराम-
बिल में बैठो ऊंदर, आपने युँ समझाऊँ।
मरण आयो म्हारो, जो बाहर निकल जाऊँ।।

रतनलाल-
इण बिल रा ऊंदरा, उण बिल में परा जाई।
पण[6] तेरे कने[7] लाख टका ह्वै तो, थूँ म्हारे लारे क्यू आई।।

उम्मेद-
कहे ऊँदरो आप ने लालच में मत फंस।
नर हाथ चढ्यो मिन्नी रे लाख टका जाई धस।।

गोपसिंह-
इण बिल रा ऊंदरा उण बिल में नी जाए।
बाहर बैठी मिन्नी बाट देखती रह जाए।।

महेन्द्र कुमार-
ओ ऊँदरो तो धापोड़ो[8] बाहर ओ नी आय।
जे बिल्ली लाख टका ह्वै तो ओ होटल पर चली जाय।।

कमल शर्मा-
थ्हारा टका थारे कने लालच सूं म्हारी जान जाय।
तू तो डाकण[9] जेड़ी लगे बारे आऊँ तो म्हने खाय।।

प्रेमलता-
बड़ी भयी तो क्या भई जैसे छापलती मिन्नी।
थारे हाथ ना आऊँ आ ही है म्हारी सिद्धी।।

इस तरह अनेकानेक ऐसे रोचक विचार आने लगे। बाद में बमुश्किल विराम दिया गया व अंतिम ऊँदरे के वक्तव्य के रूप में कहा-

भोंय[10] थुड़ी[11] भाड़ो घणो[12], समझ में नी आय।
जे कोई रजा-कजा[13] ह्वे, तो लाख टका कुण[14] खाय।।

अर्थात् दूरी बहुत कम है और किराया ज्यादा मिल रहा है, बात समझ से परे है। अगर कोई ऊँच-नीच (दुर्घटना) हो गई तो लाख रुपये खाने वाला ही कौन पीछे बचेगा।

इस प्रकार सृजनशील शिक्षक अपनी कक्षा में छात्र-छात्राओं से उनकी कल्पनाशीलता एवं सोच बढ़ाने वाले अनेक कार्य एवं अभ्यास करवा सकते हैं। बात शुरू करने की है। बच्चों से ऐसे-ऐसे विचार एवं सृजन मिलेंगे, जिन्हें देख-समझ कर तथा हमें न केवल अचम्भा ही होगा बल्कि कभी-कभी तो हमारा स्वयं का ज्ञान भी बढ़ेगा।

अतः बच्चों की सृजनशीलता बढ़ाने वाले अभ्यास कार्यों को सोचकर उन्हें सतत कक्षाओं में करवाया जाना चाहिए। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार के कल्पना बढ़ाने वाले तथा सृजन के पथ पर अग्रसर करवाने वाले कार्यों का अभ्यास करवाये जाने से माध्यमिक एवं उच्चतर कक्षाओं के छात्रों के लिए मार्ग प्रशस्त होगा।

शब्दार्थ- 1. चूहा 2. प्रसन्न करने के लिए 3. देनदारी 4. तेरा 5. तुझे 6. परन्तु 7. पास 8. पेट भरा हुआ 9. डाकू या राक्षसी 10. दूरी 11. कम 12. ज्यादा 13. ऊँच-नीच (दुर्घटना) 14. कौन

-वरिष्ठ अध्यापक (गणित)
रा.उ.मा.वि., जसाई (बाड़मेर)

बात शिक्षकों के लिए

शिक्षक के बोल और आत्मीयता

❒ वृद्धिचन्द गोठवाल

शिक्षक और छात्र के बीच भावनात्मक सम्बन्ध होना बहुत आवश्यक है किन्तु वर्तमान में सिर्फ पठन-पाठन के सम्बन्ध ही रह गए हैं। परिणाम स्वरूप छात्र के मन में शिक्षा और विद्यालय के प्रति किंचित बल्कि कहना चाहिए कि नाम मात्र का लगाव रह गया है।

मुझे एक प्रसंग याद आता है, जब मैं एक विद्यालय में प्रधानाध्यापक था। एक छात्र कई दिनों तक विद्यालय नहीं आया। मालूम किया तो मामला अचरज भरा निकला। उसके पिता ने बालक की सबकी-सब पुस्तकें एवं कोपियां रद्दी में बेंच दी। पिता जबरदस्त शराबी था उसने उन पैसों से शराब गटक ली। अत्यन्त निर्धनता। बालक क्या करता? बालक पढ़ने का जिज्ञासु और आज्ञाकारी था। बालक को बुलाकर समझाया और पुनः सब पाठ्यसामग्री की व्यवस्था कर दी। अब उसका बैग विद्यालय में ही रखने की सहलूयित कर दी। उसने कक्षा 8 अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कर ली। बस, थोड़ी सी बात मेरे मन को लगी तो छात्र का जीवन सुधर गया। शिक्षक को छात्र के लिए हृदय में जगह बनाए रखना चाहिए। भावना, विश्वास, सहयोग और सहानुभूति के मरहम से बालक बहुत अच्छी प्रगति कर लेते हैं।

शिक्षक को मानवीय मूल्यों की तरफ देखना चाहिए, क्योंकि शिक्षक ही छात्र के अन्दर ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले जीवन मूल्यों का प्रखर प्रहरी है। आत्मीयता के साथ-साथ शिक्षक को अपनी वाणी पर भी नियंत्रण रखना चाहिए। छात्र का मन कचोट ने वाले शब्दों से शिक्षा ग्रहण करने से भटकता है। जाने-अनजाने में भी बेतुके शब्दों का प्रयोग करने से बचना चाहिए। एक बार मुझे बहुत बुरा लगा जब मैंने इस प्रकार के शब्द सुने। प्रार्थना सभा में एक शिक्षक ने कहा-अरे, ओ उल्लू ..... नहीं? छात्र का चेहरा तम तमा उठा। किन्तु उसने अपनी शिष्य की गरिमा खोई नहीं और बोला-गुरुजी मेरा नाम लेकर पुकारें। वह बड़ा उदास हो गया था। शब्दों का बालक के कोमल संवेदनशील व्यक्तित्व पर कितना घातक प्रभाव पड़ता है, यह चिन्तनीय और विचारणीय बात है।

सभी बालको की बुद्धिलब्धि एक समान तो नहीं होती है। किसी को तत्काल एक ही प्रयास में कोई बात अच्छी प्रकार समझ में नहीं आ पाए तो शिक्षक को आग बबूला नहीं होना चाहिए। प्रायः हम अपनी मन-मर्जी के कठोर शब्द बोल पड़ते हैं जैसे-तेरे दिमाग में तो गोबर भरा है, तेरी अक्ल को पाला मार गया है, तू पूरा बेवकूफ है, तूने तो दिमाग ही बेच दिया, तू दस साल पास नहीं हो सकता आदि-आदि। शिक्षक के इन शब्दों का क्या अर्थ? क्या यह व्यवहार शोभा जनक और गरिमा युक्त है? अर्थात् जिन बेतुकी बातों से बालक पर मनोवैज्ञानिक कुप्रभाव पड़ता है, उन्हे तो एक शिक्षक को सपने में भी प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सीनियर सैकण्डरी स्कूल में रहते मैंने एक प्रयोग किया। कक्षा 12 के कुछ ग्रामीण बालकों का चयन किया कि क्या शिक्षक अपनी वाणी और आत्मीयतता से बालकों को सद्मार्ग पर ला सकता है? चयनित बालकों के अभिवादन को हंसकर स्वीकार करना, अध्ययन एवं उनके आचरण पर नजर रखना, घर-गृहस्थी की कुशलक्षेम पूछते रहना, प्यार भरे एवं आदर युक्त शब्दों से पुकारना, उनकी व्यक्तिगत समस्याओं में सहानुभूति और सहयोग, उनके मित्रों पर नजर रखना आदि बातों पर विशेष ध्यान दिया। उन छात्रों को ऐसा लगा कि मैं उनका बहुत बड़ा हितैषी हूं। वे छात्र इतने चौकस हो गए कि उनकी कोई भी शिकायत मुझ तक न आ जाए साथ ही अध्ययन में भी रूचि लेने लगे। शनैः-शनैः उनके व्यवहार गत परिवर्तन से अन्य शिक्षकों द्वारा भी प्रशंसा होने लगी। परीक्षा परिणाम भी चौंकाने वाला रहा। क्या लगा मेरा? कहना न होगा कि शिक्षक आत्मीयता और अपने बोल से बालकों के स्तर का ऊँचा उठा सकता है।

जिस शिक्षा से ऋषि-मुनि अपने शिष्यों का चरित्र निर्माण किया करते थे एवं उनकी आत्मा में लिये पवित्र संस्कारों को पुन जीवित कर उन्हें उच्चकोटि का मानव बना देते थे। आज उन्ही पवित्र मूल्यों का क्षरण हो रहा है। छात्र शिक्षक के कठोर व्यवहार पर भले ही डर के मारे मुँह पर नहीं बोलते किन्तु जो पीड़ा उन्हें आन्तरिक तौर पर होती है वह काबिले गौर है। माना कि एक शिक्षक को पूरी कक्षा अथवा विद्यालय के सब बच्चों के नाम याद नहीं रहते, लेकिन संकेत करके अथवा प्रिय बोल से बालक को पुकारा जा सकता है, जैसे-अरे, ओ मुन्ना, ओ पप्पू, ओ भैया, ओ लाला आदि-आदि। कक्षा हो या प्रार्थना सभा, विद्यालय प्रांगण हो या खेल का मैदान, चौराहा हो या घर-परिवार छात्रों के आत्म-सम्मान और उनकी अस्मिता का ध्यान रखा जाना चाहिए। यदि बेतुके एवं अप्रिय शब्दों का प्रयोग कोई हमारे लिए करने लगे तो कैसा महसूस होगा? विचारों को परिष्कृत कर बोलना चाहिए क्योंकि इनकी शक्ति अपरिमेय है। विचार या वाणी जीवन शोधन का मार्ग है तथा प्राप्ति और प्रगति का नव चरण है।

वाणी और व्यवहार दोनों अपने व्यक्तित्व के दो प्रमुख पहलू हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि वह अपनी वाणी एवं व्यवहार से किसी को पीड़ा न पहुँचाए। भले ही कक्षा अथवा विद्यालय परिसर में किसी छात्र के साथ वांछित उत्तम व्यवहार न करने पर वह सहन कर लें तथा कुछ नहीं बोले मगर यह निश्चित मानिए कि आपके प्रति उसके कोमल मन में घृणा के भाव उत्पन्न होंगे जो ताजिन्दगी जिन्दा रहेंगे। हम आए दिन हमारे साथियों से उनके विद्यार्थी काल में शिक्षकों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के दृष्टान्त सुनने के साथ ही उन गुरुजन के बारे में भी अच्छी नहीं लगने वाली टिप्पणियाँ सुनते हैं। हमें इनसे बचना है।

-पूर्व व्याख्याता-हिन्दी
गौतम आश्रम के पास, पो. कपासन (चित्तौड़गढ़)
मो. 9414732090

वो दौर भी देखे हैं तारीख की नजरों ने,
लम्हों ने खता की थी सदियों ने सजा पाई।
-अल्लामा इकबाल

बालिका शिक्षा

मलाला युसुफजई बनी मशाल

❒ रामकृष्ण अग्रवाल

बालिका शिक्षा और बाल हितों की सुरक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त सलित विभिन्न एजेन्सियां संकल्पित होकर कायत्र कर रही है। कई राष्ट्रों में इनके लिए आवाज उठाई जा रही है। एक बालिका पढ़ेगी तो दो परिवारों की पढ़ाई-लिखाई का बीमा हो जाएगा, ऐसे नारे यहाँ-वहाँ सुने जाते हैं। खुशी की बात यह है कि प्रायः विश्व के अधिकांश भागों में बालिका शिक्षा के लिए उचित प्रयास भी किये जा रहे हैं। मगर आज भी कहीं-कहीं दकियानूसी विचारों के लोगों को बालिका शिक्षा सुहा नहीं रही है और वे यहाँ-वहाँ उसे रोकने के लिए दुष्प्रयास करते नजर आते है। ऐसा ही एक वाकिया मलाला नाम की बालिका के साथ तालिबानियों द्वारा किया गया जो अन्तोत्गत्वा बालिका शिक्षा की विश्वव्यापी मशाल बन गई है। आइये, इस पूरे वृतान्त एवं मलाला के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

मलाला का पूरा नाम है-मलाला युसुफजई। वह पाकिस्तान की रहने वाली है। मलाला का जन्म 12 जुलाई 1997 को हुआ। सोलह वर्षीय मलाला का एक नाम गुल मकई भी है। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वाह में जन्मी मलाला मिंगोरा शहर के एक स्कूल में आठवीं कक्षा की छात्रा है।

मलाला की पढ़ाई से क्षुब्ध तालीबानी आतंकियों ने अक्टूबर 2012 में एक दिन स्कूल से घर लौटते वक्त गोलियों से उसे घायल कर दिया।

दरअसल मलाला सामान्य लड़कियों से कुछ हटकर है। शुरू से ही पढ़ाई में तीव्र बुद्धि बालिका मलाला सामाजिक चेतना की भी पक्षधर है। उसने महज ग्यारह वर्ष की अवस्था से ही डायरी लिखनी शुरू कर दी थी और चार वर्ष पूर्व 2009 में बीबीसी अर्द के लिए डायरी लिखकर वह दुनिया की नजर में एक नायिका के रूप में सामने आई। यह उल्लेखनीय है कि पाकिस्तान के मिंगोरा क्षेत्र पर तालिबान का कब्जा है। वहाँ पसरे भय के सन्नाटे से हर कोई डरा सहमा-सा रहता है, जो स्वाभाविक है। मलाला का कोमल दिल इन पाबंदियों एवं अत्याचारों से दुःखी रहता और वह अपने उद्गार डायरी में लिपिबद्ध करती।

अपनी डायरी में मलाला ने लिखा, ''आज स्कूल का अंतिम दिन था। इसलिए हमने मैदान पर कुछ ज्यादा खेलने का निर्णय किया। मेरा मानना है कि छुट्टियों के बाद एक दिन स्कूल अवश्य खुलेगा लेकिन जाते समय मैंने स्कूल की इमारत को इस तरह देखा जैसे कि मैं फिर यहाँ कभी नहीं आऊंगी।'' जब उस क्षेत्र में तालिबान का आतंक कुछ कम हुआ, तब मलाला की पहचान दुनिया के सामने आई। उसे बहादुरी के लिए पाकिस्तान का प्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय युवा शान्ति पुरस्कार' से वर्ष 2011 में नवाजा गया तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाल शान्ति पुरस्कार भी उसे मिला।

भले ही आतंकियों ने मलाला पर गोली से हमला किया लेकिन करोड़ों लोगों की दुआओं से वह ठीक हो गई और बालिका शिक्षा के लिए यत्न-प्रयत्न करने वालों के साथ आ खड़ी हुई है। मलाला उन पीड़ित बालिकाओं में से है जो तालिबान के कट्टर फरमानों के कारण वर्षों शिक्षा की रोशनी से महरूम रही। उसने अपनी डायरी के माध्यम से लोगों के न केवल जागरुक ही किया अपितु बालिका शिक्षा और बालिकाओं के हित संवर्द्धन की दिशा में एक मिशाल व मशाल बनकर सामने वह आई है।

मलाला को विश्व स्तर पर सराहना मिली और उसके साहस ने बालिका शिक्षा की ओर बढ़ते प्रयासों को गति प्रदान की। वर्ष 2009 में न्यूर्याक टाइम्स ने मलाला पर केन्द्रित एक फिल्म बनाई। यह फिल्म स्वात में तालिबान का आतंक तथा स्त्री शिक्षा पर प्रतिबंध विषय पर थी जिसने क्रान्ति का एक शंख फूंक दिया। इस फिल्म को देखकर मलाला इतनी भावुक हो गई कि उसे रोना आ गया। एक राजकीय माध्यमिक विद्यालय को मलाला के नाम पर किया जाकर उसे सम्मान बख्सा गया है। मलाला भावी नारी शक्ति एवं उत्साह की प्रतीक बन गई है।

गत माह 12 जुलाई को मलाला का जन्म दिन संयुक्त राष्ट्र संघ में मनाया गया। अपने जन्मदिन पर खूब बोली मलाला। सुनने को सामने तो हजार बच्चों समेत करीब डेढ़ हजार लोग बैठे थे। लेकिन सुना गई पूरी दुनियां को। कहा, बदल सकती है दुनिया सिर्फ एक छात्र, एक शिक्षक, एक किताब और एक कलम की बदौलत। आखिर दिन उसका था। 12 जुलाई, संयुक्त राष्ट्र का पहला मलाला डे। अब इसे इसी तारीख को हर साल मनाया जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र के सभागार में महासचिव बान की मून के साथ जब मलाला दाखिल हुई तो सबने तालियों से उसका स्वागत किया। और जब बोलने आई तो सब खड़े हो गए। गुलाबी कपड़ों में 16 साल की मासूम सी मलाला ने मजबूती से अपनी बातें कहीं। तालिबान हमले के बाद पहली बार वह किसी सभा में बोल रही थी। मलाला ने कहा कि वह तालिबानियों या किसी आतंकी संगठन के खिलाफ नहीं है। उसे अगर बंदूक भी दे दी जाए तो किसी को गोली नहीं मारने जाएगी।

उसने कहा कि 'मलाला किसी के खिलाफ नहीं है। मलाला हर उस आवाज के साथ है, जो रोज अपने अधिकारों के लिए दुनिया में उठती है। आवाज उठाने वाली महिलाएं, बच्चे और लड़कियों के हर के लिए मेरी लड़ाई है। दुनिया में अपने हक के लिए रोज कई बच्चे, लड़कियां और महिलाएं मारी जाती हैं। उन सबकी आवाज मलाला है।' आतंकियों ने उसके गोली मार दी थी। उसका जुर्म इतना था कि वह स्कूल जाना चाहती थी। बाद में उसका लंदन में इलाज हुआ। अब वह फिर से स्कूल जाने लगी है। लेकिन उसकी बाईं आंख खराब हो चुकी है।

मलाला ने अपने पूरे भाषण में बच्चों खासकर लड़कियों की शिक्षा पर जोर दिया। उसने शांति और अहिंसा की वकालत की। भाषण की शुरुआत अल्लाह के नाम पर करने के साथ ही उसने जीसस और भगवान बुद्ध का भी नाम लिया। फिर उसने मोहम्मद अली जिन्ना, नेल्सन मंडेला और खान अब्दुल गफ्फार खान का नाम लिया। महात्मा गांधी के अहिंसा के मंत्र की सराहना की।

प्लॉट नं. 108, शिव शक्ति नगर, जयपुर-19
मो. 09799563044

उत्सव-पर्व

इल्म व इबादत का पर्व है ईद

❒ मोहम्मद इदरीस खान

ईद का त्यौहार, खुशियों की सौगात है। इस्लाम के प्रमुख त्यौहारों में ईद का त्यौहार माना जाता है। ईदुल फितर जो कि माहे रमजान की 30 दिनों की इबादत, त्याग, तपस्या और तड़प के साथ 'इल्म' के जुनून का संदेश देती है। रोजदारों को इनाम व इकराम से नवाजने का दिन है इदुल फितर। तीस दिनों का रोजों का महीना, इन्सान को कंचन बनाने की मशक्कत है। रोजा एक ऐसी गुप्त इबादत है जो 'बंदे और अल्लाह' के बीच का सीधा मामला है। इन्सान अपने पालनहार, सृष्टि निर्माता, ईश्वर को खुश करने के लिए पूरे एक महीने के रोजे रखता है। रमजान के महीने की विशेषताएं तो इतनी है कि इन्हें लिपिबद्ध करना नामुमकिन-सा है, कल्पना करके रोमांच होता है। कुछ प्रमुख विशेषताओं की झलक इस प्रकार है-

1. रोजे का पहला फायदा ईमान का दुबारा जिन्दा होना है।
2. रोजे का दूसरा फल इख्लास है, एक ऐसी इबादत है जिसमें दिखावा और रियाकारी नहीं है। अल्लाह के लिए है। अल्लाह की हदीसे-कुदसी में कहा है-'रोजा मेरे लिए है और मैं ही इसका बदला दूंगा।'
3. रोजे से सब्र यानी अपनी ख्वाहिशात, तृष्णाएं नियंत्रित होती है। अल्लाह के प्रति शुक्रगुजार बनता है।
4. रोजा इन्सान में हमदर्दी के जज्बात उभारता है।
5. रोजों में ईमान की बुनियाद और सवाब की नीयत से रातों इबादत करने से पिछले गुनाह माफ हो जाते हैं।

रमजान का मुबारक महीना इसलिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि इसी महीने में ईशवाणी से विशेष दूत के माध्यम से 'कुर्आन' नाजिल हुआ। नबियों के सरदार मोहम्मद सल्लाहु अलेयवसल्लम को कुर्आन 'रमजान' महीने में ही सुनाया गया, याद कराया गया, पढ़ाया गया, गहराई तक समझाया गया, ज्ञान दिया गया और अन्ततः दुनिया की दिशा के लिए कुर्आन को 'लोहे महफूज' में सुरक्षित कर दिया गया।

रमजान के महीने के तत्काल बाद आने वाला त्यौहार 'ईदुल फितर' पुरस्कार का त्यौहार है। अल्लाह अपने बंदों को खुद इनाम-इकराम से नवाजता है। **ज्ञान प्राप्ति के लिए रोजे अहम् संदेश देते हैं। कुर्आन मजीद में अल्लाह ने फरमाया है कि 'तुम पढ़ो-अल्लाह के लिए' साथ ही पढ़ाई, ज्ञान प्राप्ति का इतना महत्व बताया कि 'तुम इल्म हासिल करो, यहाँ तक कि तुम्हें चीन तक भी जाना पड़े।'**

इस्लाम में इल्म, ज्ञान, स्वाध्याय का बहुत महत्व है। कुर्आन मजीद जैसी आसमानी किताबें और भी उतारी गई हैं। जीवन जीने के प्रत्येक पहलू को लिखित कानून-कायदों में इन किताबों में लिख दिया गया है। यह इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि इस्लाम में पढ़ने-लिखने, त्याग-तपस्या करने, एक-दूसरे की मदद करने, शरीर को तन व मन से शुद्ध एवं स्वच्छ रखने की लिखित हिदायतें की गई है। पूरे एक माह तक रोजे के हालात में इल्म की तड़प, इबादत का जुनून, त्याग व तपस्या की भावनाओं से इन्सान लबरेज होता है, इन कसौटियों पर खरा उतर कर ईद के दिन ईदगाह पर अपने आका-ईश्वर-अल्लाह से ईमान पाने, अपने आपके बख्साने के लिए स्वयं को समर्पित कर देता है। ईद-एक खुशी का पर्याय है, फलदायिनी है, क्षमाकारिणी है। अल्लाह करे हर इन्सान को बार-बार ईद नसीब हो। अपने गुनाह की माफी का अवसर मिले, पाक दामन हो, नेक, हमदर्द, ज्ञानवान, निष्ठावान हो- आमीन।

-उपनिदेशक (खेलकूद)
निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा, बीकानेर
मो. 9414918473

जज्बे को सलाम

धमतरी से कुछ ही दूर पर गांव है सलोनी। यहां दूर तक पथरीली जमीन के सिवाय कुछ दिखाई नहीं देता था। लेकिन अब उम्मीदों के बरगद नजर आ रहे हैं। गांव वालों ने सामूहिक प्रयास से 70 एकड़ में 4500 बरगद के पौधे लगा दिए। इसे लगाने के लिए कई जगह पत्थर तोड़ने पड़े, मिट्टी लानी पड़ी और दरारें बनानी पड़ी। इस जमीन पर पौधे लगाने के लिए ग्रामीणों ने मिलकर कलेक्टर से आवेदन किया था लेकिन कलेक्टर ने पहले मना किया। फिर ग्रामवासियों ने जिद की और यहां की जरूरत बताई तो कलेक्टर ने मनरेगा के तहत इसकी मंजूरी दे दी।

यहां पौधारोपण बहुत मेहनत और वैज्ञानिक तरीके से हुआ। पहले पत्थरों पर हल्की-हल्की मिट्टी डाली गई। पत्थरों के बीच छोटे-छोटे गेप ढूंढकर उनमें मिट्टी डालकर पौधे लगाए गए। जहां जरूरी समझा गया, वहां पत्थर तोड़े गए। इसकी सुरक्षा के लिए गांव वालों ने मिलकर प्रबंधन समिति भी बना ली है। इस समिति में जितने लोग भी है, वे सभी निःशुल्क सेवा दे रहे हैं। पेड़ को नुकसान पहुँचाने पर एक हजार रुपए अर्थदंड एवं 50 बार उठक-बैठक का प्रावधान किया गया है।

-साभार : दैनिक भास्कर, 22.7.13

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं। -वरिष्ठ सम्पादक

इतिहास का सबसे रोचक इंसान

एक ऐसा सैनिक जिसके चेहरे, सिर, पेट, कोहनी, पैर, कूल्हे व कान में गोली लगी और एक बार विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ। मगर, वह बच निकला। वह ब्रिटिश आर्मी ऑफिसर लेफ्टिनेंट जनरल सर ऐड्रियन पॉल कार्टोन डी, विआर्ट था। बेल्जियम का रहने वाला सर एड्रियन आयरिश मूल का था। उसने बोर युद्ध, प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध में भाग लिया। इतना ही नहीं एक बार जब डॉक्टर उनकी अंगुली का एक हिस्सा नहीं काट पाए तो उन्होंने खुद ही अपनी जख्मी अंगुली को चबा लिया। इटैलियन प्रिजन ऑफ वार कैंप से वह सुरंग खोदकर भाग निकला। इसके बावजूद उसने कहा था, मैंने हमेशा युद्ध को एन्जॉय किया। जीवन के अंत में उन्हें अपनी सेवाओं के बदले ब्रिटिश सेना के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा गया। इस सप्ताह ट्विटर यूजर मैथ्यू बैरेट ने इस ब्रिटिश आर्मी ऑफिसर की बायोग्राफी के बारे में ट्वीट करके इतिहास के सबसे रोचक इंसान की चर्चा छेड़ दी। उसकी ट्वीट पर 3200 बार री-ट्वीट किए गए हैं।

पशु-पक्षियों को बचाने के लिए नया कोर्स शुरू होगा

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने पशु-पक्षियों को बचाने के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्था पेटा की मदद से एक नया कोर्स तैयार किया है। इस कोर्स का नाम 'संवेदनशील नागरिक' रखा गया है। इसे आठ से 12 साल के बच्चों को पढ़ाया जाएगा। नए सत्र में सीबीएसई से मान्यता प्राप्त देशभर के सभी स्कूलों में इसे लागू किया जा रहा है।

कोर्स का मकसद छात्रों और पशु-पक्षियों के बीच दोस्ती बढ़ाना है ताकि वे अपने आसपास मौजूद जीवों की देखभाल करें। इससे विलुप्त हो रही प्रजातियां बच सकेंगी। सीबीएसई के चेयरमैन विनीत जोशी ने बताया कि सभी स्कूलों में इसे अनिवार्य तौर पर पढ़ाया जाएगा। यह मुख्य विषयों का हिस्सा होगा। इसमें दुनिया भर के जानवर व पक्षियों के बारे विस्तार से बताया जाएगा। कैसे इनकी मदद कर सकते हैं, इस बाबत उपाय भी बताए जाएंगे। हर तीन माह के अंतराल में परियोजना बनाने को दी जाएगी। इसके अंक अंतिम परिणाम में जोड़े जाएंगे। यही नहीं, पेटा की ओर से बच्चों को देशभर के उन स्थानों का भ्रमण कराया जाएगा जहां सबसे ज्यादा जानवर पाए जाते हैं मसलन, बाघ, मोर और हाथी आदि। पेटा की मदद से बोर्ड स्कूलों में इसकी पढ़ाई करवाएगा।

आर्टिफिशियल आइलैंड पर बनेगा आर्ट म्यूजियम

आर्ट म्यूजियम हमेशा अपनी सीमाओं को बढ़ाकर कोई नया आर्किटेक्चर बनाता है। इसी कड़ी में बीजिंग का आर्किटेक्चर स्टूडियो मैड आर्टिफिशियल आइलैंड पर सबसे बड़ा आर्ट म्यूजियम बनाने जा रहा है।

इसका नाम पिंगटन आर्ट म्यूजियम होगा, जो कि चीन के फुजिएन प्रांत के पूर्वी तट पर बनेगा। पिंगटन द्वीप फुजिएन प्रांत का सबसे बड़ा द्वीप है, जो वर्तमान में सैन्य बेस के साथ ही मछुआरा के ठिकाने की तरह उपयोग में लाया जा रहा है। पिंगटन आर्ट म्यूजियम मैड आर्किटेक्ट्स का तीसरा म्यूजियम प्रोजेक्ट है। मैड का दावा है कि यह एशिया का सबसे बड़ा निजी संग्रहालय होगा। लगभग 4,000 वर्ग मीटर के क्षेत्र में बनने वाले म्यूजियम का निर्माण शुरू हो चुका है। हालांकि, यह कब तक बन जाएगा, इसके बारे में अभी कोई जानकारी नहीं दी गई है। इसके निर्माण पर 769 करोड़ रुपए का खर्चा आएगा।

कार को ही बना दिया ब्लैक बोर्ड

न्यूयॉर्क के रहने वाले 20 वर्षीय आर्टिस्ट फिलिप रोमानो ने अपनी कार को चलता-फिरता ब्लैक बोर्ड बना दिया है। हेरी पॉटर की तरह दिखने वाले फिलिप ने 2004 मॉडल की हुंडई इलेंट्रा कार पर चॉकबोर्ड पेंट कर दिया। अब वह जहां अपनी कार पार्क करते हैं, वहां लोगों को खुद चॉक देकर कार पर कुछ भी लिखने के लिए कहते हैं। कार में उन्होंने एक प्लेट भी लगवा रखी है, जिसमें लिखा है 'ड्रॉ ऑन मी'। यह कार अब लोगों के बीच एक हिट बन गई है और लोग इस कॉन्सेप्ट को पसंद कर रहे हैं। न्यूयॉर्क की अपस्टेट यूनिवर्सिटी से साइकोलॉजी और लिंग्विस्टिक्स का कोर्स करने वाले फिलिप कहते हैं कि कार पर लिखने के बाद लोगों को अच्छा लगता है। पूरी तरह से लिखा-पढ़ी हो जाने पर कार को साफ करने में ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ती। बस पानी डाला और कार फिर से नए लोगों के लिखने के लिए साफ हो जाती है। फिलिप कहते हैं कि जब लोग, कुछ अच्छा बनाते हैं, या 'थैंक्स फॉर दिस' लिखते हैं, तो मुझे अच्छा लगता है।

प्लास्टिक सर्जरी से बदलेगा भाग्य!

कहते हैं हथेली की लकीरें इंसान का भाग्य बदल सकती हैं। जापान में इन दिनों लोग अपने भाग्य पैसा, सफलता, शोहरत और विवाह से जुड़ी रेखाओं को दुरुस्त कराने के लिए हथेली की प्लास्टिक सर्जरी करा रहे हैं। सर्जरी की कीमत करीब 66 हजार रूपए है, जिसके लिए इलेक्ट्रिकल स्काल्पल की मदद ली जाती है। टोक्यो में शोनान ब्यूटी क्लीनिक की शिंजुका ब्रांच में प्लास्टिक सर्जरी करने वले तकाकी माट्सूका कहते हैं कि हथेली में लकीरें बनाने के लिए लेजर का इस्तेमाल नहीं होता है, क्योंकि इससे साफ लकीर नहीं बनती हैं और यह जल्द ही मिट जाती हैं। पिछले दो सालों में इस क्लीनिक में 40 से अधिक पाम प्लास्टिक सर्जरी हो चुकी हैं। हथेली में पांच से 10 लकीरें कहीं भी बनाने में महज 10-15 मिनट लगते हैं।

आईसी लगे इन क्रेडिट कार्ड से नहीं हो सकेगा फ्रॉड!

आसानी से डुप्लीकेट किए जा सकने वाले मैग्नेटिक कार्ड्स की जगह कंपनियां आईसी चिप का ऑप्शन अपना रही हैं। हिडन कार्ड एक ऐसा ही कॉन्सेप्ट है, जिसमें सीपीयू, ऑपरेशन सिस्टम, मैमोरी एरिया और सिक्योरिटी अल्गोरिथम को आईसी चिप कार्ड में डाला गया है। कार्ड में चिप अंदर छिपी रहती है। पासवर्ड डालने पर ही कार्ड पहले अनलॉक होता है, जिससे आईसी चिप बाहर निकलती है। इसके कारण इसे कई जगहों पर उपयोग कर सकते हैं। आईसी चिप कार्ड में बाईं ओर लगी होती है, जो कोड को कनेक्ट करने के लिए सर्वर की तरह काम करती है। इसे द. कोरिया की डिजाइन टीम कोरिया आम्डे फोर्स से बनाया है।

पर्यावरण

वृक्ष हमारे जीवन दाता

❒ दयाकान्त सक्सैना

वन वह सुरक्षित स्थल है जहां हमको सम्पूर्ण जैव विविधता के दर्शन होते हैं। जैव विविधता से तात्पर्य है एक क्षेत्र के जीन, जातियां तथा पारिस्थितिकी तंत्र की संख्या, अर्थात् विश्व में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तु एवं उनकी विविध जातियां जैव विविधता के अन्तर्गत आती हैं।

प्रकृति में जीवाणु, कवक, पादप तथा जन्तु एवं मृदा वायु, जल, सूर्य का प्रकाश एवं अन्य भौतिक कारकों के मध्य क्रिया के फलस्वरूप पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) बनता है, जिससे जीव जन्तुओं को वायु, भोजन तथा आश्रय प्राप्त होता है। जंगल में हमें सूक्ष्म जीव से लेकर समस्त प्रकार के शाकाहारी तथा मांसाहारी जन्तु मिलते हैं जो खाद्य शृंखला का निर्माण करके परस्पर आश्रित रहते हैं। प्रकृति में पौधे ही मात्र ऐसे जीव हैं जो कार्बन डाई आक्साइड गैस लेकर भोजन बनाते हैं तथा शुद्ध वायु के रूप में आक्सीजन प्रदान करते हैं, ध्वनि एवं वायु प्रदूषण को समाप्त करते हैं। इस प्रकार वृक्ष तथा अन्य जीव जन्तु प्रकृति की अनमोल धरोहर है, यदि मनुष्य को स्वस्थ रहकर लम्बा जीवन जीना है, तो विभिन्न जीव जन्तु एवं पादपों को ईश्वर की अनमोल धरोहर मानकर वृक्ष एवं सम्पूर्ण जैवविविधता को नष्ट होने से बचाना होगा। इस प्रकार सम्पूर्ण जैवविविधता (Bio Diversity) की रक्षा एवं संरक्षण करना ही वनमहोत्सव का उद्देश्य है।

वनों से हमें अनेक लाभ हैं यथा-

1. वनों से हमें विभिन्न प्रकार की औषधि जैसे अडूसा वज्रदंती, आंवला, निकोटीन, कुनेन, ग्वारपाठा, आँधी भाड़ा, गोखरु शंखपुष्पी, रूद्राक्ष, विल्व, वन तुलसी, अगस्त्य, मछुआ, सहजन, अश्वगंधा वहेड़ा, करंज, अर्जुन, अमलतास, ब्राम्ली, शंखपुष्पी, पीली कटेली, तथा ढांक आदि पादपों से विभिन्न प्रकार की औषधि प्राप्त होती है।
2. रतन जोत (जेट्रोफा कर्केस) से बायो डीजल बनाया जाता है।
3. वनों से इमारती नामक पादप लकड़ी पशुओं को आश्रय, भोजन, गोंद, ग्वारपाठा, रेजिन, हाथी दाँत, मृग कस्तूरी, रवर (लेअेक्स), शुद्ध रेशम आदि प्राप्त होता है।
4. वनों से शुद्ध ऑक्सीजन तथा समस्त जन्तुओं को फल, कन्द मूल फल, मेवा एवं भोजन मिलता है।
5. जंगल वर्षा को आकर्षित करते है, उपजाऊ मिट्टी (हयूमस) का निर्माण करते हैं, तथा मृदा अपरदन को रोकते हैं तथा वायुमण्डल में नमी प्रदान करके ग्लोबल वार्मिंग को कम करते हैं।
6. प्राकृतिक सुन्दरता के रूप में शांति, स्वच्छता, घूमते जीव जन्तु, तैरते हुए जलीय जन्तु एवं शुद्ध पर्यावरण (21% आक्सीजन) जंगल में ही मिलते हैं।
7. जंगल से सेलूलोज तथा विभिन्न आदि वासियों को रोजगार प्राप्त होता है।

भारत में विश्व का 2.16 प्रतिशत स्थलीय भाग है। परन्तु सम्पूर्ण जैवविविधता का 8% हमारे देश में विद्यमान है, हमारे देश में 12 भौगोलिक एवं 8 वनस्पति क्षेत्र हैं तथा हमारे देश के केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान, नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान सुन्दर वन, मानस एवं काजी रंगा राष्ट्रीय उद्यान का चयन 'विश्व धरोहर (World Heritage Sites) स्थान' के रूप में किया गया है।

हमारे देश में विभिन्न पशु जैसे हिरण, चिंकारा, अजगर, चील, घड़ीयाल, गोडावण, बाघ, शेर, तेंदुआ, गिल्वन, रीछ, सारस, सोहन चिड़िया तथा विभिन्न पादप जैसे टीक, जामुन, शहतूत, चीड़, देवदार, चंदन चकनार, रोहिड़ा, पीलू, पलाश टेमेरिक्स, अर्जुन, वांस, नारियल, पीपल, बरगद, अशोक, वज्रदंती जैसे पादप हमारे देश में प्रचुरता से पाये जाते हैं। जैवविविधता जितनी अधिक होगी हमारे देश का आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण संरक्षण के रूप में हम उतने ही अधिक सम्पन्न होंगे।

हमारे देश में पुरातन काल से ही धर्म को विज्ञान से जोड़ा गया है। पीपल, बरगद तथा केला जो सर्वाधिक ऑक्सीजन देते हैं, उनको इसी कारण धर्म से जोड़कर पूजने की परम्परा रही है। फैंगसुई में कछुआ तथा वॉस को संरक्षण उड़ीसा में आम एवं इमली बिहार में महुआ म.प्र. में ढाक आदि वृक्षों को पूजने की परम्परा रही है। सर्प जो हमारी फसल को नुकसान वाले चूहों तथा हानिकारक कीटों का भक्षण करता है, वह शंकर भगवान का आभूषण है, नागपंचमी पर सर्पों की पूजन की परम्परा जैव विविधता की रक्षा का ही सूचक है। प्रकृति में पाया जाने वाला प्रत्येक जीव हमें पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन में लाभ पहुंचाता है उसकी रक्षा करना ही वन महोत्सव का सच्चा अर्थ है।

जुलाई में वर्षा शुरू हो जाती है, हम स्काउट एवं गाइड विज्ञान क्लब आदि के माध्यम से 'वन महोत्सव' पर वृक्षापरोपण करके ट्री गार्ड लगाकर वृक्षों के संरक्षण हेतु उनको गोद लेकर, पक्षियों को दाना खिलाकर परिण्डे बांधकर जन जागरूकता रैली तथा विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं को करवाकर वन महोत्सव मना सकते हैं। इस अवसर पर प्राकृतिक संसाधानों एवं जैवविविधता की रक्षा करने की प्रतिज्ञा भी करवा सकते हैं।

मानसून आने पर विद्यालय के समस्त अध्यापक बन्धु छात्र तथा उनके परिजन 'वनमहोत्सव' पर एक-एक वृक्ष लगाकर उसके संरक्षण का संकल्प लें तो हमारा 'वनमहोत्सव' मनाना सार्थक होगा इसके साथ ही पक्षी तथा प्रत्येक जीव-जन्तु को दाना, भोजन एवं पानी आवश्यकता एवं सुविधानुसार उपलब्ध कराने का संकल्प लेकर भी 'जैवविविधता' का संरक्षण होगा, इससे न केवल वनों का विकास होगा अपितु 'ग्लोबल वार्मिंग' तथा 'ओजोन परत क्षरण' को भी रोकने में मदद मिलेगी और बेहतर स्वास्थ्य प्राप्त कर सकेंगे।

तपती धरती करे पुकार,
वृक्ष लगाकर करो शृंगार।
है पावन संकल्प हमारा,
हराभरा हो यह जग हमारा।।

-प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. मनियाँ, धौलपुर
मो. 9887597567

संस्मरण : कैसे भूलूँ

अनोखी जीत में छिपी करारी हार

❑ अक्षय सिंह कछवाहा

(श्री अक्षय सिंह कछवाहा 84 वर्ष के हैं। सूर्यनगरी जोधपुर में विराजते हैं। सतत लिखते-पढ़ते हैं। स्वाध्यायी श्री कछवाहा फोन पर शिविरा से बात करते रहते हैं। प्रस्तुत संस्करण मुझे सुनाया और दुःख व प्रायश्चित भाव से उसे प्रकाशित करने के लिए भिजवाया कि आज की पीढ़ी के हमारे शिक्षक कहीं ऐसी भूल नहीं करें। हम उनके प्रति आभारी हैं। परमात्मा उन्हें लंबी आयु प्रदान करें। -**वरिष्ठ संपादक**)

मैं अभी 84 वर्ष का हूँ। मुझे अपने गुनाहों का बार-बार ख्याल आता रहता है। एक ऐसा गुनाह, जिसे मैं पहले अपनी अनोखी जीत समझ कर इठलाता फिरता था। उस समय मेरी आयु 46 वर्ष की थी। प्रधानाध्यापक पद के अहंकार में अन्धा था। मैंने एक विद्यार्थी अभय सिंह को डंडे के भय के कारण, विद्यालय छोड़ कर जाने के लिए मजबूर कर दिया था। 'सजा के भय' का आतंक विद्यालय में इसलिए भी था कि मैंने दो छात्रों को पूर्व में उनकी शिकायतों पर डंडे से पीटा था। 'एक था हॉकी टीम का केप्टीन और दूसरा मेरा ही लड़का।' अभय सिंह ने पत्र-पत्रिकाएँ फाड़ने की चोरी की थी। उस भूल को मैंने गम्भीर ले लिया था। छात्र को मेरे डंडे के भय ने इतना भयभीत कर दिया कि उसे टी.सी. लेकर जाना पड़ा।

मुझे खुशी हुई थी उस समय वह स्वतः ही विद्यालय छोड़ कर चला गया। मुझे विद्यालय के वातावरण के खराब होने का भय था, वह स्वतः ही बच गया था। उसे मैंने अपनी जीत समझ ली थी। उसकी टी.सी. पर अंकित था-दो वर्ष तक सीनियर कक्षा में फेल। उस कारण उसे अन्य विद्यालयों में प्रवेश लेना संभव नहीं रहा था। अतः उसकी जिन्दगी से, मेरे व्यवहार के कारण खिलवाड़ हो गया था। उस घटना पर पश्चाताप की आग मुझे आज भी जलाती जा रही है। वह मेरी करारी हार थी।

सन 1977 के आस पास, मैं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय निमाज (पाली) में प्रधानाध्यापक था। विद्यालय उस समय पुराने छोटे परिसर में चलता था। विद्यालय के 'बरामदे' में वाचनालय स्थापित था। दो छात्र उसके प्रभारी थे। शिकायत आई थी कि-'कोई छात्र पत्रिकाओं से चित्र फाड़ता है।' उस पर मैंने प्रार्थना-सभा में सूचित कर दिया था कि 'कोई पत्रिकाएँ फाड़े नहीं, फाड़ने वाले को सजा दी जाएगी।' अभयसिंह ने उस आदेश की अवहेलना करते हुए, पत्रिकाओं से चित्र फाड़े। वह चोरी अन्य छात्रों ने देखली। उन्होंने अभय सिंह को रोकने की कोशिश भी की। अभयसिंह ने उन्हें भय दिखाया कि अगर किसी ने उसकी शिकायत की तो ठीक नहीं होगा। उक्त चोरी की शिकायत गुप्त रूप में मुझे की गई। शिकायत कर्ता का नाम गुप्त रखने का निवेदन किया गया था।

मैं उलझन में फंस गया। कैसे सजा दी जाए? जैसे ही दोष बताकर सजा देने लगेंगे, वह अपने दोष का प्रमाण मांगेगा। प्रमाण में निर्दोष प्रभारी छात्रों का नाम बताए जाने पर उनका मुझ में विश्वास व सुरक्षा का 'कवच' सदा के लिए टूट जाएगा। ऐसी स्थिति में कुछ वरिष्ठ अध्यापकों से सलाह ली गई। सभी की राय थी कि इस चोरी को नजर-अंदाज कर दें, नहीं तो विद्यालय व आपका अहित हो जायेगा। और आगे कहा-'अभयसिंह हॉकी का खिलाड़ी, सीनियर कक्षा का विद्यार्थी, पुलिस अधिकारी का पुत्र व यहाँ का मूल निवासी भी है।'

मेरा मन नहीं माना। सजा देने की इच्छा दिमाग में घूमती रही थी। अभयसिंह विद्यालय में आते व जाते समय मेरी ओर शेर की तरह आँखें तरेर कर गुजरने लगा, जैसे मुझे 'ललकार' रहा हो। मैं हताश होता जा रहा था। कुछ दिनों तक यह सिलसिला चलता रहा।

एक दिन मैं और स्कूल का चपरासी, स्कूल से घर जा रहे थे। हमारी नजरें एक मकान की दीवारों पर पड़ीं। हमने देखा वहाँ पर पत्रिकाओं से फाड़े गये चित्र चिपके हुए थे। वह मकान अभयसिंह का ही था। उससे एहसास हो गया था कि उसी विद्यार्थी ने ही पत्रिकाएँ फाड़ी थीं। वह बात कुछ वरिष्ठ अध्यापकों को भी बताई। फिर भी उन्होंने सलाह दी थी कि उस चोरी को नजर-अंदाज करने में ही लाभ रहेगा।

मेरा मन तब भी नहीं माना था। उस चपरासी के सहयोग से एक योजना बनाई गई। स्कूल के स्टोर से चित्रों वाली पुरानी पत्रिकाएँ जैसे धर्मयुग, हिन्दुस्तान आदि प्रचलित पत्रिकाएँ इकट्ठी करके एक बन्डल तैयार किया गया था। वह बंडल अभयसिंह को उसके घर जाकर दे आना और उसे कह देना कि-'तुम चित्र काटना जानते हो, अतः इनसे चित्र काटकर लाना और प्रधानाध्यापकजी का कक्ष सजा देना, आदि।' ज्योंही बंडल उस छात्र को दिया गया, छात्र हक्का-बक्का होकर उछल पड़ा और बंडल वापस लौटा दिया था। चपरासी से वह कथन सुनने के बाद पूरा विश्वास दृढ़ हो गया था कि वही छात्र दोषी था।

मैं सदा की भाँति स्कूल में आते-जाते विद्यार्थियों पर नजर रखे हुए स्कूल के द्वार पर खड़ा रह रहा था। जब भी अभय सिंह गुजरता उसकी नजरें नीचे रहने लग गई थीं, जैसे वह दोषी था। पूर्व की भाँति मुझसे नजर मिलाने की हिम्मत नहीं रही थी।

पत्रिकाएँ भी फाड़ी जानी बंद हो गई थीं, लेकिन उस विद्यार्थी का पढ़ाई में मन नहीं लग रहा था। विषय अध्यापकों ने भी उसे कक्षा में अन-मना, खोया-खोया महसूस किया था। बोर्ड की परीक्षा हुई। परीक्षा फल भी घोषित हुआ। हमारी स्कूल का परीक्षा फल उत्तम रहा। लेकिन अभयसिंह फेल हो गया था। नए सत्र के प्रारम्भ में ही वह अपनी टी.सी. लेकर चला गया। टी.सी. पर अंकित था दो वर्ष तक लगातार फेल।

वह बात जब स्टाफ में बताई गई तो सभी को खुशी हुई। एक शैतान से स्वतः ही छुटकारा मिल गया था। मैं भी अपनी जीत पर बड़ा ही खुश हुआ था। उस अनोखी जीत की चर्चा संगोष्ठियों व अपने मित्रों के बीच करता इठलाने लगा था। वह मेरी अद्भुत जीत थी जिसके केन्द्र में करारी हार छिपी थी।

करीब दो वर्ष बाद मेरा स्थानान्तरण हो गया और मैं पाली जिले में ही वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारी बन गया था। मैं एक दिन सादड़ी (पाली) क्षेत्र की स्कूलों का निरीक्षण कर मुख्यालय लौटने के लिए, बस की इन्तजार में सादड़ी बस स्टैण्ड पर बैठा था। संयोग से अभयसिंह के पिता से मेरी मुलाकात हो गई। उन्होंने मुझे पास के केण्टीन में चाय पीने के लिए आमंत्रित किया था। चाय पीते हुए उन्होंने कहा, 'आप कैसे हेड मास्टर थे, आप ही के कारण मेरा लड़का फेल हो गया था और उसे स्कूल छोड़नी पड़ी,' आदि। गुस्से में कहा था। मैंने जवाब दिया 'मैं कहाँ दोषी, विद्यालय का परीक्षाफल बहुत अच्छा रहा था। आपके लड़के ने ही पढ़ाई ठीक नहीं की थी। कुछ ही देर बाद बस आ गई थी और मैं बस से रवाना हो गया था।

बस में यात्रा करते समय पिता के बोल मस्तिष्क में घूमने लगे थे, मन भारी हो गया। बस पाली पहुँचने के बाद घर चला गया था। दूसरे दिन सवेरे पुनः 'पिता के बोल, मस्तिष्क में आने लगे थे। **अपने आप को पिता के स्थान पर रख कर सोचने लगा। ख्याल आया वह छात्र भी मेरे पुत्र के समान था। मुझे उसे माफ कर गले लगा लेना था। ध्यान आया जब मैं बालक था तब मैंने भी अपने बड़े भाई की पुस्तकों से चित्र फाड़े थे। पिताजी और जीजी के रुपये चुरा-चुरा कर खोमचे वालों से चटपटी वस्तुएं खायी थीं। मेरी चोरियों का पता लगने पर भी जरा सी डाँट के बाद भरपूर प्यार मिला था।** आदि। ख्याल आता रहा था। मुझे लगा मैं ही दोषी था। पिता का दर्द सही था। मैंने क्यों नहीं इस छात्र को माफ किया? मुझे अपनी योग्यता पर तरस आने लगा। मैं इतनी योग्यता धारण करने के पश्चात् भी अच्छा शिक्षक नहीं बन सका! अपने पद व योग्यता के मद में अन्धा हो गया था।

काश मैं पहले ही समझ जाता तो बच्चे को पढ़ाई से दूर नहीं भागने देता। मेरे सामने अनेक अवसर आए थे जहाँ बच्चे को मदद कर सकता था। भूल पर भूल करता रहा। जैसे-

1. जैसे ही मुझे एहसास हुआ था कि अभयसिंह ने पत्रिकाएँ फाड़ी थीं, उसी समय उसके पास जाकर गलती बताते हुए प्यार से गले लगा लेना था।
2. यदि वह भूल हुई थी तो जब वह टी.सी. लेने आया, तब भी मुझे उसे रोक कर प्यार देना था और निरन्तर पढ़ते रहने को प्रोत्साहित करना था।
3. यदि फिर भी भूल हुई थी तो, पिता का दुख सुनने के पश्चात् भी विद्यार्थी से सम्पर्क कर पुनः विद्यालय में प्रवेश हेतु या अन्य तरह यथा योग्य सहायता करनी थी।
4. यदि तीसरी बार भी भूल हुई थी तो, अपनी भूल का एहसास होने पर विद्यार्थी का पता लगाकर, उसकी स्थिति जान कर, उसे यथा योग्य सहायता करनी थी।

लेकिन मैं भूल पर भूल करता रहा था, और मगरमच्छ की तरह थोथे आँसू बहाता रहा था। मैं कितना घमंडी व अयोग्य साबित हुआ? अपनी जीत पर अभिमान करता रहा। बाद में पता चला था कि वह मेरी करारी हार थी। कितनी बड़ी भूल? बच्चे को पढ़ने से वंचित कर दिया था। अब सिर्फ पश्चाताप के आँसू बहाते रहने के अलावा कुछ भी नहीं बचा। यह आग जलाती जा रही है। इसे कैसे भूलूँ।

श्री ओमजी सारस्वत, वरिष्ठ सम्पादक 'शिविरा' का आभारी हूँ कि उन्होंने मेरे सोये हुए अध्यापकीय तत्व को जगा दिया। इस अवस्था में भी लिखते रहने की प्रेरणा दी। **इसे लेख मात्र नहीं समझे, बल्कि एक प्रसारित याचना-पत्र समझें। वह विद्यार्थी जहाँ कहीं पर भी हो सूचना मिलते ही मुझ से, यथा सम्भव माध्यम से सम्पर्क करे। मैं अपने 'पाप' को धो सकूँ। यथा योग्य उसकी सहायता कर सकूँ। यही मेरी प्रार्थना है।**

शिक्षक भाई-बहिनों से भी विनम्र निवेदन है वे मेरी तरह कभी भूल नहीं करें। हो सके तो स्कूल से वंचित बच्चों को स्कूलों की ओर आकर्षित कर अपने बच्चों की भांति शिक्षित करते रहें।

-अमृतिया बेरा, महा मन्दिर, जोधपुर-342010
फोन 0291-2546141

अवगुण चित न धरो

स्वामी विवेकानन्दजी का खेतड़ी से गहरा लगाव था। महाराजा अजीतसिंह के स्वामीजी परम श्रद्धेय थे। वे उन्हें आग्रहपूर्वक अपने यहाँ लाये थे और अपने महल में ठहरा रखा था।

महाराज के सहयोग से ही स्वामीजी शिकागो के विश्वधर्म सम्मेलन में पहुँचे थे। जब स्वामीजी वहाँ ठहरे हुए थे, एक दिन अजीतसिंह ने मनोरंजन कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें नाच-गाने का प्रावधान भी था। स्वामीजी को भी इस आयोजन में अनुरोध करके बुलाया गया।

इस प्रकार के कार्यक्रम स्वामीजी के रुचि के अनुकूल नहीं थे फिर भी वे राजाजी के आग्रह को टाल नहीं सके। वाद्य यंत्रों के साथ नृत्यांगनाओं के नृत्यादि शुरू हुए। उन्हें देखकर स्वामीजी आक्रोशित हुए उठकर अपने निवास स्थान की ओर चल पड़े। उन्हें रोक भी कौन सकता था। उन्हें जाते देख नृत्यकी ने गाना शुरू किया-

प्रभु! मोरे अवगुण चित न धरो।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो अपने मन हि करो।
इक लोहा पूजा में राखत इक घट बलिक परो।
यह दुविधा पारस नहीं जानत कंचन करत खरो।
एक निदया एक नार कहावत मैलो नीर भरो।
जब मिलिके दोउ एक बरन भए सुरसरि नाम धरो।
इक जीव एक ब्रह्म कहावत सूर श्याम झगरो।
अब भी बेर मोहि पार उतारो नहिं मन जात हरो।

स्वामी जी को ये बोल प्रभावित कर गये और वे तत्काल वापिस मुड़ कर सभागार में आ गये और नृत्यांगना से कहा-''माँ तुमने मेरी आँखें खोल दी। मुझे ज्ञान दे दिया। मैं आपका आभारी हूँ। मैं हर नारी को माँ के रूप में देखूँगा। पतित दलित के उद्धार हेतु सदैव प्रयत्नशील रहूँगा। पतित दलित को हेय दृष्टि से नहीं देखूँगा। सबको समान दृष्टि से देखूँगा। सब का सम्मान करूँगा। समान दृष्टि से देखूँगा और यह व्रत उन्होंने जीवन भर निभाया।

-टेकचन्द शर्मा

रेगिस्तान में निखिलस्तान

राज्य का अन्नदाता है श्री गंगानगर

❒ गुरजीत सिंह बराड़

श्री गंगानगर जिला पूर्व में बीकानेर रियासत का ही एक भाग था। जोधपुर के संस्थापक राव जोधा के पुत्र राव बीका ने बीकानेर की स्थापना की थी। चूंकि गंगानगर बीकानेर रियासत का भाग था, इसलिए कहा जाता है कि बीकानेर के इतिहास में ही श्री गंगानगर का इतिहास छिपा है। राव बीका के उपरान्त राव लूणकरण के पुत्र जरासिंह ने बीकानेर राज्य की सीमाओं को बढ़ाने के लिए अनेक युद्ध लड़े। वीर एवं निडर राजपूत शासकों ने 15 वीं शताब्दी में एक नए बीकानेर राज्य का निर्माण किया। वर्तमान में श्री गंगानगर जिले के नाम से ज्ञात यह अंचल बीकानेर रियासत के अन्य भागों सहित राजस्थान का हिस्सा बना। इस प्रकार 30 मार्च 1949 को श्री गंगानगर जिला अस्तित्व में आया। श्री गंगानगर की स्थापना महाराज गंगा सिंह ने की थी, जिनके नाम पर ही इस जिले का नाम पड़ा। इतिहास में भी यह आता है कि पूर्व में भी यह क्षेत्र बहावलपुर रियासत में आता था, किन्तु बहुत बड़ा खुला क्षेत्र होने के कारण इसकी कोई विशेष देखरेख नहीं होती थी। महाराजा गंगासिंह के तत्कालीन साथी हिन्दुमल ने इस अवसर का लाभ उठाना चाहा और उसने राज्य की सीमाओं को धीरे-धीरे बढ़ाना शुरू कर दिया। उसने दक्षिण में सूरतगढ़ व उत्तर में हिन्दुमलकोट तक सीमाएं बढ़ा दीं। उसने महाराजा गंगा सिंह को अपनी सफल योजना के बारे में बताया। जब वह उत्तरी भाग में पहुँचा और वहां उसकी मृत्यु हो गई तो उस जगह का नाम उसके नाम पर हिन्दुमलकोट रखा गया।

सन् 1899-1900 में बीकानेर राज्य में अत्यधिक भयानक हालात को पैदा हुए। इस समस्या को दूर करने के लिए महाराजा गंगासिंह ने ए.डब्ल्यू.ई. स्टैन्डले जो कि मुख्य अभियन्ता थे, की सेवाएं ली, जिन्होंने सतलुज नदी के पानी से राज्य में कृषि करने की संभावनाओं को तलाशा। सतलुज वैली प्रोजेक्ट का निर्माण पंजाब के मुख्य अभियन्ता आर.जी. कैनेडी ने किया, उसके अनुसार ही तत्कालीन बीकानेर राज्य के बड़े क्षेत्र में फसलों हेतु जल की योजना बनाई गई। लेकिन तत्कालीन बहावलपुर राज्य के सहमत नहीं होने पर यह परियोजना देर से शुरू हुई। **गंगनहर परियोजना की नींव फिरोजपुर में 5 दिसम्बर 1925 के दिन रखी गई। सन् 1927 में 143 किमी. लम्बी नहर का कार्य सम्पन्न हुआ। उद्घाटन समारोह 26 अक्टूबर 1927 को भारत के वायसराय लार्ड इरविन के करकमलों से सम्पन्न हुआ।**

प्रारम्भ के कुछ समय तक श्री गंगानगर एक अज्ञात ग्राम के रूप में रहा। श्री गंगानगर के दक्षिण में बीकानेर, दक्षिण-पूर्व में चूरू, उत्तर पूर्व में हनुमानगढ़ तथा उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान का बहावलपुर जिला स्थित है। श्री गंगानगर का जलवायु गर्म होने के कारण सर्वाधिक आंधियाँ यहाँ चलती हैं। यहां रेतीली मिट्टी होने के कारण जल की पर्याप्त आपूर्ति मिलने पर उत्पादन शक्ति अधिक हो जाती है तथा यहाँ की जमीन सोना उगलती है। यह जिला राज्य के रेतीले व शुष्क क्षेत्र में पड़ता है। पूरे क्षेत्र में बालूका रेत पाई जाती है। गंगनहर ने जिले की मरुस्थलीय मिट्टी को सोने में बदल दिया है। सच ही कहा जाता है कि गंगनहर न केवल श्री गंगानगर और बीकानेर के लिए ही अपितु पूरे राज्य के लिए भाग्य बनकर आई। राज्य में सर्वाधिक गेहूं श्री गंगानगर में ही पैदा होता है, यही कारण है कि इसे राजस्थान का **'अन्न का कटोरा'** भी कहा जाता है। यहाँ लगभग 25 विभिन्न प्रकार की फसलें बोई जाती हैं और उत्पादन भी सर्वाधिक होता है। कपास को **सफेद सोना** भी कहा जाता है, और यही अमेरिकन कपास भी सर्वाधिक श्री गंगानगर में ही होती है। राज्य मे सर्वाधिक फलों का उत्पादन भी श्री गंगानगर में ही होता है। किन्नू, अंगूर और रेड ब्लड माल्टा के उत्पादन में तो ये जिला काफी आगे है। गन्ने का उत्पादन भी श्री गंगानगर में काफी मात्रा में होता है। गंगानगरी किन्नू पूरे भारत में प्रसिद्ध है।

सन् 1937 में राजस्थान में चीनी का दूसरा कारखाना दी गंगानगर शुगर मिल्स के नाम से खोला गया। 1 जुलाई 1956 को इसका नाम बदलकर श्री गंगानगर शुगर मिल्स कर दिया गया। सन् 1968 में यहाँ चुकन्दर से चीनी बनाने का कार्य शुरू कर दिया गया, लेकिन अब चुकन्दर की पिराई गंगानगर शुगर मिल में बन्द है।

सिंचाई की अधिकता के साथ कृषि के आधुनिक व यान्त्रिक साधनों का उपयोग भी बढ़ता जा रहा है। सूरतगढ़ में एशिया का सबसे बड़ा कृषि फार्म है, जिसका क्षेत्रफल 12,140 हैक्टेयर है। यहाँ शुष्क क्षेत्र में उपयुक्त कृषि का विकास करने, समुन्नत बीज उत्पन्न करने, पशुओं की नस्लें समुन्नत करने आदि के प्रयोग किए जा रहे है। अत: जिले में कृषि व्यवस्था जीविकोयापन कृषि से निकलकर वाणिज्य कृषि की ओर तीव्र गति से बढ़ रही है। कृषि पदार्थों पर आधारित उद्योग-धन्धे पनप रहे हैं, नई चीनी मिल कमीनपुरा में स्थापित की जा रही है। श्री गंगानगर में चीनी कारखाना, औद्योगिक संस्थान आदि जिले में विकास के सूचक हैं।

श्री गंगानगर की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार **19,69,520** है। यह जिला सर्वाधिक सिक्ख आबादी वाला जिला है। कुल साक्षरता दर **70.25%** है। यहाँ राज्य का छठा शुष्क बन्दरगाह भी है। सूरतगढ़ में राजस्थान का पहला सुपर थर्मल पावर स्टेशन है।

प्रशासनिक व्यवस्था

श्री गंगानगर जिले में कुल 6 उपखण्ड तथा 9 तहसीलें व 6 उप तहसीलें हैं। ग्राम पंचायतों की संख्या 320 है। जिले में 6 विधानसभा क्षेत्र हैं।

दर्शनीय स्थल

बुड्ढा जोहड़ गुरुद्वारा:- श्री गंगानगर जिले में राजस्थान का सबसे बड़ा गुरुद्वारा श्री

बुड्ढ़ा जोहड़ गुरुद्वारा स्थित है। यह एक प्रसिद्ध स्थान है, जो भाई सुक्खा सिंह व मेहताब सिंह से सम्बन्धित है। शहीद नगर गुरुद्वारा बुड्ढ़ा जोहड़ के साथ सिक्ख इतिहास का सम्बन्ध 17वीं शताब्दी के प्रारम्भ से जुड़ता है। बाबा बंदा सिंह बहादुर की शहादत के बाद मुगल हुकुमत ने अत्याचारों की हद कर दी और मुस्लिम बादशाह फर्खुसिअर ने आदेश जारी किया कि जहां कोई सिक्ख दिखे उसकी हत्या कर दो। उस अत्याचार के समय सिक्खों को पंजाब से घर-बार छोड़कर दूर-दराज के इलाकों पर जाने के लिए मजबूर होना पड़ा और राजस्थान की बीकानेर रियासत के वीरान जंगल में पानी की अधिकता के कारण डेरा लगाया, उस समय सिक्खों की एक जत्थेदारी ने शहीद बुड्ढ़ा जोहड़ वाले इस स्थान पर अपनी रिहायशगाह बनाया हुआ था। सन् 1740 में बाबा बलाका सिंह के नाम के सिक्ख ने सूचना दी कि पंजाब छोड़ने के बाद मुस्लिम हमलावर मस्सा रंगड़ ने श्री हरिमंदिर साहिब पर कब्जा कर लिया है और वहां शराब के दौर चलते हैं तथा कन्जरियों के नाच होते हैं, गुरुघर की घोर बेअदबी हो रही है। जत्थेदार बुड्ढ़ा सिंह की इच्छा व सिक्खों के फैसले के अनुसार श्री हरिमंदिर साहिब की पवित्रता को बहाल करने का बीड़ा उठाया भाई सुक्खा सिंह, मेहताब सिंह ने।

तरनतारन के पास गांव के चौधरियों का वेश बनाकर गांव का राजस्व (मामला) भरने के बहाने ठीकरियों को थैलियों में भर लिया और अमृतसर पहुंचने पर योजनानुसार अपने घोड़े अकाल बुर्गे के सामने इलायची बेरी से बांध दिए और अरदास करके दोनों वीर सूरमें, श्री हरिमंदिर साहिब में खाट पर बैठा हुक्का पी रहा था, जब उसे कहा गया कि चौधरी मामला भरने आए हैं, तो थैलियां पेश करने का हुक्म दिया, थैलियां पेश होने पर तस्सा रंगड़ उन्हें देखने लगा तो भाई मेहताब सिंह ने फुर्ती से अपने श्री साहिब (तलवार) से वार करके मस्सा का सिर धड़ से अलग कर दिया। सुक्खा सिंह ने पलक झपकते ही रंगड़ का कटा सिर अपने भाले पर टांग लिया और दोनों बाबा बुड्ढ़ा सिंह के जत्थों के सिक्खों के पास आ गए और मस्सा का कटा सिर खालसा दल के दीवान में पेश किया। शहीद नगर गुरुद्वारा बुड्ढ़ा जोहड़ की नींव संत फतह सिंह द्वारा रखी गई। शहीद नगर गुरुद्वारा श्री बुड्ढ़ा जोहड में 2 विद्यालय चल रहे हैं तथा एक सुक्खा सिंह भाई मेहताब सिंह विद्यालय भी है। गुरुद्वारे का मुख्य हॉल 22 खम्भों पर टिका हैं व लगभग 140 कमरे हैं। यह गुरुद्वारा वीर सिक्ख सूरमाओं की गाथा की जिन्दा मिसाल है।

लैला-मजनूं की मजार

यह मजार श्री गंगानगर जिले के अनूपगढ़ क्षेत्र में स्थित है। यह मजार लैला-मजनूं के पवित्र प्रेम की प्रतीक है। माना जाता है कि वे दोनों सिन्ध से श्री गंगानगर आए थे, यहीं रहे, यहीं उन दोनों की मृत्यु हो गई और इनकी याद में यहां मजार बना दी गई। यहां प्रति वर्ष जून माह में दो दिन का मेला भी लगता है, जिसमें खासकर नव विवाहित तथा प्रेमी जोड़े मन्नत मांगने आते हैं।

चानणा धाम

यहाँ हनुमान जी का विशेष मान्यता प्राप्त मंदिर है। श्री गंगानगर जिले में स्थित चानणा धाम एक अति प्रसिद्ध स्थान है, यहाँ हर माह की चतुर्दशी को मेला लगता है तथा वार्षिक व अर्द्धवार्षिक मेलों का भी आयोजन किया जाता है। यहाँ आस-पास के राज्यों विशेषकर पंजाब, गुजरात, हरियाणा से हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते रहते हैं।

हिन्दुमलकोट

श्री गंगानगर का यह स्थान राजस्थान में पाकिस्तान से लगती अन्तर्राष्ट्रीय सीमा रेडक्लिफ रेखा का प्रारम्भिक बिन्दु है। यह एक संवेदनशील स्थान है। राजा हिन्दुमलकोट के नाम पर इस स्थान का नाम हिन्दुमलकोट पड़ा था।

ये हैं गंगानगर जिले से सम्बन्ध रखने वाली महान विभूतियाँ जिन्होंने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान को विशिष्ट पहचान दिला कर जिले का नाम रोशन किया-

जगजीत सिंह-विश्वविख्यात गजल गायक जगजीत सिंह का जन्म 8 फरवरी 1941 को श्री गंगानगर में हुआ। उन्हें 2003 में पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया। उन्होंने विश्व में श्री गंगानगर का नाम रोशन कर दिया। ब्रेन हैमरेज के कारण 10 अक्टूबर 2011 को इनका निधन हो गया।

कर्नल अवतार सिंह चीमा-अर्जुन पुरस्कार विजेता कर्नल अवतार सिंह चीमा (1933-89) को प्रथम भारतीय एवरेस्ट विजेता होने का गौरव प्राप्त है। श्री गंगानगर में इनका जन्म होने के कारण श्री गंगानगर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है। सन् 1965 में उन्होंने प्रथम भारतीय के रूप में एवरेस्ट पर झण्डा फहराया।

रविन्द्र कौशिक-श्री गंगानगर के ये महान व्यक्तित्व पूर्व में रॉ के जासूस थे।

महाराजा गंगा सिंह-बीकानेर रियासत के शासक महाराजा गंगासिंह ने गंगनहर का निर्माण कर इस रेगिस्तानी भू-भाग को नखलिस्तान में बदलने का अनूठा कार्य किया। इसे रेलवे लाइन से भी जोड़ा। उनके ही प्रयासों का परिणाम रहा कि इस क्षेत्र में फसलोत्पादन का सिलसिला शूरू हुआ और आज यह क्षेत्र अन्न उत्पादन में पूरे देश में अग्रणी है। **गंगनहर आगमन पर श्री गंगानगर में हल चलाकर कृषि की शुरूआत महाराजा गंगा सिंह ने की तथा पूजा अर्चना पं. मदनमोहन मालवीय ने करवाई थी।**

इंजीनियर कंवरसेन-यह क्षेत्र इंजीनियर कंवरसेन को कभी नही भुला सकता, जिन्होंने देश ही नहीं, विश्व की सबसे बड़ी नहरों में शामिल राजस्थान परियोजना (अब इंदिरा गांधी नहर परियोजना) का निर्माण किया और परियोजना के माध्यम से हिमालय का जल राजस्थान में लाकर पूरे श्री गंगानगर सहित कई जिलों का कायाकल्प किया।

मेहरदीन-रुस्तम-ए-हिन्द, भारत भीम, भारत केसरी का खिताब हासिल करने वाले प्रसिद्ध पहलवान है। मेहरदीन तामकोट गाँव (श्री गंगानगर) के निवासी थे।

इस प्रकार भारत-पाक अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर बसा यह जिला श्री गंगानगर निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है। श्री गंगानगर के जो प्रवासी किसी कारणवश कहीं ओर जा बसे हैं, उनके मन में आज भी अपना मूल स्थान श्री गंगानगर बसा हुआ है। प्रगति की राह में श्री गंगानगर पहले भी आगे था और भविष्य में भी आगे ही रहेगा। अभी हाल में श्री गंगानगर में मेडिकल कॉलेज की स्थापना का मार्ग भी प्रशस्त हो गया है। श्री गंगानगर मात्र कृषि में ही नहीं वरन् व्यापारिक, शैक्षणिक रूप से भी पूरे राजस्थान में अपनी एक अलग पहचान बनाने के लिए प्रयासरत है।

-प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.विद्यालय तामकोट, पदमपुर (श्रीगंगानगर)
मो. 09414432317

पुस्तक समीक्षा

अस्तित्व नए मोड़ पर /कविता संग्रह : कीर्ति केसर / उनी स्टार बुक्स प्रा. लिमिटेड इण्डिया, चण्डीगढ़ / संस्करण : 2013 / पृष्ठ संख्या : 116 / मूल्य : ₹ 150

भावों और विचारों को संस्कारों की भूमि पर संवेदना से रिक्त कर अनुभव के यथार्थ को शब्दों में बाँधे जाने की प्रक्रिया में कविता का जन्म होता है जिसे लेखनी लयबद्ध कर कागज पर उतार देती है। अच्छी और प्रभावशाली कविता के लिए शब्दों को अन्य लोक से आयात करने की आवश्यकता नहीं है, समाज के दुःख-दर्द और रिश्तों के बारीक धागे कविता को बुनते हैं, उसका कलेवर बनाते हैं जिस अनुभूति के रंग फुलवारी उकेर कर उसे सुसज्जित कर देते हैं।

इस काव्य संग्रह की कुल छब्बीस कविताओं को कवयित्री ने अनुभूति, विचार, परिवेश और बोध के चार भागों में विभक्त किया है। कवयित्री पंजाब की धरती से है अतः भाषा में पंजाबी शब्द तथा रचनाओं में पंजाब के लोक चरित्रों की उपस्थिति दर्ज कराती है। प्रेमाधारित 'अनुभूति' खंड में जहाँ साहिबाँ अर्थात् नारी भावना प्रधान होने से प्रेम को जीती है वहीं मिर्जा अर्थात् भोक्ता के रूप में पुरुष यथार्थ की सपाट भूमि पर विचरता है। प्रिय से बिछुड़ कर नारी, चाँदनी के पौधे के बढ़ने-खिलने के साथ उसकी यादों के अतीत को अँधेर कर रखती है। वह प्रिय के जाने हुए खाली 'घर' को किराए पर भी नहीं देना चाहती। उसे सब 'याद है', जहाँ प्रेम में प्रिय की आँखों से टपकी ओस (अश्रु) की बूँदें उसके प्राणों का शृंगार करती हैं वहीं प्रिय के द्वारा किया गया विश्वासघात उसके हृदय में तूफान उठाकर 'सदमा' पहुँचाता है। जीवन के इस मोड़ पर उसका 'अतृप्त' हृदय शांति के बादल की प्रतीक्षा में है।

'विचार' खंड का प्रारंभ कवयित्री बूढ़े व अक्षम स्रष्टा के नाम ई मेल भेज कर करती है कि वह पद त्याग कर नया रब्ब पदासीन कराए जो छद्म व्यवस्थाओं से मुक्ति दिलाकर स्वचेतना के धर्म की स्थापना करे। बूढ़े रब्ब के पद त्याग की व्यवस्था देते हुए अहिल्या के प्रसंग का प्रयोग, श्रेष्ठ कवि कर्म का प्रमाण है। देशों के बँटवारे से अदीबों के दिलों और साहित्य को अप्रभावित मानती कवयित्री नफरतों व अधिकार लिप्सा के शिकार होने के पूर्व के काश्मीर के सौंदर्य को पुनर्स्थापित देखने की इच्छा करती है। आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य करती कवयित्री जहाँ पेप्सी-पिज्जा वाली आधुनिकता के बोझ से दबे बचपन से सीधे युवा होते 'व्यस्त अर्जुन को देख कर दुःखी है वहीं मानवता से गिर कुत्तों से भी गए बीते हो गए मानव की मानसिकता पर चोट करती है- 'कुत्ते गली के' नगरीय सभ्यता से प्रभावित हो हद दर्जे के स्वार्थी और संवेदनहीन हो गए हैं। मृत्यु की शाश्वतता को स्वीकारती व सत्कर्म को प्रेरित करती हुई कवयित्री 'बाजार से गुजरा हूँ, खरीददार नहीं हूँ' कहने वाले मिर्जागालिब को उद्धृत कर 'तलब' अर्थात् कामनाओं से मुक्त हो अनासक्त होने की प्रेरणा भी देती है। इसी खंड में स्त्री-पुरुष संबंधों की पड़ताल करती एक श्रेष्ठ कविता है 'तुम्हीं कहो' जो औरत पर जुल्म करना ही पौरुष मान लेने वाले पुरुषों की दोगली नैतिक मान्यताओं पर चोट करती है। 'नन्हे भीखी के नाम' लिखा पत्र शहीदों के परिवार की दुर्दशा व अनदेखी करते सत्ताधारियों की स्वार्थपरक नीतियों की बखिया उधेड़ कर रख देता है। 'इस देश की यह रिवायत है/जो उसके लिए लहू बहाता है/भुला दिया जाता है/जो लहू बहाना जानता है/पीढ़ियों तक सत्ता का सुख पाता है।' पंक्तियाँ शासकों की दिखावटी श्रद्धा का सच उघाड़ती हैं।

स्वार्थपरता, दोगलेपन और संवेदनहीनता के इस युग में आज भी प्राकृतिक 'परिवेश' मन को शांति देता है। घास की मखमली हरियाली, पल्लवों की सुरीली सरसराहट, हवा, खुशबू, फूल, सुनहरे दृश्य और गीत सावन का मानव की सभी चिंताओं को सोख उसे मुक्त हो जाने के आनंद की अनुभूति कराता है पर वाहनों, मशीनों, विज्ञापनों का शोर इस सौंदर्य का 'उत्पीड़न' कर उजाड़ रहा है। प्रकृति पर विजय की आकांक्षा से मानव विभिन्न ग्रहों पर जाकर बसने की योजना बना रहा है इसलिए 'चंदामामा उदास है' कि यह वहाँ भी लोहे के जंगल बनाएगा और विचारों की भिन्नता के दंगल लड़ेगा जिससे प्रकृति का शांतिदायी रस सूख जाएगा।

जीवन यात्रा के अंतिम सोपान पर उसे 'बोध' होता है कि उसका 'अस्तित्व नए मोड़ पर' आ खड़ा हुआ है जहाँ मानव अतीत से जुड़ा भी रहना चाहता है और उसे विसराना भी चाहता है। इस प्रयास में वह अपने आत्मतत्त्व को अहंकार से मुक्त कर निस्सार संसार से 'सार' में समाने की इच्छा करता है। इस प्रयास और तलाश में जब शांति उसकी ओर दृष्टि फेरती है तो बोझिल जिंदगी पुलक उठती है तथा मन में 'कोई साथ' होने की अनुभूति से प्राणों में सुरीली सरगम बजने लगती है। मन में स्फुरण होता है कि सृष्टि के रस व रंग अब भी तुम्हारे भीतर हैं और देवदूतों की तरह दस्तक दे रहे हैं- 'द्वार खोलो', उन्हें महसूस करो और आनंद प्राप्त करो। कवयित्री संदेश देती है कि 'थोड़ा इंतजार' करो, कालचक्र गतिमान है, जीवन में व्याप्त दुःख, व्यथा, बेबसी जाएगी और नई उषा का आगमन होगा। संग्रह के अंत में कवयित्री सब कुछ बिकाऊ और बाजारी होते देख अपने अनमोल अनुभवों, भावनाओं और विचारों को लौटा लाना चाहती है जो मनुष्य को मनुष्यता का मंत्र दे सके।

116 पृ. के संग्रह की रचनाओं में सीधी व सपाट बयानी है। सब कुछ सधी हुई भाषा में सोच समझ कर कहा गया है। 'अनुभूति' से बोध तक की यात्रा में ऐसा लगता है मानो कवयित्री पाठक से सीधा संवाद कर रही है और उसी संवाद को कविता में ढालती जा रही है। इस कार्य में उन्होंने बिंबों, प्रतीकों आदि की ओर ध्यान न देकर जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना करने व उन्हें शाश्वतता की ओर ले जाने की ईमानदार कोशिश की है। छंदों के बंधन को नकारता भाषा वैशिष्ट्य कवयित्री की बात को हृदय तक तो पहुँचाता है पर कहीं-कहीं मधुरता का अभाव महसूस होता है फिर भी याद है, 'मैंने भेजी रब्ब के नाम ई मेल', 'तुम्ही कहां', 'अनासक्त', 'कोई साथ' और 'थोड़ा इंतजार' जैसी कविताएँ कवयित्री के आत्मतत्त्व का परिचय देती हैं।

मेरी कामना है कि कीर्ति की कीर्ति केसर की भाँति पाठक के मन को सुगंध से भर दे।

-डॉ. उषा किरण सोनी
ज्ञानकुंज, 307 गाँधी नगर,
लालगढ़, बीकानेर

देखणा सो नीं भूलणा/डॉ. शंकर लाल स्वामी/राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास 7-ग-15, पवनपुरी दक्षिण विस्तार, बीकानेर / पृष्ठ संख्या : 80 / मूल्य : ₹ 100

किसी स्थान या व्यक्ति विशेष को देखने या मिलने पर उसकी छवि हमारे स्मृति पटल पर अंकित हो जाती है और उन स्मृतियों को एकत्र कर हम आनन्दित होते रहते हैं, इसी तरह स्मृति-बिम्बों को संस्मरण के रूप में डॉ. शंकरलाल स्वामी ने राजस्थानी भाषा में अपनी तीर्थयात्रा का संस्मरण ''देखणा सो नीं भूलणा'' लिखा है। यात्रा-संस्मरण के द्वारा डॉ. स्वामी ने भारत की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक एकता को बहुत ही सरल, सुबोध और जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया है, ऐसा लगता है मानो पाठक, पाठक न होकर स्वयं उन स्थानों के दर्शन कर रहा हो। यात्रा संस्मरण को कुल 15 अंकों में बांटा है जिसमें प्रथम 13 अंकों में उनकी सन् 2007 में चौंतीस दिनों की 12 ज्योतिर्लिंगों की यात्रा तथा 14वें अंक में सन् 2003 की केदारनाथ यात्रा और अन्त में सन् 1997 में बद्रीनाथ यात्रा का बहुत ही सुन्दर तरीके से वर्णन किया है। ''तीरथ-जातरा रो कोड'' प्रारम्भ अंक में तीर्थ-यात्रियों के लिए सावधानी रखने हेतु छः जरूरी बातों पर प्रकाश डाला गया है। तीर्थयात्रा देशनोक से आरम्भ होकर विभिन्न राज्यों से होती हुई बद्रीनाथ के दर्शन कर वापस बीकानेर पहुंचती है। यात्रा में पुरामहत्व के स्थलों, ऐतिहासिक धरोहरों एवं धार्मिक स्थलों की जानकारी, स्थान विशेष में ठहरने आदि की जानकारी पाठकों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करती है।

डॉ. स्वामी ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि और पर्यवेक्षण क्षमता से जीवन के सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए इस वृत्तान्त में प्रत्येक स्थान का निर्माण समय, भौगोलिक संरचना, प्रकृति के मनोहारी दृश्यों पर अपनी पूरी-पूरी दृष्टि डालकर अपनी लेखनी का प्रयोग कर भावपूर्ण तरीके से उनकी सहज ही अनुभूति करवाई है। तीर्थाटन के दौरान डॉ. स्वामी ने अपनी सम्प्रेषणशीलता के विशेष गुण के द्वारा सभी स्थलों के चित्रण से सभी के मन को अभिभूत किया है। डॉ. स्वामी के आस्थावान सद्गृहस्थ की विशेषता अन्य यात्रियों को साथ-साथ यात्रा करने की प्रेरणा देती है। ऐसी यात्रायें देश की सांस्कृतिक एकता को मजबूती प्रदान करती है। ज्योतिर्लिंगों के दर्शन, कन्याकुमारी, द्वारका, कांचीपुरम, मदुरै, श्रीरंगम हंपी, पंढरपुर, कन्याकुमारी, द्वारका और बद्रीनाथ आदि की जानकारी समेट एक संस्मरण लिखना उस लेखकीय जुनून को दर्शाता है कि जो आनन्द हमने लिया उसे हम दूसरों में किस प्रकार बांट सकते हैं। मुख पृष्ठ तथा शीर्षक आस्थावान पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह कृति आस्तिक और श्रद्धालु पाठकों को सन्तुष्टि प्रदान कर निश्चित ही उनमें तीर्थाटन के प्रति उत्साह और उमंग जाग्रत कर पायेगी।

-डॉ. उषा सारस्वत, व्याख्याता
रा.व.उ. संस्कृत विद्यालय, बीकानेर

दर्शन, आध्यात्मिक चिन्तन और भक्ति/ डॉ. रमेश सोवती / उद्योग नगर प्रकाशन, गाजियाबाद / संस्करण : प्रथम 2012 / पृष्ठ संख्या : 112 / मूल्य : ₹ 150

समीक्षाधीन प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के 17 निबन्धों को संकलित किया गया है। समय-समय पर लिखे इन निबन्धों में लेखक की सूझबूझ, आध्यात्मिक वृत्ति, तार्किक विद्वता तथा दृढ़ आशावादी दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। निबन्धों में दर्शायी सामग्री के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि लेखक आशावादी दृष्टिकोण का कट्टर समर्थक होने के साथ ही स्थितियों में सुधार का प्रबल पक्षधर है।

श्री मद्भगवत गीता सम्बन्धी एक रचना में लेखक स्पष्ट करते हैं कि गीता का मुख्य ज्ञान कर्तव्य पालन, आत्मा की अमरता, अनासक्त कर्म, भक्ति एवं भक्त की महिमा, माया आदि का मन्तव्य स्पष्ट किया है न केवल इतना ही वरन् इससे आगे परमात्मा की शक्ति, अद्वेत तत्व एवं धर्म परायणता पर भी सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया है। इस विवेचन से लेखक का गहन एवं विशाल अध्ययन पाठकों के सामने आता है। मलिक मुहम्मद जायसी, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं कबीर आदि के विचारों की साम्यता भी लेखक ने स्वीकार कर दृढ़ता से प्रतिपादित की है। इससे लेखक की साहित्य के अध्ययन के प्रति तुलनात्मक दृष्टिकोण रुष्ट होता है। वे अटूट विश्वास के धनी हैं जैसा पुस्तक के आरम्भ में ही दृष्टिगोचर होता है-

एक स्थान पर लेखक स्पष्ट करता है कि आत्म तथा ब्रह्म में कोई भेद नहीं है। सांसारिक वासनाओं से मुक्त होकर मुक्ति के इच्छुक श्रृद्धा के साथ गुरु के पास जाकर मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। स्वयं वेद व्यास ने इस प्रकार की घोषणा की है। मेक्समूलर, माधोदास मूंदडा, ब्लूमफिल्ड, बलदेव उपाध्याय, शापर हावर जैसे विद्वानों की रचनाएं, ग्रन्थ पढ़कर लेखक ने तुलनात्मक अध्ययन कर विचारों में स्पष्टता पाई है। लेखक के अनुसार उपनिषद का अध्ययन पाठकों में न केवल आध्यात्मिक सोच विचार में स्पष्टता आते हैं बल्कि वे विषम परिस्थितियों में कार्य निष्पादन हेतु पाठकों को अधिक बौद्धिक क्षमता, शारीरिक कुशलता प्रदान करते हैं। निर्णय लेने में कुशल बनाते हैं। तर्क संगत निर्णय लेने की विचार शक्ति प्रदान करते हैं।

'जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूर्ति देखी तिन जैसी' के अनुसार लेखक इस विश्वास की स्थापना करते हैं कि अन्तर्यामी होने से प्रभू भक्त की भावना जान लेते हैं। अपनी विशिष्ठ भाषा के माध्यम से पत्थर, पेड, नदियां, जल स्त्रोत, पर्वत, समुद्र की लहरें, हवा के झोंके, टहनियों की सरसराहट, पक्षियों की कलरव ध्वनि भी राम का, परमात्मा का, अस्तित्व स्वीकार करते हैं। राम का अर्थ किसी के लिये चार हाथ पैर वाला मनुष्य, किसी के लिए देवता, किसी के लिये शब्द, किसी के लिए भावना, किसी के लिए स्पर्श आदि स्पष्ट होता है।

दर्शन, धर्म एवं संस्कृति को लेकर लेखक का विशाल अध्याय परिभाषित होता है, पाठक पाते हैं कि पुरुष सुक्त के अनुसार जो कुछ हुआ है या होने वाला है वह ईश्वरीय इच्छानुरूप ही है, ईश्वरीय इच्छा का ही प्रण है फलतः वह निश्चय ही ईश्वराधीन भी है। लोकमान बालगंगाधर तिलक के अनुसार गीता मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ विज्ञान है, चिन्तन है, यह इतना सूक्ष्म, गूढ़तम, अद्भुत तथा चमत्कारी है कि इसकी कोई सानी नहीं है। सेंट फ्रान्सिस के अनुसार ईश्वर ही परमोच्च एवं सर्व शक्तिमान है। वे आगे बताते हैं-समस्त स्तुति, विभूति, मण्डल, कल्याण आदि के मूल स्त्रोत आप-ईश्वर ही है, आपका नाम सर्वोत्तम है, अनुपम है, किसी भी वस्तु से इसकी उपमा नहीं दी जा सकती।' मदर टेरेसा आदि का सन्दर्भ लेखन विशाल अध्ययन का साक्षी है।

पूजा करने तक मानवीय स्वभाव के अनुसार कोई न कोई भूल रह ही सकती है उसे लेखक ने आरती से पूरा करना बताया है। आरती शीर्षक अध्याय जनसाधारण तक हेण्डबिल के रूप में पहुंचाया जाना चाहिए। संस्कृत, हिन्दी, उर्दू आदि अन्य भाषाओं में लिखी प्रार्थनाओं का संकेत दिया है। स्कन्दपुराण तथा यजुर्वेद के उद्धरण पाठकों के लिये अति उपयोगी है। अहिंसा शब्द की सारभर्मित व्याख्या, विविध दृष्टिकोण से, प्रस्तुत की गई है जिससे पाठक तुलनात्मक दृष्टि से जांच परख कर सकेंगे। पुस्तक के अंत में दो अध्याय तुलसी एवं कृष्ण सम्बन्धी साहित्य को समर्पित हैं।

पुस्तक में संजोयी गई सामग्री मोटे रूप से जनसाधारण के लिए उपयोगी है जो निश्चय ही पाठकों के दैनिक जीवन में गुणवत्ता वृद्धि की दृष्टि से सहायक हो सकती है। पाठ्य सामग्री भारतीय जीवन मूल्यों को प्रोन्नत करने वाली है। भाषा में प्रवाह एवं संगुथन है, सुबोध गम्य है। इससे लेखक के विचारों में स्पष्टता झलकती है। भाषा में प्रवाह है।

–डॉ. जमनालाल बायती

बी-186, आर.के. कॉलोनी, भीलवाड़ा

हथेळी में चाँद / मोनिका गौड़ / ज्ञान पब्लिकेशन्स, बीकानेर / संस्करण : 2012 / पृष्ठ संख्या : 96 / मूल्य : ₹ 100

राजस्थानी कविता की बगिया में 'हथेळी में चाँद' नामक काव्य संग्रह में कुल 76 लघु कविताएँ संकलित हैं जिन्हें तीन मुख्य शीर्षकों के अनुसार बाँटा है– 'तिरकाल तावड़ै री आंगळी', 'रेत री धरम' और 'हथेळी में चांद'। इस पूरे काव्य संग्रह में कविताएँ ग्रामीण जीवन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति, बाल मनोविज्ञान, नारी विमर्श, मानवीय व्यवहार के विभिन्न स्वरूप एवं समसामयिक समस्याओं को उद्घाटित करती नजर आती है।

'काल' नामक कविता छः खण्डों में विभाजित है जो ग्राम्य और कृषक जीवन के धैर्य की झाँकी को प्रस्तुत करती है। 'अबकै लारला करजा चुक ज्यासी/भूर की भैंस रै पाडी होयी तौ/ हाडां में बिकणास बापर जासी।'' (पृ. 11) कभी पाला पड़ने से, कभी नागौरण (हवा) के चलने से, कभी अधिक वर्षा होने से, कभी सेठ के हरकारों द्वारा अनाज हड़पे जाने आदि से किसान पर कैसे अकाल की मार पड़ती है, से साक्षात्कार होता है। 'तपस्या' कविता घर के बुजुर्ग एवं आज की सरकारी व्यवस्था एवं विभागों की सही-सही स्थिति को वर्णित करती है। 'पांणी' की कुछ पंक्तियाँ 'जद तांई बच्चौ रैसी आंख्या रौ पांणी/ धरती थिर रैसी (पृ. 31) पाठकों के अन्तर्मन की गहराइयों पर अमिट छाप छोड़ती है। 'बाट' कविता में ममता को अनमोल बताते हुए कवयित्री रुपये पैसे की कीमत कम आँकती है। 'छोरयां' और 'लुगाई होवणौ' कविताएँ स्त्रीमन की भावनाओं को बताती हैं। 'पाणी रौ पेड़' कविता गरीबी और बालपन की सोच का सटीक उदाहरण प्रस्तुत करती है। 'हथेली में चांद' कविता अतीत वर्तमान और भविष्य का चित्रण करते हुए वर्तमान के महत्त्व को उद्घाटित करती है। कवयित्री ने स्नातक स्तर पर गृहविज्ञान और एम.ए. में हिन्दी, राजस्थानी और समाजशास्त्र का अध्ययन किया है, इसलिए उनकी कविताओं में घर, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अन्य क्षेत्रों की गहन अनुभूति की अभिव्यक्ति हुई है। कुछ कविताएँ देखने में छोटी जरूर है लेकिन उनमें जीवन का विस्तार प्रकट होता है।

–राकेश सारस्वत

डी-77, शक्ती नगर, बीकानेर

जीवन का आधार हैं पुस्तकें

❒ प्रहलाद शर्मा

श्रेष्ठ विचारों के मुख्यतः दो स्रोत होते हैं– पुस्तकें एवं सत्संग। वैसे सत्संग का लाभ उठाने के लिए भी पुस्तक ज्ञान का होना आवश्यक होता है। पुस्तकों के अध्ययन और पढ़ी हुई बातों पर मनन-चिन्तन करने के उपरान्त श्रेष्ठ विचारों का उदय होता है। कहा भी जाता है कि जो पढ़ता है और चिन्तन नहीं करता है, उसका कोई भविष्य नहीं होता है, जो केवल चिन्तन करता है, किन्तु पढ़ता नहीं है, वह स्थायी रूप से संकटग्रस्त बना रहता है। सच्चा मित्र वह है जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें, जो प्रत्येक स्थिति में हमारी सहायता के लिए उपलब्ध हो, अधिकांश मित्र स्वार्थी और अवसरवादी होते हैं, वे चाहे जब हमें अपनी सहायता एवं परामर्श से बंधित कर सकते हैं, परन्तु पुस्तकों के सम्बन्ध में ऐसी बात नहीं कही जा सकती है, क्योंकि उनमें निहित ज्ञान सर्वथा उपलब्ध रहता है और वह सार्वदेशिक एवं सर्वकालीन होता है, पुस्तकें उन मित्रों के समान होती हैं, जिन पर सदैव भरोसा किया जा सकता है और जो सहायता के लिए सदैव उपलब्ध रहती है। महाभारत, श्रीमद्भगवत् गीता, रामचरितमानस, इंजील, गुरुग्रन्थ साहब आदि ऐसे ग्रन्थ हैं जो प्रत्येक संकट के समय हमारा मनोबल पुष्ट करती हैं और हमारा मार्गदर्शन करती हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वे प्रत्येक क्षण उपलब्ध रहती हैं। अफ्रीका के अश्वेत नेता डॉ. नेलसन मण्डेला ने अपने 27 वर्ष के कारावास का जीवन पुस्तकों के सहारे ही व्यतीत किया था, इतना ही नहीं अनेक आजादी के दीवाने पुस्तकों द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हुए फाँसी के तख्ते पर भी खुशी-खुशी चढ़ गये थे। पुस्तकें कई प्रकार से हमारे साथ मित्रवत् व्यवहार करती हैं। कुछ पुस्तकें हमको जीवित रहना सिखाती हैं। कुछ पुस्तकें हमको कष्ट सहन करना सिखाती हैं। विश्व में जितना भी ज्ञान है, सब पुस्तकों में निहित है। समग्र ज्ञान उन्हीं के द्वारा प्रकाशित है। पुस्तकें हमारी वे मित्र हैं, जो बदले में हमसे कुछ नहीं चाहती हैं, हमसे केवल यह आशा करती हैं, कि हम उन्हें संभालकर रखें, जिससे आवश्यकता होने पर वे हमारी सहायता कर सकें। पूज्य बापू महात्मा गाँधी ने भी कहा है कि, 'पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं, जबकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्ज्वल करती हैं।'

अच्छी पुस्तकों के पास होने से हमें अपने मित्रों के साथ न रहने की कमी नहीं खटकती है। आप भी पुस्तकों को अपना मित्र बनाइये और समस्त समस्याओं के समाधान प्राप्त कीजिए।

-5/279, एस.एफ.एस., मानसरोवर, जयपुर-20
मो. 9414796071

हमारे भामाशाह

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। प्रति वर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। **-वरिष्ठ संपादक**

जालोर

रा.उ.मा.वि., कुड़ाआर के श्री अशोक कुमार प्रजापत से बोर्ड परीक्षा केन्द्र पर फर्नीचर बनवाने हेतु 51,000 रुपये, तथा एक ACER कम्पनी द्वारा निर्मित कम्प्यूटर सेट मय प्रिंटर लागत 32,000 रुपये प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., बिठूड़ा** में श्री भंवरलाल द्वारा 1,25,000 रुपये की लागत से विद्यालय प्रवेश द्वारा का निर्माण करवाया गया तथा 1,20,000 रुपये की लागत से 400 छात्र-छात्राओं को ऊनी स्वेटर वितरण, श्री कपूरा राम से सबमर्सिबल पम्प सेट लागत 40,000 रुपये, श्री गोमाजी से एक कम्प्यूटर सैट लागत 22,000 रुपये, श्री घीसाराम से परेड, पीटी में भाग लेने वाले 200 छात्र/छात्राओं को इनाम 10,000 रुपये, श्री पपीया राम से 5,000 रुपये की मिष्ठान वितरण किया गया। **रा.मा.वि., दादाल** में श्री उदय सिंह परमार द्वारा 3,15,000 रु. की लागत से मुख्य द्वार व एक रसोई घर का निर्माण कराया गया। **रा.उ.प्रा.वि., सराणा** में श्री नाथाराम चौधरी का जनसहयोग से 25,000 रुपये की लागत से क्रीड़ा स्थल गेट का निर्माण करवाया गया। **रा.प्रा.वि., धानोल** को श्री गणपत लाल कोली से पोषाहार हेतु बर्तन लागत 4,000 रुपये।

जैसलमेर

रा.उ.मा.वि., भणियाणा को श्री जेठाराम जोपींग से एक वाटर कूलर लागत 40,000 रुपये तथा एक आर.ओ. (वाटर फिलटर) लागत 31,000 रुपये प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., लवाँ** को श्री नैनूराम सूथार से कम्प्यूटर सेट लागत 22,000 रुपये, रिलाइंस पावर प्रोजेक्ट धूडसर से दो कम्प्यूटर सेट लागत 44,000 रुपये, चार छत के पंखे लागत 6,000 रुपये, छात्र टेबल व स्टूल 60 सेट लागत 75,000 रुपये, एल एण्ड टी पावर प्रोजेक्ट धडसर छात्र टेबल व स्टूल 60 सेट लागत 75,000 रुपये, श्री कृष्ण कांत पालीवाल से एक प्रिंटर (श्री इन वन) लागत-10,000 रुपये, श्री काछूराम गर्ग से वाटर कूलर एक लागत 30,000 रुपये, श्री आईदान कन्हैयालाल पालीवार से 5 व्हाइट एण्ड ग्रीन बोर्ड लागत 6,000 रुपये, जनसहयोग से दो अलमारी लागत 7,000 रुपये, ऑफिस टेबल एक लागत 2000 रुपये, चेनल गेट एक लागत 13,500 रुपये, कम्प्यूटर टेबल चार लागत 7850 रुपये, कम्प्यूटर कुर्सी तीन लागत 2,550 रुपये, एस टाइप कुर्सी 10 लागत 4,800 रुपये, अध्यापक टेबल चार लागत 2,400 रुपये, घूमने वाली कुर्सी एक लागत 1,850 रुपये, हीटर, स्टोव, सासपेन, कैंची आदि सामग्री लागत 5,000 रुपये, खिड़कियों को राड लगाने का कार्य लागत 6,200 रुपये व्हाइट एण्ड ग्रीन बोर्ड एक लागत 1,200 रुपये।

जोधपुर

रा.सी.मा.वि., दुन्दाड़ा श्री भैराराम जी पटेल द्वारा मंच निर्माण हेतु 70,000 रुपये नकद दिये, श्री हुमान दास से 9 श्याम पट निर्माण हेतु 9,000 रुपये, स्वं. श्री रूप मेव सोनी, कालूराम, भगाराम कच्छावाह, शंकर राम प्रत्येक से 10,000 रुपये की लागत से कमरों में विधुतीकरण करवाया गया। श्री खुशहाल चन्द्र पण्डित व.लि. से एक पानी की मोटर लागत 6,250 रुपये। **रा.उ.मा.वि., भोपालगढ़** में सांसद (पाली) श्रीमान बद्रीराम जाखड़ द्वारा 51 लाख रुपये की लागत से रातियों की ढाणी स्थित भूखण्ड पर 10 बड़े कमरे, एक बड़ा हॉल मय बरण्डा का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि., रियां सेठों की जोधपुर** को श्रीमती सूरज दुधेड़िया (प्र.अ.) से 5 पंखे व 7 ऑफिस चेयर लागत 11,000 रुपये, श्री गोरधन राम भडियार से 50,000 रुपये नकद, श्री जय किशन शर्मा से 20,000 रुपये, श्री गोरधन राम जी लीलड़ (राज. पुलिस) से 20,000 रुपये नकद, श्री संग्राम जी सेवर से नकद 11,000 रुपये, सर्व श्री दयाराम सेल, बीरमाराम जी सिरोही, मांगीलाल खोजा (सरपंच पति), जगदीश जी सिरोही, सोहन लाल जी सिरोही (एडवोकेट), घनश्याम जी वैष्णव से प्रत्येक से 10,000 रुपये नकद, सर्व श्री मांगीलाल जाखड़, बख्तावर सिंह जाखड़ (एडवोकेट) प्यार महोम्मद व्यापारी, जाकिर हुसैन (लाइनमैन), मंगलारामजी खुड़खुड़िया, खियारामजी देवासी, गोकलरामजी, पूसारामजी चौकीदार (वार्ड पंच), मंगलारामजी/हरिरामजी बडियार, विक्रमसिंहजी पूनिया, पाबूरामजी सिरोही, मूरारामजी खोजा, जयसिंहजी राठौड़, मेरू खाँ सिन्धी, मिट्ठु जी जैन (जैन क्रेशर रिया), जवानरामजी सिरोही, चन्द्रारामजी खोजा, नासीर तेली, सोकत भाई तेली से प्रत्येक से 5,000 रुपये नकद तथा श्री सहाबुद्धीन सिन्धी से 2,000 रुपये नकद प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., बूंगड़ी** को कक्षा X के विद्यार्थियों से एक अलमारी (लोहे की) लागत 3,830 रुपये।

झुन्झुनूं

रा.उ.मा.वि., नूआँ में इन्तजार खां द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से नलकूप का निर्माण कराया गया। श्री नरेश कृष्णियां द्वारा 60,000 रुपये की लागत से टी गार्ड बनाकर विद्यालय को दान दिए। **रा.उ.मा.वि., ककराना** को श्री बनवारी लाल तेतर वाल (व.अ.) से एक स्टील अलमारी (6×3) भेंट। श्री चन्दगी राम तेतरवाल (पूर्व कमाण्डर नेवी) विद्यालय विकास एवं निर्माण हेतु 1,00,000 का चैक सप्रेम भेंट। **श्रीकृष्ण परिषद रा.बा.उ. मा.वि., सूरजगढ़** को श्री मातदीन सैनी (से.नि.प्रा.) से 3 गोदरेज की अलमारी लागत

15,000 रुपये तथा छः प्लाष्टिक कुर्सी लागत 2,400 रुपये। **रा.मा.वि., भावठड़ी** को कक्षा X के विद्यार्थियों के अभिभावको से गोदरेज अलमारी विद्यालय को सप्रेम भेंट लागत 6,100 रुपये, श्री रामसिंह (व.अ.) से पुस्तके भेंट की लागत 700 रुपये, श्री मानसिंह कस्वां (प्र.अ.) एवं श्री नानड़ राम (व.अ.) द्वारा प्रतिभाशाली होनहार खिलाड़ियों को 2500-2500 रुपये की लागत से स्मृति चिह्न भेंट। **रा.मा.वि., बीबासर** में बाबा गुलाव गिरी आद्रिम द्वारा 4,00,000 रुपये की लागत से एक कमरे व मेन गेट का निर्माण करवाया गया। श्री केदार सिंह सोहू (व.अ.) व श्रीमती भगवानी देवी सोहू द्वारा 70,000 रुपये की लागत से जल मन्दिर का निर्माण करवाया गया। श्री जगमोहन सिंह डांगी द्वारा विद्यालय विकास व छात्रों की फीस हेतु नकद राशि 21,000 रुपये विद्यालय को सप्रेम भेंट। श्री जगपाल सिंह डांगी द्वारा 38 खिड़कियों के जाली लगवायी गयी लागत 20,000 रुपये। श्री भागीरथ डांगी द्वारा एक कमरे की छत पर टूकडी लगवाई लागत 15,000 रुपये। श्री बाबा गुलाब गिरी आश्रम बीबासर के सहयोग से 70 स्वेटर विद्यार्थियों को वितरित लागत 10,000 रुपये। श्री सीताराम डांगी द्वारा वाटर कूलर भेंट लागत 25,000 रुपये, श्री जगमोहन डांगी से एक लेक्चर स्टेण्ड सप्रेम भेंट लागत 3,000 रुपये। श्री रतन सिंह डांगी से 10 ट्री गार्ड सप्रेम भेंट लागत 6,000 रुपये। श्री मनीराम डांगी से गेहूँ डालने हेतु दो टंकिया लागत 3,000 रुपये, श्री पूर्णाराम डांगी से 10 लीटर का प्रेशर कूकर प्राप्त लागत 1,800 रुपये, श्री सुमेर सिंह धाबाई द्वारा 10 शाला गणवेश भेंट लागत 1,500 रुपये। श्री अनोपचन्द डांगी से तीन लकड़ी के श्याम पट्ट भेंट लागत 2,100 रुपये। श्री रामचन्द्र डांगी से एक गोदरेज अलमारी सप्रेम भेंट लागत 3,500 रुपये। श्री अमीलाल डांगी, दारासिंह डांगी, झूथाराम डांगी द्वारा तीन कमरो में विद्युत फिटिंग लागत 3,000 रुपये। **रा.मा.वि., गुंती** में श्रीकंवर सिंह यादव द्वारा 2,00,000 रुपये की लागत से जलघर का निर्माण करवाया गया मय वाटर कूलर सप्रेम भेंट। श्री रामप्रताप यादव द्वारा एक कमरा (20×16) का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 1,35,000 रुपये, श्री कर्मवीर सिंह यादव द्वारा 80,000 रुपये की लागत से जीने का निर्माण करवाया गया। **रा.मा.वि., नांगल उदयपुरी वाटी** को श्रीमती महेन्द्रा कुमारी से 30 स्वेटर सप्रेम भेंट। श्रीमती सोनिया (विद्यार्थी कक्षा 11) से 12 प्लास्टिक कुर्सी, श्री भैरू सिंह शेखावत से दो छत के पंखे, श्री मांगु सिंह शेखावत से दो छत के पंखे, श्री गुलाब नाथ योगी से एक छत का पंखा प्राप्त हुआ। **रा.मा.वि., रिजाणी-अलसीसर** में सुबेदार शिवचन्द कुलहरि द्वारा 6,50,000 रुपये की लागत से (20×25) के तीन कमरे मय बरामदे का निर्माण करवाया गया। श्री विजय सिंह कुलहरि द्वारा 60,000 रुपये की लागत से 13 कमरों में बिजली फिटिंग करवायी गई। श्री हरीलाल कुलहरि द्वारा 80,000 रुपये की लागत से विद्यालय के मुख्य गेट का निर्माण व वाटर कूलर भेंट। श्री किशोर सिंह नरूका द्वारा 25,000 रुपये की लागत से पेयजल हेतु टंकी का निर्माण करवाया गया। **रा.मा.वि., शिशियां** में श्री कान सिंह शेखावत द्वारा 1,24,000 रुपये की लागत से ट्यूबवैल का निर्माण करवाया गया। श्री रघुवीर सिंह झाझड़िया से एक इन्वर्टर लागत 17,500 रुपये तथा कम्प्यूटर मय प्रिंटर व छः कुर्सिया लागत 20,500 रुपये, श्री बनवारी लाल माहिच से एक स्टाफ अलमारी लागत 8,500 रुपये, श्री जगदेवा राम, बनवारी लाल, सहिराम से ग्रीन बोर्ड लागत 4,500 रुपये, राजेन्द्र सिंह, रोहिताश्व से एक प्र.अ. मेज, श्री प्रभु सिंह शेखावत से प्र.अ. कुर्सी, श्री प्यारेलाल से डम्बल, बॉली बाल लागत 1,100 रुपये। **रा.मा.वि., पोसाना** श्रीमती सुगनी देवी मेचु द्वारा 3,60,000 रुपये की लागत से 27×23 वर्ग फीट का एक कमरा मय बरामदा का निर्माण करवाया गया। ग्राम विकास समिति (जन सहयोग) पोसाना से दो अलमारी लोहे की लागत 17,700 रुपये, श्री दिव्यांश स्वामी द्वारा लेक्चर स्टैण्ड लागत 5,100 रुपये, विद्यालय को गुप्त दान द्वारा दो छत पर पंखे लागत 2,700 रुपये। **रा.बा.मा.वि., गौरीर** को ग्राम विकास समिति गौरीर से 140 सैट टेबल स्टूल लागत 50,000 रुपये, श्री नरेन्द्र शर्मा, लक्ष्मीकान्त शर्मा द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से एक कमरा मय बरामदा, श्री घासीराम वर्मा द्वारा 2,00,000 रुपये की लागत से पानी की बोरिंग व खेल मैदान में ट्रेक, श्रीराम मान (कैप्टेन) द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से एक कमरा मय बरामदा, श्री गिरधारी सिंह से 51,000 रुपये नकद, व जिला स्तरीय कबड्डी टूर्नामेंट में पोशाक लागत 12,000 रुपये, श्री अमर सिंह मान द्वारा 25,000 रुपये की लागत से विद्यालय प्रागण में स्टेज तथा 10,000 रुपये के पुरस्कार वितरण। श्री गोरधान मान द्वारा 45,000 रुपये की लागत से कमरे में मार्बल, पत्थर फर्श, सफेदी, पाँच पंखे। नवयुवक मण्डल गौरीर से एक अलमारी, एक लैक्चर स्टेण्ड, रजि. स्टेण्ड, छः कुर्सियाँ तथा सम्पूर्ण विद्यालय भवन में सफेदी लागत 50,000 रुपये, श्री सुभाष चौटाला एवं वीर सिंह पहलवान द्वारा 70,000 रुपये की लागत से खेल मैदान में बरगद, पीपल, नीम के 50 पेड़ के चारों तरफ इंटो की चुनाई आदि का निर्माण, श्री मैजीराम ठेकेदार द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से जीना, व सीढ़ियों का निर्माण करवाया गया। श्री हरिओम शर्मा द्वारा 110 छात्राओं को स्वेटर व जूते वितरण लागत 15,000 रुपये, श्री गणेशी लाल, रमेश चन्द, राजेश कुमावत द्वारा 60,000 रुपये की लागत से जल कुटीर का निर्माण करवाया गया व एक वाटर कूलर सप्रेम भैंट। श्री सुन्दर यादव से बोरिंग हेतु 31,000 रुपये नकद, श्री बीरबल मीणा से बोरिंग हेतु 21,000 रुपये नकद, श्री मनोज धूमरिया द्वारा 15,000 रुपये का जिला स्तरीय कबड्डी टूर्नामेंट शील्ड पुरस्कार वितरण। श्री लालचन्द मीणा द्वारा प्रतिभाशाली छात्राओं को सम्मानित राशि 10,000 रुपये नकद। श्री राधेश्याम बोहरा से एक माइक सैट लागत 5,000 रुपये, श्री सुरेश मीणा से खिलाड़ियों की भोजन व्यवस्था हेतु 5,000 रुपये। श्री भगवती मीणा द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से एक कमरा मय बरामदा का निर्माण करवाया गया। श्री नरेश मान साक्षरता अ. द्वारा कक्षा 10 से 12 में टोपर 2 छात्रों को 2100 व 1100 रुपये सात्वना पुरस्कार (8 छात्रों) 500 रुपये प्रति छात्र, आर.एस. मेमोरियल समिति द्वारा 2,65,000 रुपये की लागत से जिला नवाचार योजना में खेल मैदान में स्टेडियम का निर्माण करवाया गया। जन सहयोग से 26,500 रुपये नकद खेल मैदान में स्टेडियम निर्माण हेतु प्राप्त हुए।

प्रतिध्वनि

मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती

इस माह में भारत का 67वां स्वतंत्रता दिवस हम मना रहे है। 15 अगस्त 1947 के दिन देश आजाद हुआ था। इससे पूर्व एक लम्बी लड़ाई हमारे पूर्वजों ने लड़ी थी। इसका वृहत इतिहास है। स्वतंत्रता संग्राम के उस इतिहास की प्रमुख विशेषता यह है कि सुख-सुविधाओं और यहाँ तक की मान-सम्मान और जान-माल की किंचित भी परवाह नहीं करते हुए देशभक्तों ने विदेशी शासकों को वतन छोड़ने के लिए मजबूर किया था। आजादी कीमत मांगती है और हमारे महान देशभक्तों ने वह कीमत चुकाई थी। कीमत चुकाकर प्राप्त की गई वस्तु कीमती होती है। आजादी से अधिक मूल्यवान कोई वस्तु हो नहीं सकती।

मूल्यवान वस्तु से हमारा मूल्य बढ़ता है और उसके बल पर हमें वह सब कुछ कर सकने की योग्यता एवं अवसर मिलता है जिन्हें हम करना चाहते हैं अथवा कर सकने के योग्य होते हैं। मूल्यवान वस्तु की रक्षा करना तथा उसके मूल्य में निरन्तर वृद्धि करना उसके धारकों का कर्तव्य होता है। मूल्यवान आजादी हमारी अद्भुत और अनमोल धरोहर है जिसे स्वतंत्रता संग्राम के पुरोधाओं ने अपने प्राणों का बलिदान देकर प्राप्त किया था और जिसे वे हमें सौंप कर गए हैं। अतः उन्हीं शर्तों पर आजादी की रक्षा करना प्रत्येक भारतवासी का पावन कर्तव्य है। बल्कि कहना चाहिए कि कर्तव्य ही नहीं उत्तरदायित्व है।

आजादी और शिक्षा के अन्तर्सम्बन्ध पर चर्चा करें तो हम पाएंगे कि शिक्षित व्यक्ति में घटनाओं एवं परिस्थितियों को समझने, विश्लेषण करने तथा आगे के लिए सोचकर योजना बनाने की अधिक योग्यता होती है। ऐसे में जो शिक्षित है और जो जितना ज्यादा शिक्षित है, स्वतंत्रता की सुरक्षा करने तथा उसमें और अधिक सौरभ डालने का उसका उतना ही अधिक कर्तव्य है, उतरदायित्व है। हमारी शिक्षा और प्राप्त शिक्षा के बल पर अर्जित पद, प्रतिष्ठा व हैसियत केवल हमारी अपनी नहीं है, वह सब कुछ अर्जित कर सकने में परिवार, समाज, देश, प्रदेश सबका रोल है। सबकी कृपा से हमें वह मिला है। यदि कोई एक भी पहलू कमजोर अथवा असहयोग प्रवृति का हो तो हम सहज ही में वह सब कुछ प्राप्त नहीं कर सकते जो हमें प्राप्त है। अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता।

राष्ट्र को हम क्या समझते हैं, इस पर विचार करना आवश्यक है। पृथ्वी पर राष्ट्र कोई भौगोलिक भू-भाग मात्र नहीं है। वह एक अहसास है जो हमें अपनापन, आत्मीयता, सुरक्षा, सहारा, पहचान और प्यार प्रदान करता है। भारत को हम भारत माता कहते हैं। स्कूलों में प्रार्थना सभा कार्यक्रम में 'भारत माता की जय' हम बोलते हैं। हमारे यहाँ स्वर्ग जैसे सुख की एक मान्यता रही है। स्वर्ग हमने देखा नहीं है। जिन्दे जी स्वर्ग देखा जा भी नहीं सकता। उस कल्पना के स्वर्ग की बात छोड़ें। हमारे यहाँ तो मातृभूमि एवं राष्ट्रभूमि को स्वर्ग कहा जाता है। उसे स्वर्ग से भी उत्तम एवं महत्तर माना जाता है।

भगवान राम ने जब लंका को जीत लिया और लक्ष्मण तथा अपनी वानर सेना सहित स्वर्ण की लंका में प्रवेश किया तो वहाँ का वैभव देखकर चकरा गए। सोने की लंका में सुख सुविधा-ऐशो आराम की क्या कमी होगी। लक्ष्मण ने उसमें रुचि दर्शाई तब भगवान राम ने क्या कहा? राम ने कहा, 'जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होते है।' (जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी)। हमारा वतन, हमारा भारत हमारा जीवन प्राण है। इसके उत्थान और मंगल के लिए हमें अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार रहना चाहिए। इस धरती को स्वर्ग जैसा सुन्दर बनाना है, पूरे विश्व में इसे नम्बर बन बनाना है। 'मेरे देश की धरती सोना उगले-उगले हीरे मोती' को सच कर दिखाना है।

हम कोई सामान्य लोग नहीं है। हम उस देश में रहते हैं जहाँ पतित पावनी गंगा बहती है, जहाँ ऋषियों ने वर्षों साधना कर प्राप्त सिद्धि का वरदान हमें दिया है तथा जहाँ निजहित से बड़ा परहित को मानकर सेवा व सहायता की जाती है। ये लाइने देखिए और मेरे कहने से दो मिनट के लिए जरा गुनगुनाकर तो देखिए। आपको लगेगा कि हम कौन हैं... हम क्या हैं...

मेहमां जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है
ज्यादा की हमें आदत ही नहीं थोड़े से गुजारा होता है
हम उस देश के वासी है जिस देश में गंगा बहती है..

मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है। पीपल के पौधे ने पीपल के बड़े पेड़ को देखकर यह जानना चाहा कि उसकी तरह वह भी विशाल कब बनेगा। बड़े पीपल ने छोटे से कहा कि विशालता सबको सहारा, आसरा, शरण देने तथा सद्कर्मों से आती है, आकार से नहीं। तुम तो हर आने वाले प्राणी को प्यार से शरण दो। तुम्हारा कद ही नहीं मान-सम्मान, यश-कीर्ति सब कुछ बढ़ेगा। महान देश भारत की संस्कृति में सबको अपनाने और प्यार देने का भाव रहा है पीपल के पेड़ की तरह। 'मेहमां जो हमारा होता है, वह जान से प्यारा होता है' यह उत्तम भाव हमारी पहचान है और इसीलिए हम महान है।

सा विद्या या विमुक्तये तथा विद्याददाति विनयम् भारतीय शिक्षा प्रणाली के आधार स्तम्भ हैं। शिक्षा जडता को तोडने का काम करें तथा विनम्रता, संवेदनशीलता, सहिष्णुता, समन्वय, सहयोग, सदाचार जैसे उत्तम गुणों का विकास करें। भारतीय शिक्षा प्रणाली की जड़ों में संस्कार भरे पड़े हैं। शिक्षा रूपी वृक्ष की संस्कार रूपी जडे उसे स्थिर बनाए रखने में सक्षम हैं और यही कारण है कि हमारी संस्कृति विश्व पटल पर एक विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर राष्ट्रीय गौरव, अस्मिता व महान विरासत को पुनः पुनः स्मरण कर राष्ट्रभक्ति के उत्तम भाव हृदय में संजोने एवं स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए संकल्प लेना चाहिए। यह कार्य शिक्षकों से बेहतर भला और कौन कर सकता है। मगर इसके लिए शिक्षक भाई-बहनों को अपनी अन्तर्निहित क्षमता, अस्मिता एवं योग्यता की पहचान कर उनका मानव कल्याण के मंगल भाव के साथ उपयोग करने के लिए आगे आना होगा।

-ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat58@gmail.com

शिविरा पत्रिका मासिक/अगस्त 2013 अंक/प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक डॉ. वीना प्रधान, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा द्वारा डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेन्ट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : डॉ. वीना प्रधान

चित्र समाचार : अगस्त 2013

भेंट : भारत सरकार की महत्वाकांक्षी विज्ञान समुन्नयन योजना 'इंस्पायर अवार्ड' के विजेता छात्र–छात्राएं महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से राष्ट्रपति भवन में मिले। इस अवसर पर (बाएं) छात्र–छात्राओं से मुखातिब होते महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी तथा (दाएं) राजस्थान के विजेता छात्र–छात्राएं इंस्पायर अवार्ड योजना के अधिकारी महानुभावों के साथ।

सम्मेलन : 11वाँ एशिया पेसेफिक बेग्गस सम्मेलन 29 जून – 8 जुलाई 2013 तक जापान के टोक्यो शहर में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में भाग लेने गए भारत के छः सदस्यीय दल का नेतृत्व डॉ. वीना प्रधान, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा एवं स्टेट कमीश्नर, गाइड ने किया। चित्र में बाएं भारतीय दल के सदस्य (डॉ. वीना प्रधान बाएं से तीसरे स्थान पर) तथा दाएं जापान के गाइड आन्दोलन से जुड़ी प्रफुल्लित बालिकाएं।

बाड़मेर : राजीव गाँधी डिजिटल योजना के अन्तर्गत राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, रावतसर पं.स. सिणधरी स्थित रा.उ.प्रा.वि. के छात्र–छात्राओं के टेबलेट पीसी हेतु चैक वितरित करते अतिथि।

जयपुर : रा.उ.मा. विद्यालय रथखाना, गणगौरी बाजार में 22 जुलाई 13 को वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर का लोकार्पण निदेशक डॉ. वीना प्रधान ने किया। पास में हैं प्राचार्य श्री राजेन्द्रमोहन शर्मा एवं उपनिदेशक श्री कमलेश शर्मा।

डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-29/2011-13 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● अगस्त, 2013 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 अगस्त, 2013 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : हर माह की 5, 6 तारीख

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

बुड्ढा जोहड़ गुरुद्वारा, श्री गंगानगर

यह है श्री गंगानगर का बुड्ढा जोहड़ गुरुद्वारा जो पदमपुर-जैतसर मार्ग पर स्थित है। विशाल परिसर में फैला यह भव्य गुरुद्वारा राजस्थान के सबसे बड़े गुरुद्वारे के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। यहाँ का वातावरण इतना मनभावन है कि एक बार गया व्यक्ति इसे भूला नहीं सकता और बार-बार जाने का मन करता है। इस गुरुद्वारे से सिक्ख इतिहास का सम्बन्ध 17वीं शताब्दी के प्रारम्भ से जुड़ा हुआ है। भाई सुक्खासिंह एवं मेहताब सिंह के नाम यहाँ बड़े आदर के साथ किए जाते हैं। इतिहास बताता है कि मुगलों के अत्याचारों से मजबूर होकर पंजाब के सिक्ख भाई-बहन राजस्थान में बीकानेर क्षेत्र के वीरान जंगलों में आए तथा अपनी मेहनत व लगन से न केवल अपने लिए स्थान बनाया अपितु अन्य जातियों के लोगों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित किए जो सिक्खों की अपनी अनूठी विशेषता है। बुड्ढा जोहड़ गुरुद्वारा अद्भुत है। ऐसा लगता है जैसे साक्षात वाहे गुरु यहाँ विराजते हों। गुरुद्वारे का मुख्य हॉल 22 खम्भों पर टिका है तथा लगभग 140 कमरे हैं। यह गुरुद्वारा वीर सिक्ख सूरमाओं की गाथा की जिन्दा मिसाल है।

सौजन्य : गुरजीत सिंह बराड़, प्रधानाचार्य, राजकीय उ.मा. विद्यालय, तामकोट, पं.स. पदमपुर, श्रीगंगानगर